

**Outlook**  
group

# आजतक बिहार की शरिक्यतें **फोटो अंगठी**



FARSH SE ARSH TAK

**Outlook**  
group

IN ASSOCIATION WITH

**D A P**  
Production House  
तस्वीर बनाते भारत की  
DINESH ANAND PRODUCTION

₹1050/-

# आ॒त्मक



चीफ एक्जीक्यूटिव ऑफिसर  
इंद्रनील रॉय

संपादक- आउटलुक अंग्रेजी  
रूबेन बनर्जी

संपादक- आउटलुक हिंदी  
हरवीर सिंह

प्रकाशक  
संदीप कुमार घोष

प्रोजेक्ट कोअर्डिनेशन  
प्रदीप रावत

एडिटोरियल कोअर्डिनेशन  
शशिधरन कोलरी

मार्केटिंग  
श्रुतिका दीवान

लेखन  
दिनेश आनंद

प्रोजेक्ट सहयोग  
दिनेश आनंद प्रोडक्शन

फोटोग्राफ  
दीपक कुमार, सुरेश कुमार पांडे

डिजाइनर  
प्रवीन कुमार

विजुअलाइजर  
रंजीत सिंह

प्रोडक्शन  
शशांक दीक्षित

प्रकाशन कार्यालय  
आउटलुक पब्लिशिंग (इंडिया) प्रा. लि.

ए.बी.-10 सफदरजंग एन्कलेव, नई दिल्ली-110029

प्रिंटिंग प्रेस  
गैलेक्सी ऑफसेट (इंडिया) प्रा. लि.

184 सैक्टर-8 आइएमटी मानेसर, गुरुग्राम, हरियाणा, 2019 में प्रकाशित

## आउटलुक



**Disclaimer**  
All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form, or by any means electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise without the prior permission of the publisher.

Edited and Designed by Outlook Publishing (India) Pvt Ltd



बिहार का लंबा और समुद्भ इतिहास रहा है। दुनिया का पहला गणतंत्र बज्जी, यहीं था। वैशाली इसकी राजधानी थी। यह गणतंत्र ईसा पूर्व छठी सदी में ही बन गया था। बिहार के मगध का मौर्य साम्राज्य भारत का पहला साम्राज्य था। दरअसल, मगध करीब एक हजार वर्षों तक भारत की सत्ता, शिक्षा और संस्कृति का केंद्र रहा। बिहार बुद्ध और महावीर जैसे धर्म गुरुओं की भी भूमि है।

लेकिन वाकी भारत की तरह बिहार भी अंधकार के युग में चला गया। दुख की बात है कि यहां अंधेरा भारत के दूसरे कई हिस्सों की तुलना में ज्यादा समय तक रहा। 11 करोड़ आबादी वाला बिहार तीसरा बड़ा राज्य है। झारखण्ड के अलग होने से यहां आबादी का घनत्व भी बढ़ा है। यह 1,106 है जो पूरे देश में सबसे ज्यादा है। इस भीड़ में स्वास्थ्य और शिक्षा की बुरी तरह अनदेखी हुई।

लेकिन अब यहां उम्मीद की किरण दिखने लगी है। यह कॉफी टेबल बुक बिहार के उन प्रतिष्ठित लोगों को सामने लाने का प्रयास है जो इसकी महिमा को पुनर्स्थापित करने और राज्य को भारत के मुकुट में एक बेशकीयता हीरे के रूप में स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

रिसर्च बताती है कि आम लोगों को स्वास्थ्य सेवा मुहैया कराने में बिहार निजी अस्पतालों पर निर्भर है। राज्य में स्वास्थ्य पर निजी और सरकारी खर्च का अनुपात भारत में दूसरे नंबर पर है। दिल्ली के सुपर-यैशिली अस्पतालों से बिहार के गरीबों को आयुष्मान भारत स्कीम के तहत इलाज करने के लिए कहा जाता है क्योंकि राज्य में ऐसे अस्पताल पर्याप्त संख्या में नहीं हैं।

ऐसे परिदृश्य में उन डॉक्टरों के बारे में जाना जरूरी है जो राज्य में बदलाव ला रहे हैं। इस कॉफी टेबल बुक में आधुनिक युग के ऐसे कई चरक और सुश्रुत की चर्चा है। इसमें न सिर्फ एलोपैथी के डॉक्टरों के काम को सराहा गया है, बल्कि हाय्योपैथी जैसी वैकल्पिक विधा का भी जिक्र है। किताब में फिजिशियन और सर्जन, दोनों की पहचान की गई है।

नालंदा और विक्रमशिला के स्वर्णिम युग को वापस लाने के लिए बिहार को शिक्षा क्षेत्र से उम्मीदें हैं।

कॉफी टेबल बुक में उन शिक्षाविदों के बारे में बताया गया है जो बिहार का चेहरा बदल रहे हैं। कोई भी राज्य संगीत, साहित्य और समाज सेवा के बिना आगे नहीं बढ़ सकता। बुक में इन क्षेत्रों के प्रतिष्ठित लोगों को भी उचित स्थान दिया गया है।

कुल मिलाकर यह कॉफी टेबल बुक बिहार के उन लोगों को सराहने की एक कोशिश है जिनका योगदान अतुलनीय है। ऐसे लोग हम सबके लिए गोल मॉडल हैं, खासकर बिहार के उन युवाओं के लिए जिनके कंधों पर राज्य के भविष्य की जिम्मेदारी है।



## प्रस्तावना

बिहार का लंबा और समुद्भ इतिहास रहा है। दुनिया का पहला गणतंत्र बज्जी, यहीं था। वैशाली इसकी राजधानी थी। यह गणतंत्र ईसा पूर्व छठी सदी में ही बन गया था। बिहार के मगध का मौर्य साम्राज्य भारत का पहला साम्राज्य था। दरअसल, मगध करीब एक हजार वर्षों तक भारत की सत्ता, शिक्षा और संस्कृति का केंद्र रहा। बिहार बुद्ध और महावीर जैसे धर्म गुरुओं की भी भूमि है।

लेकिन वाकी भारत की तरह बिहार भी अंधकार के युग में चला गया। दुख की बात है कि यहां अंधेरा भारत के दूसरे कई हिस्सों की तुलना में ज्यादा समय तक रहा। 11 करोड़ आबादी वाला बिहार तीसरा बड़ा राज्य है। झारखण्ड के अलग होने से यहां आबादी का घनत्व भी बढ़ा है। यह 1,106 है जो पूरे देश में सबसे ज्यादा है। इस भीड़ में स्वास्थ्य और शिक्षा की बुरी तरह अनदेखी हुई।

लेकिन अब यहां उम्मीद की किरण दिखने लगी है। यह कॉफी टेबल बुक बिहार के उन प्रतिष्ठित लोगों को सामने लाने का प्रयास है जो इसकी महिमा को पुनर्स्थापित करने और राज्य को भारत के मुकुट में एक बेशकीयता हीरे के रूप में स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

रिसर्च बताती है कि आम लोगों को स्वास्थ्य सेवा मुहैया कराने में बिहार निजी अस्पतालों पर निर्भर है। राज्य में स्वास्थ्य पर निजी और सरकारी खर्च का अनुपात भारत में दूसरे नंबर पर है। दिल्ली के सुपर-यैशिली अस्पतालों से बिहार के गरीबों को आयुष्मान भारत स्कीम के तहत इलाज करने के लिए कहा जाता है क्योंकि राज्य में ऐसे अस्पताल पर्याप्त संख्या में नहीं हैं।

ऐसे परिदृश्य में उन डॉक्टरों के बारे में जाना जरूरी है जो राज्य में बदलाव ला रहे हैं। इस कॉफी टेबल बुक में आधुनिक युग के ऐसे कई चरक और सुश्रुत की चर्चा है। इसमें न सिर्फ एलोपैथी के डॉक्टरों के काम को सराहा गया है, बल्कि हाय्योपैथी जैसी वैकल्पिक विधा का भी जिक्र है। किताब में फिजिशियन और सर्जन, दोनों की पहचान की गई है।

नालंदा और विक्रमशिला के स्वर्णिम युग को वापस लाने के लिए बिहार को शिक्षा क्षेत्र से उम्मीदें हैं।

कॉफी टेबल बुक में उन शिक्षाविदों के बारे में बताया गया है जो बिहार का चेहरा बदल रहे हैं। कोई भी राज्य संगीत, साहित्य और समाज सेवा के बिना आगे नहीं बढ़ सकता। बुक में इन क्षेत्रों के प्रतिष्ठित लोगों को भी उचित स्थान दिया गया है।

कुल मिलाकर यह कॉफी टेबल बुक बिहार के उन लोगों को सराहने की एक कोशिश है जिनका योगदान अतुलनीय है। ऐसे लोग हम सबके लिए गोल मॉडल हैं, खासकर बिहार के उन युवाओं के लिए जिनके कंधों पर राज्य के भविष्य की जिम्मेदारी है।

Indranil  
इंद्रनील रॉय

# CONTENTS

प्रस्तावना .....	6
अजय मैतिन .....	8
डॉ. अनिल कुमार .....	12
डॉ. अभय नारायण राय .....	16
अशोक अग्रवाल .....	20
आनंद कुमार .....	24
डॉ. आशुतोष शरण .....	28
डॉ. आशुतोष त्रिवेदी .....	32
प्रो. के.सी. सिन्हा .....	36
क्लेमेन्ट फ्लोरियन .....	40
पद्मश्री गोदावरी दत्त .....	44
डॉ. गौतम मोदी .....	48
डॉ. ( कैटन ) दिलीप कुमार सिन्हा .....	52
डी.एन.सिंह .....	56
पद्मश्री डॉ. नरेंद्र प्रसाद .....	60
डॉ. नवनीत कुमार .....	64
प्रियम्बद सिंह .....	68
डॉ. प्रवीण आनंद .....	72
एम.के. झा .....	76
स्व. डॉ. आर.पी. सिंह .....	80
पद्मश्री प्रो. रवींद्र कुमार सिन्हा .....	84
ई.रबींद्र कुमार सिंह .....	88
पद्मश्री डॉ. रबींद्र नारायण सिंह .....	92
डॉ. रविशंकर सिंह ( बच्चन सिंह ) .....	96
डॉ. रिदु कुमार शर्मा .....	100
पद्मश्री डॉ. विजय प्रकाश सिंह .....	104
डॉ. वरुण कुमार .....	108
विशाल आदित्य .....	112
श्यामली नारायण .....	116
डॉ. श्रवण कुमार .....	120
संजय चौधरी .....	124
डॉ. सहजानंद प्रसाद सिंह .....	128



अजय मैतीन

## मुश्किलों में भी नहीं मानी हार

साधना और संघर्ष भरी यह कथा एक अद्भुत जीवन यात्रा का प्रतिबिम्ब है। कोई व्यक्ति आत्म प्रेरणा और दुर्गम परिगम के द्वारा कैसे निरंतर प्रगति कर सकता है, यह गाथा उसी का दुर्लभ उदाहरण है। साधना और समृद्धि के प्रस्तुत प्रतीक हैं अजय मैतीन जिन्होंने शून्य से शिखर तक उपलब्धि अर्जित की है। अजय की संघर्ष यात्रा मात्र तीस वर्षों की कहानी है। उनका कहना है कि उन्होंने अपने जीवन में जो कुछ और जितना भी प्राप्त किया, वह निरंतर परिष्कृत होते विचारों, लक्ष्य प्राप्ति के लिए वेगपूर्ण प्रवाह और समाज की सर्वोच्च सत्ता के प्रति अटूट आस्था का प्रतीक है। अपने मार्ग के प्रचंड प्रवाह के बीच आई सशक्त बाधाओं को पराजित कर अपने पूर्व- निर्धारित उद्देश्यों को पूरा करना, इनकी सबसे बड़ी विशेषता है। जीवन एक आत्म निर्धारण की प्रक्रिया है, आज अजय मैतीन एक लोकप्रिय मित्र कर्मठ व्यापारी समाधान प्रस्तुतकर्ता विशेष परामर्शदाता और एक विश्वसनीय प्रतिष्ठान ही नहीं बल्कि एक सुसंगठित संस्था के समर्पित और निष्ठावान नेता भी हैं। स्वाभाविक है कि उनके अधिकांश गुण और विलक्षण प्रतिभा उनके स्वर्गीय पिता विश्वनाथ मैतीन का वरदान है जो स्वयं भी एक ख्याति प्राप्त प्रिंटिंग व्यवसायी रहे हैं। सच तो यह है कि विपरीत परिस्थितियों के बीच भी एक परिवार मात्र साधना और संघर्ष के सहयोग से कैसे उन्नाति कर सकता है, कार्यकुशलता के नए मापदंड स्थापित कर सकता है, यह अजय मैतीन की पारिवारिक पृष्ठभूमि से स्पष्ट है।



बिहार के गया में जन्मे अजय मैतिन की प्रारंभिक शिक्षा बाँकीपुर स्थित संत जोसेफ कॉलेज हाई स्कूल में हुई। तत्पश्चात कक्षा 2 में इनका नामोनक पटना के प्रसिद्ध संत जेवियर्स स्कूल में हुआ और इसी विद्यालय से अजय ने 1979 में मैट्रिक की परीक्षा पास की! 1980 में अजय ने पटना विश्वविद्यालय के अधीन पटना कॉलेज में अपना नामोनक करवाया और 1982 में आई.ए की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। 1984 में पटना कॉलेज से गणनीति विज्ञान में ऑनर्स करने के पश्चात 1985 में अजय पटना विश्वविद्यालय के एम.बी.ए कार्यक्रम से जुड़े और पढ़ाई के साथ साथ रोजगार की तलाश शुरू की। एक मेधावी छात्र के रूप में पहचान रखने वाले अजय के चाचा तारकेश्वर मैतिन पटना वाणिज्य महाविद्यालय के विश्वविद्यालय प्रोफेसर हैं और पिता विश्वनाथ प्रसाद मैतिन प्रिंटिंग के कारोबार की नामी शक्तियां थे। 50 के दशक में अजय के पिता ने मुंबई जाकर द टाइम्स ऑफ इंडिया में प्रिंटिंग से संबंधित कामों का प्रशिक्षण हासिल किया और फिर गया वापस आकर

**अजय के अनुसार**  
“भविष्य में कठिनाइयां आएंगी।  
नई चुनौतियों को मेरा इंतजार होगा।  
मेरा संकल्प है कि मैं पूरी निष्ठा एवं  
सच्चाई से लक्ष्य को प्राप्त करूँगा।”

तारा प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की। बदलते समय के साथ कारोबार भी बढ़ता चला गया और फिर विश्वनाथ मैतिन ने अपने प्रिंटिंग व्यवसाय को पटना शिष्ट कर लिया। बातचीत के दौरान अजय बताते हैं कि उस दौर में मेरे पिता ने प्रिंटिंग जगत में जो सुकाम हासिल किया था, लोग आज भी उसकी मिसाल देते हैं। हमने वो दीर भी देखा है जब पिता के व्यवसाय से जुड़कर 75 से अधिक लोग काम करते थे और वह बक्त भी देखा जब घर के सारे जेवर बिक गए और हमारा प्रेस बंद हो गया। पिता जी कहा करते थे कि कठिन परिश्रम के साथ ईमानदारी के बूते आगे बढ़ने वाले न केवल अपनी मजिल खुद तय करते हैं बल्कि उन्हें सफलता अवश्य मिलती है।

प्रिंटिंग के पारिवारिक व्यवसाय होने के कारण अजय

को प्रिंटिंग व्यवसाय की अच्छी जानकारी थी। ऐसे में अजय

ने 1985 में पटना से प्रकाशित अंग्रेजी टैनिक द टाइम्स

ऑफ इंडिया के अधिकारियों से संपर्क किया और प्रिंटिंग

सलूशन प्रोवाइडर के तौर पर काम करने की इच्छा जाहिर की। अंग्रेजी अखबार के प्रबंधन को यह प्रस्ताव पसंद आया और अजय की कंपनी ग्राफिक ट्रेड्स ने टाइम्स

ऑफ इंडिया के साथ काम शुरू किया। कम खर्च में अच्छी

छपाई और प्रिंटिंग के तकनीकी ज्ञान को देखकर बिहार के

प्रायः सभी हिंदी और अंग्रेजी दैनिक ग्राफिक ट्रेड्स से जुड़ते

चले गए और अजय की शोहरत तेजी से बढ़ने लगी। अजय

बताते हैं कि 1987-88 तक हमने करीब-करीब बिहार से प्रकाशित होने वाले सभी समाचार पत्रों के साथ काम किया। और तो और, 1990 के आसपास विहार के जितने भी प्रमुख प्रिंटिंग प्रेस थे उन सभी के सलूशन प्रोवाइडर के तौर पर हमने काम किया।

90 के दशक में प्रिंटिंग व्यवसाय करवट बदल रहा था साथ ही कम्प्यूटर युग का आरम्भ हो चुका था। ऐसे में अजय मैतिन ने बड़ा फैसला लिया और आई.टी क्षेत्र में काम करने का मन बनाया, इस काम के लिए अजय पूरी तरह तैयार नहीं थे लेकिन उन्हें इस क्षेत्र में संभावनाएं दिखाई दे रही थीं। ऐसे में मैतिन को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। अजय कहते हैं कि शुरुआती कई महीनों में यदि किसी जिले से माउड में खराबी की खबर भी मिलती तो मैं अपनी गाड़ी से लम्बी दूरी तय कर खुद वहां जाता ताकि उन्हें संतुष्ट कर सकूँ! मेरी इस सोच के कारण अधिकारियों का भरोसा युक्तपर बढ़ने लगा, साथ ही उन्हें यह भी महसूस हुआ कि हमारा उद्देश्य केवल आर्थिक नहीं बल्कि सरकारी कामों में उत्पन्न बाधाओं को दूर करना भी है। गुजराते समय के साथ मैंने देखा कि मेरी प्रतिस्पर्धा, ईमानदारी, समर्पण, मेहनत के चलते अधिकारियों के भरोसे को कायम रखने का मेरा हर प्रयास सफल रहा।

राज्य एवं केंद्र की सरकारों के साथ काम के लम्बे

अनुभव के बीच 2003-07 में अजय मैतिन को राष्ट्रीय स्तर पर कई अवार्ड मिले। 2006 में वे इंडियन एक्सप्रेस के एंटरप्राइज ईस्ट के पुरस्कार से सम्मानित हुए। इसके अलावा 2008 में उन्हें भारत सरकार के माइक्रो, स्माल एवं मीडियम एंटरप्राइज द्वारा स्पेशल रेकमिशन राष्ट्रीय अवार्ड से, माननीय मुख्य अतिथि एवं तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की मौजूदगी में नवाजा गया। इसके अलावा उन्हें 2009 में संत जेवियर्स अलमुनी एसोसिएशन द्वारा सिनीफिकेंट अचीवमेंट अवार्ड और 2011 में स्वीडन की प्रसिद्ध कंपनी एक्सिस कम्युनिकेशन द्वारा बेस्ट इमर्जिंग



सिस्टम इंटरप्रेटर अवार्ड और 2007, 2008 एवं 2013 में प्रसिद्ध पत्रिका सी.आर.एन द्वारा सी.आर.एन एक्सेलेंस अवार्ड से नवाजा जा चुका है। आई.टी क्षेत्र के जानकारों का मानना है कि अजय जिस प्रकार का कार्य आज कर रहे हैं उस स्तर का कार्य कौशल एवं क्षमता विहार से बाहर की कंपनियों के पास है ही नहीं लेकिन अपने दम पर, जटिल समस्याओं एवं प्रतिकूल परिस्थितियों में संयम, विवेक, धैर्य से इस प्रकार का काम करने वाले अजय सभवतः प्रदश के पहले और अकेले ऐसे व्यक्ति हैं।

बिहार सरकार के करीब सभी विभागों के लिए काम कर चुकी अजय की कंपनी ने अब तक अपने राज्य और देश की कई महत्वपूर्व संस्थाओं और कंपनियों के साथ काम किया है। ऐसी सरकारी एवं निजी संस्थाएं कंपनियों की टेक्नीकल योग्यताओं के आधार पर ही चयन करती है और ऐसी कुछ बड़ी कंपनियों में एक नाम आज ग्राफिक ट्रेड्स प्राइवेट लिमिटेड का भी लिया जाता है।

अजय मैतिन कहते हैं कि जिन्दगी में अच्छे और अनुभवी लोगों से मुलाकात काफी अहमियत रखती है जिनके साथ बिताये कुछ पल अपाको अनुभवों से भर देते हैं। मेरे जीवन में पटना से प्रकाशित हिंदी दैनिक हिन्दुस्तान के मुखिया आदरणीय वाई.सी.अग्रवाल और मेरे चाचा तारकेश्वर मैतिन का बहुमूल्य योगदान रहा है और इन्हें मैं अपना पथ प्रदर्शक मानता हूँ अजय अपने पथप्रदर्शकों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि इस यात्रा में उन्होंने निररता और साहस से जीवन जीने एवं अनुशासनबद्ध कर्मयोगी बने रहने को निरत प्रेरित किया है।

एक मुलाकात के दौरान अजय की पत्नी ममता ने कहा कि उन्होंने हमेशा कुछ बड़ा करने की सोची। इसकी यह बानी ही है कि 2014 एवं 2019 के लोकसभा चुनाव में ज्ञारेषण राज्य निवाचन आयोग द्वारा उन्हें एक बड़ी जिम्मेदारी सौंपी गई जिसके तहत अजय की कंपनी ने प्रदेश के 7 हजार बूथों पर पोस्टिंग के लाइव वेबकास्टिंग के कार्य को संपन्न किया। इसके अलावा बिहार सरकार, पटना स्मार्ट सिटी से अत्याधुनिक, अभूतपूर्व एवं उच्च तकनीक ओपन एयर थिएर का काम भी अजय की कंपनी को मिला है जिसमें बिहारवाचस्पियों के लिए सिनेमा, वर्ल्ड कप मैच आदि के इंतेजाम तो होंगे ही, साथ ही कई कई प्रकार के इवेंट्स के प्रारंभण की भी व्यवस्था होगी। लॉक टॉप द्वारा इंडिया की पढ़ाई की तैयारियों में जुटी अजय मैतिन की पुत्री अनन्या और इंजीनियरिंग की तैयारियों में जुटे पुत्र प्रशु अजय कहते हैं कि हमारी दादी जानकी देवी बताती थीं कि अजय कोई साधारण व्यक्ति नहीं बल्कि दृढ़ इच्छाशक्ति के दूरदर्शी इंसान हैं... और आज हमें लगता है कि हमारे पास ने दादी जी की बातों को सच कर दिखाया।





डॉ. अनिल कुमार

## औरों से अलग चलकर बनाई पहचान

हममें से कितने लोग ऐसे हैं जो कॅरिअर के रूप में चमकदार भविष्य को छोड़कर एक अनिश्चित राह पर चलने का हौसला करते हैं? निश्चित रूप से ऐसे लोगों की संख्या उंगलियों पर गिने जाने योग्य होती है। हालांकि यह भी सच है कि समाज में पहचान बनाने में ऐसे ही लोग कामयाब होते हैं जो कि कुछ अलग करने का हौसला रखते हैं। प्रस्तुत आलेख के नायक ऐसे ही व्यक्ति हैं जिनके पिता चाहते थे कि बेटा पढ़-लिखकर गांव का नाम रौशन करे और बेटे ने पिता को निराश नहीं किया। उसने न सिर्फ गांव और अपने राज्य का नाम रौशन किया बल्कि





14 | डॉ. अनिल कुमार

देश की बहुमूल्य धरोहर आयुर्वेद को जन-जन के बीच लोकप्रिय बनाने में पूरा जीवन लगा दिया। हम बात कर रहे हैं डॉक्टर अनिल कुमार की, जो देश में एचआईबी के बारे में शोध एवं इसके सफल इलाज के क्षेत्र में देश के चुनिदा नामों में शामिल हैं। भावती आयुर्वेद प्राइवेट लिमिटेड के चेयरमैन के रूप में मेडिसीन के क्षेत्र में उनकी यात्रा वाकई शानदार रही है।

बिहार के नालंदा जिले के सोहसराय में 1967 में जन्मे डॉक्टर अनिल कुमार की शुरुआती शिक्षा गांव के ही प्रयाग लाल साहू हाई स्कूल में हुई। उनके पिता सोहसराय स्थित बरारा ग्राम पंचायत के मुखिया और व्यापारी थे। उनकी इच्छा थी कि उनका बेटा अच्छी शिक्षा पाकर कुछ नया करे और गांव एवं परिवार का नाम रोशन करे। स्कूल की पढ़ाई के बाद अनिल कुमार ने इंटर और बीएससी करने के लिए बिहार शरीफ के किसान कॉलेज को चुना। अपने भविष्य को लेका अनिल पहले से स्पष्ट थे इसलिए बीएससी करने के बाद कुछ भी सोचे बिना उन्होंने आयुर्वेद के क्षेत्र में काम करने का फैसला लिया और 1998 में आयुर्वेदिक चिकित्सक की डिग्री हासिल की।

दरअसल उन्होंने बहुत ही कम उपर से यह देखा था कि लोगों को इलाज के लिए अपना घर-बार तक गिरवी रखना या बेकाम पड़ता है और इसके बावजूद बीमारी फिर लौटकर आ सकती है। ऐसे में उन्होंने एलोपैथी के बजाय आयुर्वेद पर ध्यान केंद्रित किया। बुजुर्गों में पाचन और जोड़ों के दर्द जैसी बीमारियां तो बार-बार उभर आती हैं। इसी बजह से डॉक्टर अनिल ने इन बीमारियों के स्थार्ड समाधान के लिए आयुर्वेद पर अपना ध्यान केंद्रित किया। आयुर्वेद के अपने शुरुआती अध्ययन में उन्होंने पाया कि भारत की इस पारंपरिक चिकित्सा विषि में ढंग से कोई शोध ही नहीं हुआ है जबकि इसमें बीमारियों के टिकाऊ इलाज की अनंत संभावनाएं लियी हैं। यहीं सोच कर जन साधारण की सेवा में प्रभावी आयुर्वेद के प्रयोग के लिए 2004 में उन्होंने भागवती आयुर्वेद की स्थापना की। आयुर्वेदिक विज्ञान में उनके अनुभव और गहरी अभिरुचि एवं विभिन्न औषधीय पौधों की जानकारी ने उन्हें उसी साल आयुर्वेदिक दवा निर्माण का ताइसेस भी दिलवा दिया।

इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। उन्होंने राजगार के निकट एक प्रयोगशाला स्थापित की। कफ क्योर, रूमागोल्ड कैप्सूल, डी क्योर टेबलेट, लिवरेक्स सीरप और लिटोन सीरप जैसी दवाओं के जरिये भागवती आयुर्वेद ने बाजार में कदम रखा। इन दवाओं को बाजार से बेहद सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली। लिवरेक्स जैसी दवा लंबी अवधि में प्रभावी इलाज मुहैया कराती है क्योंकि यह शरीर के संपूर्ण रासायनिक कंस्ट्रीट्यूशन पर काम करती है और शरीर के तीन दोषों-वात, कफ और पित्त को संतुलित करती है।



इसका स्थाई प्रभावी इलाज तलाशने की दृढ़ इच्छा शक्ति ने डॉक्टर अनिल को लगातार प्रेरित किया। आखिरकार उन्होंने भगवती कॉन्स्टॉप के रूप में एक पथप्रवर्तक समाधान तलाश ही लिया। आयुर्वेद की यह दवा न सिर्फ शरीर की सेवा प्रतिरक्षा प्रणाली को पुनःस्थापित करती है बल्कि मानव शरीर से एचआईबी के सारे वायरस को मार देती है। इसके कारण एचआईबी का मरीज पूरी तरह सामान्य जीवन जी सकता है।

डॉक्टर कुमार का शोध न सिर्फ सफल हुआ बल्कि इससे उन्हें अपनी सर्वश्रेष्ठ क्षमता से मानवता की सेवा करने का संघोष भी मिला। आज भी डॉक्टर अनिल एचआईबी के हर मरीज की पूरी जांच और उनमें मौजूद सीडीए और बायरल लोड की मौजूदगी पर निगह रखते हैं। मरीजों का नियमित फॉलोअप किया जाता है और बीमारी में हर सुधार को दर्ज किया जाता है। डॉक्टर अनिल कई एचआईबी मरीजों का सफल इलाज कर सामान्य जीवन में वापस भेज चुके हैं।

डॉ. अनिल आयुर्वेद को उच्चतम मानकों पर लाने के लिए लगातार शोध कर रहे हैं। इससे उन्हें अपार विश्वास और सम्मान मिला है। उन्होंने कई मीडिया कार्यक्रमों में भाग लिया और अपने अनुभव साझा किए। स्वास्थ्य क्षेत्र में उनकी सफलताओं को देखते हुए मीडिया के द्वारा उन्हें बिहारी अमिता सम्मान और हेल्पी लीविंग अवार्ड प्रदान किया गया है।

डॉ. अनिल कुमार | 15



डॉ. अभय नारायण राय

## पेशे को बनाया मिशन

गया स्थित अभय इंस्टीट्यूट ऑफ मैडिकल साइंसेज के संस्थापक डॉ. अभय नारायण राय ने अमेरिका से यिले नौकरी के प्रस्ताव को ठुकरा अपने देश की सेवा करने का संकल्प लिया। गरीब रोगियों के प्रति अपने समर्पण उनके त्वरित इलाज और सहानुभूति के बल पर ही वे आज इस मुकाम पर पहुंचे हैं। राज्य के गरीब तबके के मरीजों के लिए वे मसीहा जैसे हैं।

इसके बाद उन्होंने मैडिकल क्षेत्र को प्रोफेशन बनाने का फैसला किया और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के चिकित्सा विज्ञान संस्थान (आईएमएस) से एमबीबीएस और फिर एमडी की डिग्री हासिल की। आईएमएस-बीएचयू में मैडिकल रजिस्ट्रार और लेक्चरर के रूप में सेवा देने के बाद डॉक्टर राय उच्च शिक्षा के लिए 1973 में ब्रिटेन गए जहाँ उन्होंने महज छह महीने में लंदन से एमआरसीपी की उपाधि हासिल की। इसके बाद एक वर्ष तक उन्होंने मैडिसिन में एसएचओ के रूप में काम किया और फिर पश्चिमी इंडियां ग्लाससगो में दो साल तक कार्डियोलॉजी के रजिस्ट्रार के रूप में काम करने के बाद आखिरकार साल 1976 में डॉ. राय देश की सेवा करने भारत लौट आए।

ब्रिटेन से लौटने से पहले डॉक्टर राय को अमेरिका में ग्रीन कार्ड सुविधाओं के साथ रेजिस्ट्रेट इन कार्डियोलॉजी के रूप में नौकरी का प्रस्ताव मिला लेकिन अमेरिका में काम करने के बदले उन्होंने देश की सेवा करना पसंद किया। उनके उत्कृष्ट शैक्षणिक कैरियर को देखते हुए डॉ. राय एफआरसीपी (ग्लासगो) से भी सम्मानित किया गया।



डॉ. राय अनुराग नारायण मेमोरियल मगध मेडिकल कॉलेज, गया के साथ लंबे समय से जुड़ा रहा। वह वह जगह है जहां से उनकी यादें जुड़ी हैं। इस कॉलेज में 1976 में उन्होंने एक सहायक प्रोफेसर के रूप में प्रवेश किया और सिर्फ दो साल बाद 1978 में उन्हें एसेसिएट प्रोफेसर के रूप में पदोन्नत कर दिया। लंबे शैक्षणिक अनुभव के साथ साल 1982 में उन्हें प्रोफेसर बनाया गया और उन्होंने 2001 तक यहां एक प्रोफेसर के रूप में काम किया और 2002 में प्राचार्य के रूप में यहां से सेवानिवृत्त हुए। उनके कई छात्र और सहकर्मी आज भी डॉक्टर राय के एक उत्कृष्ट चिकित्सक और शिक्षक के रूप में याद करते हैं। सेवानिवृत्ति के इतने साल बाद भी डॉक्टर राय के

कार्य भुलाए नहीं भूलते। उन्होंने गया में अभय इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (AIMS) की स्थापना की है। वे इस संस्थान के मुखिया और मेडिसिन विभाग के अध्यक्ष हैं। पूरे मगध परिक्षेत्र में अभय इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज एकमात्र सुपर-स्पेशियलिटी संस्थान है। डॉक्टर राय आईएमए, आईएमएएमएस, एपीआई, सीएसआई, आईसीसी, एचएसआई और रेड क्रॉस गया जैसे कई चिकित्सा संगठनों के आजीवन सदस्य हैं। इसके अलावा, वे IMA की गया शाखा के अध्यक्ष, एपीआई मगध डिवीजन और एपीआई बिहार चैप्टर के अध्यक्ष, सीएसआई बिहार चैप्टर के अध्यक्ष, एपीआई की कार्यकारी समिति के सदस्य, एचएसआई इंडिया के

जाता है। हाल ही में डॉक्टर राय को पटना में दैनिक जागरण हेल्थ एक्सीलेंस अवार्ड्स, 2018 में 'सर्वश्रेष्ठ दूरदर्शी नेता (मेडिसिन)' का प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। मेडिसिन जगत से परिचित लोग बताते हैं कि डॉ. राय को समाज सेवा का शौक है। इस शौक ने उन्हें रोटरी इंटरनेशनल के सहयोग से सराहनीय कार्य करने के लिए प्रेरित किया है। उनके कार्यों को ध्यान में रखते हुए आउटलुक पत्रिका समूह ने वर्ष 2018 में उन्होंने आइकन्सन ऑफ बिहार की सूची में शामिल किया है।

रोटरी गया शहर के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने अनुकरणीय कार्य किए हैं। गया के प्रसिद्ध आके मेमोरियल एपीआई चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष, डॉ. राय कहते हैं कि साल 2002 में गरीब और ज़रूरतमंद रोगियों को ध्यान में रखते हुए ट्रस्ट ने एपीआई भवन की स्थापना की जहां वंचित वर्ग से आने वाले रोगियों को विशेषज्ञ डॉक्टरों का उपचार मिलता है। खुद डॉक्टर राय अपने साप्ताहिक ओपीडी के दौरान वहां इस वर्ग के कम से कम 80 से 100 मरीजों का इलाज करते हैं।

उनकी पत्नी लाला राय का कहना है कि डॉक्टर राय ने जेबी राय मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट की स्थापना की है। डॉक्टर अभय नारायण राय खुद हैं इस ट्रस्ट के चेयरमैन



और ट्रस्ट ने उनके पैतृक गांव लौवाडीह में एक स्नातकोत्तर महाविद्यालय शुरू किया है। इस कॉलेज का लक्ष्य गरीब ग्रामीण छात्रों, विशेषकर लड़कियों को उच्च शिक्षा प्रदान करना है। वे साल के लिए डॉक्टर राय ने मगध सुपर थर्टी के अध्यक्ष के रूप में भी काम किया। यह संस्थान हर साल इंजीनियर बनने के इच्छुक 30 गरीब ग्रामीण छात्रों को नियुक्त आवासीय कोचिंग प्रदान करता है। हाल ही में उन्होंने एक गया वेलफेयर ट्रस्ट स्थापित किया है। इसका उद्देश्य गरीबों की सेवा के लिए सामुदायिक हाल और एक धर्मार्थ अस्पताल का निर्माण करना है।



अशोक अग्रवाल

## संघर्ष से बनाई सफलता की राह

राजस्थान के एक गांव से खाली हाथ निकला एक परिवार हजारों किलोमीटर दूर बिहार आकर मात्र एक पीढ़ी के अंदर सफलता के नए कीर्तिमान गढ़ दे ऐसा कम ही होता है मगर बिहार के अशोक अग्रवाल ने ऐसा कर दिखाया है। उन्होंने ने कड़ी मेहनत से न सिर्फ अपनी और अपने परिवार की जिंदगी संवारी बल्कि अब वे समाज को भी उसका हिस्सा लौटा रहे हैं।

और दूसरों के लिए प्रेरणास्रोत बन गए हैं। खास बात यह कि जिंदगी में सफलता के कई आयाम हासिल करने वाले अशोक अग्रवाल ने ग्रेजुएशन भी नहीं किया है। यानी उन्होंने ये साबित किया है कि कारोबारी और सामाजिक सफलता उच्चर डिग्रियों की मोहताज नहीं होती।

यह कहानी शुरू होती है अशोक अग्रवाल के पिता रतनलाल अग्रवाल से जो कि मूलतः राजस्थान के जयपुर के निकट कोटयुतली पाउडी गांव के रहने वाले थे। रतनलाल अग्रवाल के पिता भूरामल अग्रवाल का नाम गांव के बड़े जर्मांदारों में शामिल था मगर अचानक स्थितियां बिगड़ गईं और रतनलाल को अपनी रोजी खुद कमाने के लिए अपनी जर्मीन से दूर होना पड़ा। आजादी के बाद का दशक था और रतनलाल जीविकोपार्जन के लिए 1958 में बिहार के पटना पहुंचे। यहां 1959 में कंकड़बाग इलाके में उन्होंने शिव किरणा भंडार के नाम से अपनी किराने की दुकान शुरू की। कंकड़बाग में ही साल 1972 में अशोक अग्रवाल का जन्म हुआ। चार भाइ और चार बहनों में अशोक सबसे छोटे थे और इन्हें बड़े परिवार के

खर्च चलाने के लिए अशोक को भी सिर्फ़ छह साल की उम्र में दुकान में पिता का हाथ बंटाना पड़ा। इससे उनमें कारोबारी के गुण बचपन से ही विकसित हो गए।

पिता ने अशोक की आर्थिक शिक्षा से कोई समझौता नहीं किया और उन्होंने पटना के प्रसिद्ध सर गणेश दत्त पाटलीपुत्र हाई स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा पास की। मैट्रिक की परीक्षा पास करते ही उन्हें डाक विभाग से डाकिये की नौकरी का प्रताप मिला। हालांकि उन्हें समझ आ गया कि वे किसी दूसरे की चाकरी के लिए नहीं बने हैं और उन्होंने नौकरी से इस्तीफा दे दिया और आगे कभी किसी की कोई नौकरी न करने का भी फैसला कर लिया। आगे की पढ़ाई के लिए उन्होंने माध्य यूनिवर्सिटी के प्रसिद्ध कॉलेज ऑफ कॉर्मस में दाखिला लिया और यहां से इंटरमीडिएट की पढ़ाई पूरी की। पिता चाहते थे कि अशोक कम से कम ग्रेजुएशन तक की पढ़ाई तो पूरी कर लें मगर अशोक ने उनकी बात नहीं मानी और इंटर के बाद ही अलग-अलग कारोबार में हाथ आजमाना आरंभ कर दिया। हालांकि उनके घर की हालत ऐसी नहीं थी कि वे कारोबार के



लिए बड़ी पूँजी का इंतजाम कर पाते इसलिए उन्हें कामयाबी के लिए लंबा इंतजार करना पड़ा। शुरुआती कारोबारों में किस्मत ने भी कई बार धोखा दिया मगर उन्होंने हिम्मत नहीं हारी।

अशोक अग्रवाल ने शुरुआत में पटना में ही फ्लावर मिल, मुर्गीपालन और डेयरीफार्म जैसे कारोबार किए। हालांकि डेयरीफार्म के कारोबार में उन्हें तब तगड़ा झटका लगा जब एक ही बार में उनकी 15 गांवों की मौत हो गई। जहिर है कि इससे उन्हें बड़ा घाटा उठाना पड़ा। वह झटका इतना बड़ा था कि अशोक ने इसके बाद दूसरे कारोबारों की ओर ध्यान देना शुरू किया।

उन्होंने शिक्षा क्षेत्र में किस्मत आजमाने का फैसला लिया। पटना में पूरे बिहार से बच्चे उच्च शिक्षा ग्रहण करने आते हैं और इन बच्चों के लिए पटना में रहना हमेशा से एक परेशानी बालों की स्थिति रही है। अशोक अग्रवाल इस बात को जानते थे। यही सोचकर साल 2010 में उन्होंने अपने पुनर्नाम कालेज, कॉलेज ऑफ कॉमर्स के पास तिवारी छात्रावास के नाम से लड़कों के हॉस्टल की शुरुआत की। वह वो दौर था जब देश में रियल इंस्टेट का धंधे चरम पर था। जमीन और फ्लैटों के दाम आसमान छू रहे थे। अशोक ने इस मौके को भी भांप लिया और इसी के तहत उन्होंने ज्ञारखंड की राजधानी रांची में रियल इंस्टेट के धंधे में कदम रखा। उन्होंने कुछ साल में रांची के रातू रोड इलाके में अशोका अपार्टमेंट्स का निर्माण किया। यहां किस्मत यहां भी उनसे एक कदम आगे चल रही थी और इस धंधे के उनके साझेदार का आकस्मिक निधन हो गया और अशोक को रांची में अपना काम



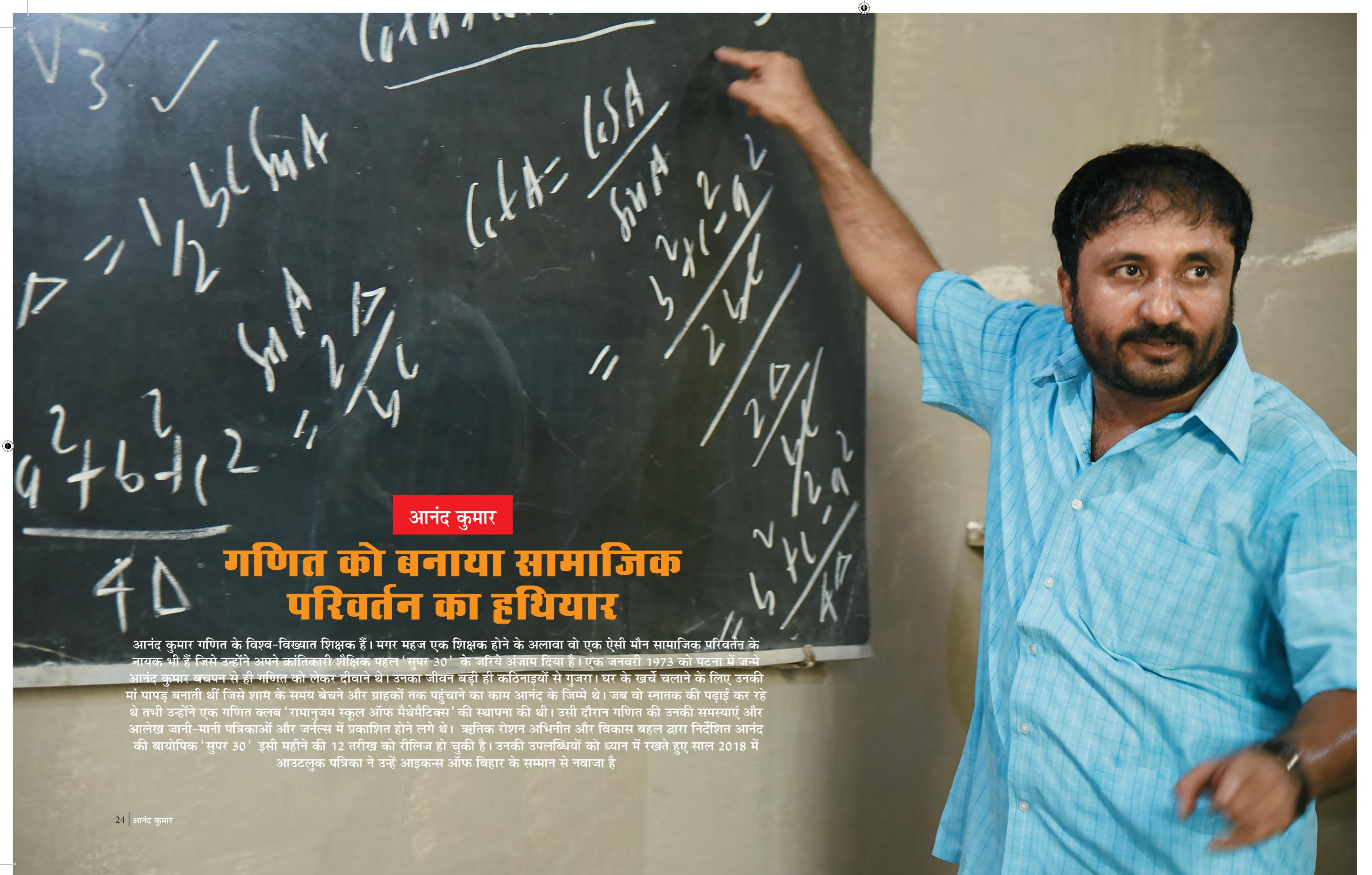
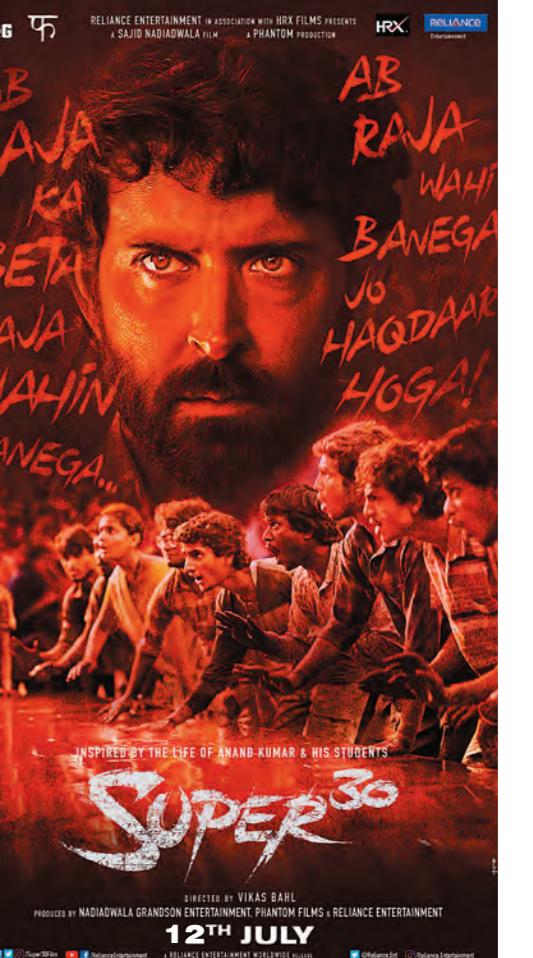
समेटना पड़ गया। हालांकि तबतक अशोक पूँजी के मामले में आत्मनिर्भर हो चुके थे और उनके लिए आगे की राह आसान हो गई थी।

रियल इंस्टेट का जो काम रांची में अभूता रह गया था अशोक अग्रवाल ने उसे अपनी शिव शक्ति प्राप्तीज के माध्यम से पटना में आगे बढ़ाया। पटना में उन्होंने करीब 1000 लोगों को जमीन के प्लाट बेचे और इसी प्रकार हाजीपुर में भी 45 बीघा जमीन पर 500 लोगों को प्लाट दिया। इन दोनों परियोजनाओं के साथ पटना के रियल इंस्टेट के कारोबारियों में अशोक अग्रवाल का नाम इज्जत से लिया जाने लगा।

अशोक अग्रवाल इससे पहले ही पटना के कंकड़बाग में अपनी मां के नाम पर शारदा गर्ल्स हॉस्टल समूह की स्थापना कर चुके थे औं देखते ही देखते पटना के कई इलाकों में शारदा गर्ल्स हॉस्टल की शाखाएं आंखंभ हो गईं। बाहर से आने वाले अभिभावक यहां की सुविधाएं और सुरक्षित वातावरण को देखकर अपनी बच्चियों को इस हॉस्टल में भर्ती करवाने लगे। हॉस्टल के साथ-साथ अशोक अग्रवाल ने 2012 में कंकड़बाग इलाके में खुशी रेस्टोरेंट और तिवारी होटल के साथ-साथ 2017 में दिनकर चौक पर निर्मालाज किंचन की स्थापना की। बाहर खाने वालों के बीच ये सारे रेस्टरां बेहद लोकप्रिय हैं।

इन कारोबारी सफलताओं ने अशोक अग्रवाल को पैसा तो दिया मगर समाज के लिए कुछ करने की हसरत उनके मन में बनी ही रही। खुद ग्रेजुएट न हो पाने का मलाल भी कहीं न कहीं उनके मन में बना ही हुआ था। तब उन्होंने पूरी तरह शिक्षा के क्षेत्र में उत्तरने का फैसला लिया और हाजीपुर में अपनी एक खाती जमीन पर एम एम कार्वेट स्कूल की शुरुआत की। करीब आठ हजार वर्ग फीट में निर्मित भवन और 10 हजार वर्ग फीट के खेल मैदान वाले इस स्कूल में आज हजारों बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

नेत्रहीन और गरीब बच्चों की शिक्षा एवं अन्य मदद के लिए अशोक अग्रवाल ने अपने माता-पिता के नाम पर शारदा रत्न फाउंडेशन की स्थापना की है। इसके अलावा उन्होंने बड़ी अवस्था में बेसहारा हो जाने वाले लोगों एवं अनाथ बच्चों के लिए पटना के मसौंदी रोड स्थित अपनी एक जमीन पर अनाथालय एवं वृद्धाश्रम का निर्माण करवाया है जो जल्द ही शुरू हो जाएगा। समाज से कुछ पाकर समाज को लौटाने की अशोक अग्रवाल की प्रवृत्ति निश्चित रूप से सराहनीय है। खुद अग्रवाल कहते थे हैं, मेरा परिवार राजस्थान से खाली हाथ आया था और हम दुनिया से खाली हाथ ही जाएंगे। जो कमाया है सब यहां रह जाएगा, इसलिए बेहतर है कि जो जरूरतमंद हैं, उनकी मदद की जाए।



## गणित को बनाया सामाजिक परिवर्तन का हथियार

आनंद कुमार गणित के विश्व-विख्यात शिक्षक हैं। मगर महज एक शिक्षक होने के अलावा वो एक ऐसी मौन सामाजिक परिवर्तन के नायक भी हैं जिसे उन्होंने अपने क्रांतिकारी शैक्षिक पहल 'सुपर 30' के जरिये अंजाम दिया है। एक जनवरी 1973 को पटना में जन्मे आनंद कुमार बचपन से ही गणित को लेकर दीवाने थे। उनका जीवन बड़ी ही कठिनाइयों से गुजरा। घर के खर्चे चलाने के लिए उनकी मां पापड़ बनाती थीं जिसे शाम के समय बेचने और ग्राहकों तक पहुंचाने का काम आनंद के जिम्मे थे। जब वो स्नातक की पढ़ाई कर रहे थे तभी उन्होंने एक गणित क्लब 'रामानुजम स्कूल ऑफ मैथेमैटिक्स' की स्थापना की थी। उसी दौरान गणित की उनकी समस्याएं और आलेख जानी-मानी पत्रिकाओं और जर्नल्स में प्रकाशित होने लगे थे। ऋतिक रोशन अभिनीत और विकास बहल द्वारा निर्देशित आनंद की बायोपिक 'सुपर 30' इसी महीने की 12 तरीख को रीलिज हो चुकी है। उनकी उपलब्धियों को ध्यान में रखते हुए साल 2018 में आउटलुक पत्रिका ने उन्हें आइकन्स ऑफ बिहार के सम्मान से नवाजा है।

वर्ष 1994 में आनंद कुमार को उच्च शिक्षा के लिए ब्रिटेन की कैंब्रिज यूनिवर्सिटी में दाखिला मिल रहा था मगर उनके परिवार की खराब आर्थिक दशा ने उनकी राह रोक दी। डाक विभाग में बेहद कम वेतन पर काम कर रहे उनके पिता की अचानक मौत हो गई और परिवार की कमाई का मुख्य जरिया बंद हो गया। घर के खर्चे चलाने के लिए उनकी मां पापड़ बनाती थीं जिसे शाम के समय बेचने और ग्राहकों तक पहुंचाने का काम आनंद के जिम्मे थे। हालांकि दिन के समय गणित के सिद्धांत और आलेख लिखने का काम बदस्तूर जारी रहा।



बचपन से ही भारी गरीबी देखने के कारण उन्हें इसके कष्ट का ऐसा अहसास था उन्होंने समाज के उस तबके के बच्चों के लिए कुछ करने की टानी जो अवसर न मिल पाने के कारण पिछड़ जाते हैं। यहीं सोच उनकी प्रेरणा बनी जिसने 'सुपर 30' को जन्म दिया। ये ऐसे प्रोग्राम हैं जो समाज के सबसे गरीब तबके से प्रतिभाशाली 30 बच्चों को चुनकर उन्हें जेर्फ़, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी की प्रवेश परीक्षा तथा अन्य प्रतिष्ठित विज्ञान/इंजीनियरिंग संस्थानों में

प्रवेश दिलाने के लिए प्रशिक्षण देने का दावा करता है। सुपर 30 के पिछले 17 सालों के इतिहास में 480 बच्चों में से 422 बच्चे अब तक आईआईटी जेर्फ़ की परीक्षा के जरिये देश के शीर्ष प्रौद्योगिकी संस्थानों में प्रवेश पा चुके हैं। खास बात ये हैं कि इनमें से ज्यादातर बच्चे समाज के सबसे कमजोर तबके से आते हैं और उनमें भी अधिकांश ऐसे हैं जो अपने परिवार में पढ़ाई करने वाले पहली पीढ़ी हैं और जिन्होंने बहुत ही सामान्य स्कूलों में शिक्षा पाई थी।

सुपर 30 में इन बच्चों को मुफ्त रहना, खाना और इन सबसे बढ़कर, मुफ्त की कोन्जिंग मिलती है। हालांकि आनंद कुमार को अपनी इस पहल में निजी क्षेत्र और सरकारी सेवा के बीच अद्वितीय मिलते थे, उन्होंने आनंद कुमार इन बच्चों के सभी खर्च खुद उठाते हैं। वो प्राइवेट ट्यूनिंग से प्राप्त अपनी कमाई का एक हिस्सा इस काम में लगाते हैं जिसमें उनका पूरा परिवार उनका साथ देता है।

दुनिया के कई चैनलों, बड़े अखबारों और पत्रिकाओं ने सुपर 30 के भाव को पकड़ने का प्रयास कर आनंद कुमार के इस काम को वैश्विक पहचान दी है। डिस्कवरी चैनल ने सुपर 30 पर एक धंडे का कार्यक्रम बनाकर इसे 'सामाजिक बदलाव के क्षेत्र में क्रांतिकारी प्रयोग' करार दिया तो वहीं जापान के एसटीबी रिसर्च इंस्टीट्यूट के मुख्य अर्थशास्त्री योड्ची इतोह ने सुपर 30 को 'भारत का गोपनीय हथियार' बताया। एसटीबी रिसर्च इंस्टीट्यूट ने भी प्रसिद्ध एनएचके चैनल के लिए सुपर 30 पर एक फिल्म बनाई है। पूर्व मिस जापान नोरिका फूजीवारा आनंद कुमार की इस पहल पर एक डॉक्यूमेंट्री बनाने पता पहुंची। फ्रैंच 24 ने भी उनकी जिंदगी पर एक छोटी से डॉक्यूमेंट्री फिल्म बनाई है। सुपर 30 पर बनी कई फिल्मों ने अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार जीते हैं।

आनंद कुमार को उनके इस आंदोलन के कारण देश की कई संस्थाओं ने सम्मानित किया है। जबरदस्त शिक्षण तकनीक के कारण आनंद कुमार का नाम लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड्स में भी भी शामिल हो चुका है। टाईम पत्रिका ने साल 2010 में सुपर 30 को 'एशिया के बेहतीन संस्थान' की सूची में रखा था। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा के विशेष दूत रशद हुसैन ने भी इसकी तारीफ करते हुए इसे देश का सबसे अच्छा इंस्टीट्यूट करार दिया था। न्यूजीलैंड के आनंद कुमार की पहल का संज्ञान लेते हुए इसे दुनिया के चार सबसे अनूठे स्कूलों की सूची में जगह दी है।

चाइना टीवी ने अपने बेहद लोकप्रिय शो में शामिल होने के लिए आनंद कुमार को बीजिंग अमीन्त्रित किया था। चाइना इंटरनेशनल रेडियो, बीबीसी और जर्मन रेडियो आदि ने भी सुपर 30 पर कार्यक्रम प्रसारित किए हैं। आनंद कुमार को कनाडा के ब्रिटिश कॉलंबिया की सरकार ने भी सम्मानित किया है।

अपने काम के लिए, आनंद कुमार को विभिन्न सम्मानों, पुरस्कारों, मानद उपाधियों से वैश्विक मान्यता मिली है। नवंबर 2010 में उन्हें बिहार सरकार के सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार मौलाना अब्दुल कलाम आजाद शिक्षा पुरस्कार दिया गया। 2010 में ही अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने बैंगलुरु में उन्हें प्रोफेसर यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार से सम्मानित किया। अप्रैल 2011 में यूरोप की पत्रिका फोकस ने उन्हें ऐसे



व्यक्ति के रूप में चुना जिनमें अतिप्रतिभाशाली लोगों की प्रतिभा निखारने की क्षमता है। ब्रिटेन की पत्रिका मोनोकल ने उन्हें दुनिया के 20 पथप्रदर्शक शिक्षकों में शामिल किया है। आनंद कुमार की आत्मकथा कनाडा निवासी मनोविज्ञानी बिजू मैथू ने लिखी है और इसकी प्रति कुमार ने खुद तात्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी को भेंट की थी।

गरीबों को विशेष शिक्षा देने के लिए हाल में ही आनंद कुमार को बैंक ऑफ बड़ौदा अवार्ड मिला है। राजकोट में आयोजित आठवें राष्ट्रीय गणित कन्वेंशन में उन्हें रामानुजन मैथमैटिक्स अवार्ड दिया गया। कोयंबटूर के करपगम यूनिवर्सिटी ने आनंद कुमार को डॉक्टरेट ऑफ साइंस की

मानद उपाधि दी है। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के हाथों राष्ट्रीय बाल कल्याण पुरस्कार से सम्मानित आनंद कुमार को शिक्षा के क्षेत्र में शानदार काम करने के लिए मध्य प्रदेश सरकार ने महर्षि वेद व्यास राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया। जर्मनी में सेक्सोनी के शिक्षा मंत्रालय ने भी उनका सम्मान किया है। अमिताभ बच्चन को आरक्षण फिल्म में उनकी भूमिका निभाने में भी आनंद कुमार से मदद मिली थी।

निर्देशक विकास बहल ने सुपर 30 के नाम से आनंद कुमार और उनकी शिक्षण पद्धति पर बायोपिक फिल्म बनाई है जिसमें आनंद कुमार की भूमिका जाने माने अभिनेता ऋतिक रोशन ने निभाई है। फिल्म में अभिनेत्री मृणाल

फिल्म के निर्देशक विकास बहल और ऋतिक रोशन के साथ आनंद कुमार



**डॉ. आशुतोष शरण**

## रत्याति के शिखर पर

बिहार के मोतिहारी जिले में अपने ज़माने के प्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ स्व.डॉ. शम्भू शरण के पुत्र डॉ. आशुतोष शरण और उनकी पत्नी डॉ.जसवीर कौर शरण ने अपने दम पर चिकित्सा जगत को जो मुकाम दिलाया है वो क्राबिले-तारीफ है। 1985 में मोतिहारी के ज्ञान बाबू चौक पर एक छोटे से क्लिनिक से शुरुआत करने वाले इस दंपत्ति ने प्रदेश के चिकित्सा जगत में अपनी अमिट छाप छोड़ी है।

अक्टूबर 1956 में बिहार के मुजफ्फरपुर में जन्मे डॉ. आशुतोष शरण आज किसी परिचय के मोहताज नहीं। अपने ज़माने के रघाति प्राप्त हृदय रोग विशेषज्ञ स्व.डॉ. शम्भू शरण के पुत्र आशुतोष की प्रारम्भिक शिक्षा पटना के प्रसिद्ध संत जेवियर्स स्कूल से हुई। तत्पश्चात इनका नामांकन पटना के गर्दनीबग हाई स्कूल में करवा दिया गया जहाँ आशुतोष ने छठी कक्षा तक पढ़ाई की। परिवार की सलाह पर आशुतोष बेतिया चले आए और सातवीं कक्षा में उनका नामांकन किस्टर रजा हाईस्कूल में हुआ और इसी विद्यालय से आशुतोष ने साल 1971 में मैट्रिक की परीक्षा पास की।

साल 1971 में आशुतोष ने मोतिहारी के प्रसिद्ध एम.एस.कॉलेज के पहले आई.एस.सी बैच में 1973 में दाखिला लिया और प्रथम श्रेणी में पास हुए। इसी साल

इनका नामांकन दरभंगा मेडिकल कॉलेज में हुआ और इसी कॉलेज से आशुतोष शरण ने 1979 में एम.बी.बी.एस की डिग्री हासिल की।

पुराने दिनों को याद कर डॉ.आशुतोष कहते हैं कि मेडिकल कॉलेज में उनकी मुलाकात जसवीर कौर ढिल्लन से हुई जो न केवल उनकी सहपाठी थीं बल्कि कॉलेज में उनकी पहचान एक मेधावी छात्रा के तौर पर हुआ करती थी। जसवीर से मेरी बढ़ती नज़रीयाँ मेरी जिन्दगी का टर्निंग पॉइंट साबित हुईं और 1983 में हमने शादी कर ली। उनकी पत्नी और राज्य की जानी मानी गाइनोकोलोजिस्ट डॉ.जसवीर कौर शरण कहती है कि 1970 में मैंने पटना के प्रसिद्ध संत जोसेफ कावेट हाई स्कूल से ग्यारहवीं की परीक्षा पास की और 1972 में पटना साइंस कॉलेज में दाखिला लिया। 1973 में मेरा नामांकन दरभंगा मेडिकल कॉलेज में हुआ और 1979 में डॉ.आशुतोष और मैंने एक साथ ही एम.बी.बी.एस की पढ़ाई पूरी की।

इधर डॉ.आशुतोष 1982-84 तक पटना मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में ख्यातिप्राप्त चिकित्सक डॉ.नरेंद्र प्रसाद के अधीन रहकर जनरल सर्जरी में प्रशिक्षण लेने लगे तो उधर डॉ.जसवीर ने दरभंगा मेडिकल कॉलेज से एम.डी. की डिग्री हासिल की। 1983 में डॉ.आशुतोष ने बतार एस.डी.एम.ओ



बेतिया के एम.जे.के अस्पताल में अपना योगदान दिया और स्टडी लीव लेकर 1982-84 में पटना मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल से पी.जी. की पढ़ाई पूरी की और 1985 में मोतिहारी के टी.बी.हॉस्पिटल में अपना योगदान दिया।

इधर, 1988 में डॉ.जसवीर कौर शरण ने विहार सरकार के स्वास्थ्य विभाग में अपना योगदान दिया और राज्य सरकार द्वारा इकी नियुक्ति लक्ष्मीपुर मुंगेर स्थित रेफेल अस्पताल में कर दी गई लेकिन पति की मोतिहारी में पोस्टिंग होने के कारण इसी साल इनका तबादला मोतिहारी के सदर अस्पताल में कर दिया गया जहाँ ये लम्बे समय तक कार्यरत रहीं। बातचीत के क्रम में डॉ.आशुतोष शरण कहते हैं कि उनके पिता डॉ.शम्भू शरण (अब दिवंगत) का नाम अपने समय के ख्यातिप्राप्त चिकित्सकों में शुमार था। वर्ल्ड मेडिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष और आई.एम.ए के पितामह कहे जाने वाले डॉ.ए.के.एन.सिन्हा (अब दिवंगत) के करीबी मित्र डॉ.शरण 1954 के ग्रेजुएट थे, साथ ही राज्य के पहले ऐसे एम.आर.सी.पी भी रहे जिन्होंने कभी किसी मेडिकल कॉलेज में ही ट्रैक्टिस करते रहे। डॉ.शम्भू शरण ने मोतिहारी में एक छोटे से अस्पताल शरण हॉस्पिटल की स्थापना की थी लेकिन हमने अपने अस्पताल में पैथोलॉजी, केमिस्ट शॉप, और पुरुष डॉ.जसवीर अपनी अलग राह बनाए और कुछ

परिवार के बुजुर्गों का कहना है कि डॉ.आशुतोष और डॉ.जसवीर ने पिता की भावनाओं का सम्मान करते हुए मोतिहारी के जान बाबू चैक से शरण विलिनिक के नाम से एक 10 बेड वाले छोटे से अस्पताल की शुरुआत की और फिर कभी पलट कर नहीं देखा। दिन महीने और साल बदलते गए और देखते ही देखते इस चिकित्सक जोड़े का नाम अब हर किसी की जुबां पर था। पिता द्वारा स्थापित छोटे से शरण हॉस्पिटल के पास अब आशुतोष नर्सिंग होम मल्टीस्पेशलिटी सेवाओं के बेहतर विकल्प के साथ जिले के मरीजों के लिए तैयार खड़ा था। डॉ.आशुतोष और डॉ.जसवीर कहते हैं कि अमूमन एक मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पिटल में प्रायः वह देखा जाता है कि सभी प्रकार की जांच की सुविधाएँ एक ही छत के नीचे उपलब्ध हों लेकिन हमने अपने अस्पताल में पैथोलॉजी, केमिस्ट शॉप, अल्ट्रासाउंड आदि अन्य सुविधाओं को अस्पताल परिसर



से दूर रखा है ताकि मरीज अपनी सुविधानुसार जहाँ चाहे, जांच करा सकता है, साथ ही बेहतर चिकित्सा को व्याप में रखकर पटना के वरिष्ठ चिकित्सक भी अपने सेवायें देने मोतिहारी आते हैं।

एक सफल चिकित्सक के रूप में पहचान बना चुके इस दम्पति ने 1982 में समाज सेवा के इरादे से लायंस क्लब ऑफ मोतिहारी की सदस्यता ग्रहण की, डॉ. शरण इन दिनों लायंस क्लब कपल के अध्यक्ष है और अगले अध्यक्ष के तौर पर डॉ.जसवीर का नाम भी क्लब के सदस्यों के सामने है। डॉ.शरण लम्बे वक्त से इंडियन

मेडिकल एसोसिएशन की मोतिहारी शाखा के सचिव हैं, साथ ही एसोसिएशन ऑफ सर्जन्स ऑफ इंडिया के फेलो होने के अलावा फेलो ऑफ इंटरनेशनल कॉलेज ऑफ सर्जन्स के सदस्य भी हैं। वे भारतीय युलिस सेवा के एक अवकास प्राप्त अधिकारी द्वारा संचालित प्रसिद्ध संस्था 'प्रयास' के न केवल संरक्षक और अध्यक्ष हैं बल्कि विभिन्न प्रकार के खेलों को बढ़ावा देने के कारण इन्हें न केवल जिला एथलेटिक एसोसिएशन का अध्यक्ष बनाया गया है बल्कि ईस्ट चम्पारण बैडमिंटन एसोसिएशन के प्रेसिडेंट के तौर पर एक बड़ी जिम्मेवारी इन्हें के कन्धों पर है। डॉ.आशुतोष शरण मोतिहारी के प्रसिद्ध नवीन

भारती स्कूल के न केवल प्रेसिडेंट हैं बल्कि आयुष और अन्य चिकित्सक एसोसिएशन के पास्ट प्रेजिडेंट और प्रेजिडेंट भी हैं। डॉ.आशुतोष शरण और डॉ.जसवीर कहती हैं कि हमारी बेटी डॉ.निकिता शरण रेडियोलाजिस्ट हैं और पुत्र डॉ.निखिल शरण लेप्रोस्कोपिक सर्जन, हमें पूरा भरोसा है कि हमारे मरीजों को इन दोनों के अनुभवों के साथ बेहतर चिकित्सा का पूरा लाभ मिलेगा और आने वाले वक्त में मोतिहारी में स्थित हमारा यह अस्पताल राज्य के चिकित्सा जगत में मील का पत्थर साबित होगा।



डॉ. आशुतोष त्रिवेदी

## अपनी माटी से जुड़ा गरीबों का सेवक दंत चिकित्सक

आधुनिक दौर में चिकित्सकों के सेवा भावना से विरत होने के चलते और इलाज का खर्च दिन दूनी, रात चौंगुनी रफ्तार से बढ़ रहा हो, अगर कोई डॉक्टर आज भी 25 साल पहले वाली फीस पर ही लोगों का इलाज कर रहा हो तो उसे प्रेरणास्रोत के रूप में ही देखा जाना चाहिये। पटना के नामी दंत चिकित्सक डॉक्टर आशुतोष त्रिवेदी ऐसे ही प्रेरणास्रोत हैं।

एक मध्यमवर्गीय परिवार से आने वाले डॉक्टर त्रिवेदी को कैरिएर में ऊँची उड़ान भरने और विदेशों में नौकरी करने के बेशुमार अवसर पिले मगर अपनी माटी से उनका जुड़ाव इतना मजबूत था कि उन्होंने विहार की राजधानी पटना को ही अपनी कर्मस्थली चुना। उस समय उन्होंने अपनी जो फीस तय की थी, तमाम तरह की मुश्किलें आने के बावजूद आज भी उनकी फीस उतनी ही है। यही नहीं, डॉक्टर त्रिवेदी पटना में दंत चिकित्सा में नई-नई तकनीक और उपकरण लेकर आए हैं और भी उन्होंने कई सारी नई पहलें की हैं।

डॉक्टर त्रिवेदी पटना के दंत चिकित्सा क्षेत्र का जानामाना नाम हैं जिन्होंने एक डेंटल सर्जन के रूप में इस पेशे को नई ऊँचाई प्रदान की है। एक बेहद काबिल डेंटल सर्जन के रूप में अपनी पहचान बना चुके डॉक्टर त्रिवेदी विहार के स्वतंत्रता सेनानी और विहार वित्त सेवा के अधिकारी रहे कपिल देव त्रिवेदी की सात संतानों में सबसे छोटे हैं।

बचपन से ही बेहद मेधावी छात्र रहे आशुतोष त्रिवेदी की आरंभिक शिक्षा पटना के दो नामी स्कूलों, पटना मॉन्टेसरी स्कूल और सेंट माइकल स्कूल में हुई। स्कूल



और कॉलेज के दिनों से ही उन्होंने एक सफल डेंटल सर्जन बनने का सपना देखा और बड़े होकर इस सपने को साकार भी किया। पहले उन्होंने बीआईडीएस की डिग्री हासिल की और उसके बाद कॉस्मेटिक एंड डेंटल सर्जरी की डिग्री हासिल करने अमेरिका के न्यूयॉर्क गए। उन्होंने मगध विश्वविद्यालय से प्रोस्थोडोटिक्स और इंप्लांटोलॉजी में एमडीएस किया। अपने पेशे से जुड़ी उत्तीनी सारी पढ़ाई करने के बाद स्वाभाविक रूप से उनके पास अमेरिका समेत दूसरे देशों से नौकरी के कई सारे प्रस्ताव आए मगर उन्होंने इन सभी प्रस्तावों को ठुकरा दिया, के क्योंकि उनके दिमाग में तो वरन की सेवा भावना भरी थी।

वे भारत लौट आए और 90 के दशक में उन्होंने पटना में ओरो डेंटल के नाम से अपने निजी डेंटल विलिनिक की शुरूआत की। तब उन्होंने अपनी फीस 25 रुपये तय की थी। और आज करीब 25 साल बीने के बाद भी उनकी फीस में कोई बदोतरी नहीं हुई है बल्कि वह 25 रुपये ही है। इसके पीछे उनकी मां की इच्छा छिपी हुई है जो यह चाहती थीं कि डॉक्टर आशुतोष कम खर्च में लोगों को दंत चिकित्सा की बेहतर सुविधा उपलब्ध कराएं। डॉक्टर त्रिवेदी को जानने



34 | डॉ. आशुतोष त्रिवेदी

वाले कहते हैं कि उन्होंने अपनी माँ की इच्छा को पूरा करने में कोई कसर बाकी नहीं रखी है।

कई डॉक्टरों, सहायकों और तकनीशियों से सज्जित डॉक्टर आशुतोष त्रिवेदी की टीम और उनका ओरो विलिनिक भले ही पटना में स्थित हो लेकिन उनके मरीज इस शहर तक ही सीमित नहीं हैं। बिहार और अन्य जगहों के राजनीतिक और टेलीविजन सिलारे, नौकरशाह और भारतीय और एनआरआई अपने गृह शहर में इलाज के लिए उनके विलिनिक में आते हैं। पूरे देश में चल रहे मेडिकल टूरिज्म की तर्ज पर पटना में डेंटल टूरिज्म चल रहा है और इसका श्रेय डॉक्टर त्रिवेदी को ही जाता है। दंत चिकित्सा सेवाओं की भारी कमी को देखते हुए उन्होंने शहर के विभिन्न हिस्सों में ओरो डेंटल की कई उप शाखाएं स्थापित की हैं, जो एक समान इलाज की सुविधा देती हैं।

डॉक्टर त्रिवेदी की पत्नी प्रियदर्शिनी त्रिवेदी पटना में ही एक बड़े अंतरराष्ट्रीय एनजीओ में पदाधिकारी हैं। श्रीमती त्रिवेदी पिछले 20 वर्ष से सामाजिक क्षेत्र में काम कर रही हैं। वे जुड़वां बच्चों अमोघ और आन्या की माँ हैं। उन्होंने

बताया कि अपने काम की वजह से ही दोनों करीब आए और बाद में यह नजदीकी शादी में बदल गई। डॉक्टर त्रिवेदी बेहद धार्मिक प्रवृत्ति के हैं और सभी धर्मों का सम्मान करते हैं। हालांकि वे भगवान गणेश के भक्त हैं। उनके विलिनिक में भगवान गणेश की कई मूर्तियां लगी हुई हैं जिनमें से कई तो बेहद दुर्लभ हैं और दूसरे देशों से मंगावाई गई हैं। वे कहते भी हैं कि मैं भगवान गणेश का सेवक हूँ और उनकी आकृतियों और मूर्तियों के संग्रह का मुझे बहुत शौक है।

जहां तक चिकित्सा पेशे का सवाल है तो डॉक्टर आशुतोष को बिहार में दंत चिकित्सा के क्षेत्र में कई सारी नई पहल करने के लिए जाना जाता है। वर्ष 1999 में उन्होंने बिहार में पहली बार डेंटल इंप्लांट कर इतिहास रचा। डेंटल इंप्लांटोलॉजी की बिहार में शुरूआत, डिजिटल एक्सरे, चलांत चिकित्सा यनिट, डेंटिस्ट्री एट होम जैसी पहलों ने ओरो डेंटल को पटना में लोगों का पसंदीदा डेंटल विलिनिक बना दिया है। डेंटिस्ट्री एट होम के लिए डॉक्टर आशुतोष ने डेंटल मोबाइल वैन शुरू किया जिसका उद्घाटन बिहार के उप मुख्यमंत्री सुशील मोदी ने किया।

हर कोई तरकी करे, इसके लिए डॉक्टर आशुतोष ने 'अपना बहता बिहार' का नारा दिया है। हालांकि उनका यह नारा सिर्फ नारा भर नहीं है। वे सच में यह चाहते हैं कि उनका बिहार तरकी करे। दरअसल दंत चिकित्सा के क्षेत्र में इतने सारे नए आयाम जोड़ने वाले डॉक्टर आशुतोष इस पेशे में कैरिअर बनाने के इच्छुक छात्रों के लिए प्रेरणास्रोत हैं। उन्होंने नए छात्रों के लिए भी कई पहल की हैं और इस दिशा में काम करते हुए लघु उद्योगों के कौशल विकास कार्यक्रमों और नालंदा ओपन यूनिवर्सिटी के साथ गठजोड़ में दो कोसर शुरू किए गए हैं—डेंटल असिस्टेंट और लेब असिस्टेंट। इसी के साथ ओरो डेंटल अध्ययन केंद्र और ऑन-जॉब प्रशिक्षण दोनों प्रदान करने वाला अध्ययन केंद्र बन गया है। दोनों कार्यक्रमों के लिए पाठ्यक्रम सामग्री डॉ. त्रिवेदी और उनकी टीम ने ही बनाई और बड़ी संख्या में छात्रों ने इसका लाभ उठाया।

एसआईएसआई और ओरो डेंटल के संयुक्त सहयोग के परिणामस्वरूप डेंचर फैक्रिकेशन के लिए कौशल विकास पाठ्यक्रम तैयार किए गए हैं। इन पाठ्यक्रमों के जरिये न सिर्फ युवाओं को नौकरी की तलाश करने के लिए कौशल प्रदान किया गया बल्कि राज्य के विभिन्न जिलों में स्थापित प्रयोगशालाओं से प्रशिक्षण भी दिलवाया गया। उन्होंने बिहार के एक हजार से ज्यादा बेरोजगारों को डेंटल फैक्रिकेशन यानी नकली दांत बनाने और लगाने की कला सिखाकर स्वरोजगार दिलाया है। डॉक्टर त्रिवेदी अब राज्य में नई और उन्नत तकनीक लाने के लिए दंत चिकित्सा और ओरल



स्वास्थ्य पर एक शोध संस्थान का सपना देख रहे हैं और उन्हें उम्मीद है कि यह सपना भी जल्द पूरा होगा।

चिकित्सा जगत और सामाजिक कार्यों में उनकी भागीदारी को देखकर विभिन्न संस्थाओं ने उन्हें समय-समय पर सम्मानित किया है। उन्हें बिहार एंटरप्रेन्योर अवार्ड, बिहार श्री अवार्ड और बेस्ट डेंटल सर्जन अवार्ड आदि से सम्मानित किया जा चुका है। उनके द्वारा शुरू किए गए ओरो विलिनिक को बेस्ट डेंटल विलिनिक अवार्ड मिल चुका है। डॉक्टर होने के अलावा डॉ. आशुतोष त्रिवेदी संगीत प्रेमी भी हैं। उन्होंने कराओके गायन शो की अवधारणा पर एक रियलिटी शो 'सारा बिहार गाएगा' की रचना, निर्माण और निर्देशन किया। इसका उद्देश्य अनसुनी संगीतमय आवाजों को एक मंच देना था, जिनकी प्रतिभा पर किसी का ध्यान नहीं गया होगा। कार्यक्रम के 52 एपिसोड को दूरदर्शन बिहार पर प्रसारित किया गया है।



डॉ. आशुतोष त्रिवेदी | 35



प्रोफेसर के.सी. सिन्हा

## गणित के महागुरु

बिहार पीढ़ियों से अपनी बौद्धिक संपदा के लिए प्रसिद्ध है। प्रोफेसर के.सी. सिन्हा एक ऐसा ही चमकता सितारा हैं जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में अपना अलग मुकाम बनाया है। प्रतियोगी परीक्षाओं, स्कूलों और कॉलेजों के छात्रों के लिए गणित की कई लोकप्रिय किताबों के लेखक प्रोफेसर सिन्हा पिछले तीन दशक से बिहार की चर्चित हस्ती बने हुए हैं। अपने शिक्षण एवं अपनी किताबों के जरिये वे न सिर्फ बिहार बल्कि देश के बाकी हिस्से में भी नई पीढ़ी के भविष्य को आकार देने में अहम भूमिका निभा रहे हैं।

पटना विश्वविद्यालय में कार्यरत प्रो. के सी सिन्हा वर्तमान में पटना साईंस कॉलेज के प्राचार्य और पटना विश्वविद्यालय के विज्ञान संकाय के डीन एवं पूर्व में पटना यूनिवर्सिटी में गणित विभाग के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। प्रो. सिन्हा शिक्षण, लेखन और भविष्य के शिक्षकों को तैयार करने में सक्रिय रूप से शामिल हैं। प्रो. सिन्हा पी.एच.डी के कई छात्रों को गाइड कर रहे हैं और उनके मार्गदर्शन में कई छात्रों ने पी.एच.डी की उपाधि हासिल की है। खुद प्रोफेसर सिन्हा कहते हैं, "मैं अपने काम का पूरा आनंद लेता हूँ और मैंने रिटायर होने की योजना कभी नहीं बनाई"। प्रोफेसर के.सी. सिन्हा का जन्म बिहार के एक छोटे से शहर आरा के एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। चार भाइयों और दो बहनों में से एक प्रोफेसर सिन्हा की

औपचारिक शिक्षा उनके 9 वर्ष पूरा करने के बाद शुरू हुई। उहोंने आरा के जिला स्कूल से अपनी स्कूली शिक्षा पूरी की। घर में पैसे की कमी को देखते हुए उहोंने आरेख में ही लग गया था कि इस स्थिति से पार पाने का एकमात्र तरीका शिक्षा ही है। वे पटना से उच्च शिक्षा लेना चाहते थे और इसके लिए उहोंने छात्रवृत्ति की जरूरत थी। इसके लिए उहोंने कड़ी मेहनत की। हाई स्कूल के बाद उहोंने पटना साइंस कॉलेज में प्रवेश लिया और बी.एससी (ऑर्स) और एम.एससी के इन्डियन में टॉपर रहते हुए गोल्ड मेडलिस्ट बने।

उहोंने शिक्षण में अपने करिअर की शुरुआत 1977 में एक लेक्चरर के रूप में आरा में एचडी जैन कॉलेज ज्वाइन करने के साथ की। इसके दो साल बाद उनकी शादी हो गई और 1983 में उहोंने पटना विश्वविद्यालय प्रवेश कर लिया, जहां पर एक शिक्षक और लेखक के रूप में उनकी स्थायी फैलने लगी। उनकी पहली पुस्तक 1982 में आई और कुछ वर्षों में ही यह पुस्तक आईआईटी-जैर्ड्स के उम्मीदवारों के बीच लोकप्रिय हो गई। इसी दौरान उहोंने अपनी पीएचडी की ओर 1990 का साल आते-आते उनकी लिखी कई किताबें छात्रों के बीच लोकप्रिय हो चुकी थीं। उनकी किताबों की लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उनके पुराने छात्रों में से एक, जो फिल्म-निर्माण के क्षेत्र में हैं, ने हाल में एक यू-ट्यूब वीडियो बनाया जिसमें बताया गया है कि उनकी किताबों ने छात्रों के जीवन को कितना प्रभावित किया है। स्वाभाविक रूप से ये वीडियो वायरल हो गया। बेहद विनम्र और मिलनसार चरित्र वाले के.सी.सिन्हा की सोशल पीडिया में भी जबरदस्त फैन फॉलोइंग है। उनके अधिकारिक फेसबुक पेज पर हजारों प्रशंसक हैं। उनकी सफलता का राज बदलावों के मुताबिक खुद को ढालने और उसके हिसाब से नीति देने की क्षमता में है। जब आईआईटी बोर्ड ने जैर्ड्स के लिए परीक्षाओं के पैटर्न को बदल दिया, तो एक साल के भीतर ही प्रोफेसर सिन्हा आईआईटी-जैर्ड्स में और एडवाइस के लिए अपनी अब तक की लोकप्रिय एडवाइजर पुस्तक शृंखला लेकर आए। अपने छात्रों की बदलती जरूरतों के अनुकूल प्रासादीक समझी मुहैया करने के कारण उहोंने खुद को प्रतिस्पर्धी माहौल में बनाए रखने में कामयाबी मिली।

प्रोफेसर सिन्हा टेक्नोलॉजी के भी फैन हैं वे वर्षोंकि इसे वे दूर-दराज के छात्रों तक पहुंच बनाने के माध्यम के रूप में देखते हैं। उनके तीनों बेटे अनुराग, अभिषेक और अंकित आईआईटी शिक्षित इंजीनियर और तकनीक के विशेषज्ञ हैं जिनके कारण प्रोफेसर सिन्हा की महत्वाकांक्षाओं को मदद मिली है। वे कहते हैं, '2019 में विश्वविद्यालय से प्रोफेसर के रूप में अपने पद से सेवानिवृत्त होने के बाद मेरे पास करने के लिए बड़ी योजनाएं हैं। मेरी 10 साल की कार्ययोजना में शिक्षा को स्स्टा, सुलभ और गुणवत्ता युक्त बनाना शामिल है।' एडवाइजर पब्लिशिंग ग्रुप, जो कि अब



तक पहुंचाया जा सके। प्रोफेसर सिन्हा युवा और ऊर्जावान उद्यमियों द्वारा स्थापित इन संगठनों का मार्गदर्शन भी करते हैं ताकि ये बिहार में शिक्षा को बढ़ावा दे सकें और रोजगार के नए अवसर भी पैदा कर सकें। संयोग से, एडवाइजर और urTutors.com के सभी संस्थापक बिहार से ही हैं। अपने विस्तृत अनुभव और सोच के जरिये प्रोफेसर सिन्हा जिन उद्यमियों का मार्गदर्शन कर रहे हैं, उनके बारे में वे कहते हैं, 'इन युवाओं के बारे में जो बात मुझे उत्साहित करती है वह ये है कि वे आगे बढ़कर चुनौती लेने के लिए तैयार हैं और अपने लक्ष्य को लेकर भी पूरी तरह स्पष्ट हैं। मैं इस बारे में

पूरी तरह आश्वस्त हूं कि गुणवत्ता और पारदर्शिता के जरिये शिक्षा में लोकतांत्रिक मूल्य लाने की उनकी सोच एवं अपने उत्पादों एवं सेवाओं जरिये शिक्षकों एवं छात्रों को एक साथ सशक्त बनाने का उनका प्रयत्न जरूर सफल होगा।' प्रोफेसर सिन्हा के पहले से ही चमकदार करिअर का अगला चरण भी दिलचस्प और अनुकरणीय रहने वाला है। वे जैसे-जैसे आगे बढ़ रहे हैं, समाज को उसका हिस्सा वापस करने की प्रेरणा उनमें बढ़ती जा रही है। गांव के बच्चों को मिलने वाले अवसरों में कमी, ऐसी ही एक बड़ी समस्या है और प्रोफेसर सिन्हा जिसका समाधान करना चाहते हैं। वे अपने कॉन्सेप्ट

वे इस समय का उपयोग अपने नाती-पोतों के साथ रिलैक्स करने के लिए करते हैं। अपनी इस पूरी यात्रा में उहोंने अपनी पत्नी का पूरा सहयोग मिला है जिन्होंने घर को बहुत अच्छी तरह संभाला और यह सुनिश्चित किया कि उनके पति का ध्यान अपने काम से न भटके। निश्चित रूप से शिक्षा जगत के एक चमकते सितारे के रूप में प्रोफेसर के.सी.सिन्हा ने सिर्फ अपने लिए ही नहीं बल्कि बिहार के लिए भी यश और सम्मान अर्जित किया है। उनकी उपलब्धियों को देखते हुए ही आउटलुक पत्रिका ने उहोंने 2018 में 'आइकन्स ऑफ बिहार' अवार्ड से सम्मानित किया।



## क्लेमेन्ट फ्लोरियन

# राष्ट्रपति पदक ने बढ़ाया मान

अक्टूबर 1955 में पश्चिम चम्पारण के बेतिया जिले के बानू छपरा गाँव के एक किसान परिवार में जन्मे क्लेमेन्ट फ्लोरियन का नाम बिहार अग्निशमन सेवा के क्षेत्र में बड़े सम्मान से लिया जाता है। अपने सेवा काल के दौरान दो बार राष्ट्रपति पदक से सम्मानित फ्लोरियन ने राज्य में आग लगने की कई बड़ी घटनाओं को न केवल नाकाम किया बल्कि सैकड़ों जान भी बचाई। राज्य अग्निशमन पदाधिकारी और बिहार अग्निशमन सेवा के निदेशक के तौर पर अपनी सेवाएं दे चुके फ्लोरियन के कार्यकाल में कुल 951 फायर मैन की नियुक्तियों पर सरकार ने अपनी सहमति दी और उन्होंने अपने कार्यकाल में 826 अग्निकों को बहाल कर उन्हें प्रशिक्षित किया। क्लेमेन्ट फ्लोरियन ने बिहार के 203 थानों में मिस्ट टेक्नोलॉजी अग्निशमन वाहन की न केवल प्रतिनियुक्ति की बल्कि उनके प्रयास से बिहार फायर सर्विस एक्ट को भी उनके सेवा काल में लागू किया गया। अक्टूबर 2015 को सरकारी सेवा से निवृत्त हो चुके फ्लोरियन ने 2017 में फ्लोरेंसिया फायर सेफ्टी सोल्यूशन नामक एक कंसल्टेंसी सर्विस की स्थापना की और आग लगने के कारणों और उससे बचाव से लोगों को जागरूक करने की मुहिम पर काम शुरू किया।

क्लेमेन्ट फ्लोरियन के पिता फ्लोरियन इलास ने कभी सोचा भी न था कि उनका पुत्र गाँव की गलियों से निकलकर एक दिन पूरे प्रदेश का नाम रोशन करेगा। 1972 में बेतिया के क्रिस्ट रजा हाई स्कूल से प्रथम श्रेणी में मैट्रिक की परीक्षा पास करने के उपरांत 1974 में फ्लोरियन ने महारानी जानकी झुंवर महाविद्यालय से आई एस सी की परीक्षा पास की और इसी कॉलेज से 1976 में बी. एस. सी. किया।

1977 में उन्होंने बिहार सरकार में अपना योगदान दिया और राज्य सरकार द्वारा उनकी पहली नियुक्ति बिहार फायर सर्विस में बैठौर फायर स्टेशन अफसर के रूप में कर दी गई। 1977 से 78 तक फ्लोरियन ने बिहार के गया जिले में रहकर फायर से सम्बंधित प्रशिक्षण हासिल किया और इसी साल उनकी पहली नियुक्ति कटिहार जिले में फायर स्टेशन अफसर के रूप में कर दी गई जहाँ से 1982 तक कार्यरत रहे।

बातचीत के क्रम में फ्लोरियन बताते हैं कि 1982 से 84 के बीच मेरी पोस्टिंग अविभाजित बिहार के हजारीबाग में थी जब दो समुदायों के बीच हुई हिंसक झड़प में आगजनी की बड़ी घटना हुई थी। पुलिस के साथ मिलकर इस घटना में स्थानीय फायर सर्विस के अधिकारियों और कर्मचारियों ने जिस प्रकार मेरे नेतृत्व में काम किया, उसकी मिसाल लोग आज भी देते हैं। 1985 में फ्लोरियन को हजारीबाग से पूर्णिया ट्रांसफर कर दिया गया जहाँ

वे 1988 तक कार्यरत रहे और 3 साल की सेवा के पश्चात राज्य सरकार द्वारा एक बार फिर उनका तबादला

जमशेदपुर कर दिया गया। पूर्णिया में अपनी पोस्टिंग के बीच 1987 में फ्लोरियन ने नागपुर स्थित नेशनल फायर



सर्विस कॉलेज से एसटीओ यानी फायर इंजीनियरिंग में डिप्लोमा भी हासिल किया।

दिनेश आनंद से हुई बातचीत में फ्लोरियन कहते हैं कि 3 मार्च, 1989 का वह दिन में कभी भूल नहीं सकता जब जमशेदपुर में टिस्को का स्थापना दिवस समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा था। टिस्को द्वारा निर्मित भव्य पंडाल में टिस्को के अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ बैठे हजारों लोग में सामने दिखाई जा रही झाकियों का आनंद ले रहे थे।

इसी बीच वहाँ बने विशाल पंडाल में आग लग गई और देखते ही देखते अफरातफरी मच गई और लोग बेतहाशा भागने लगे! मैं अपनी टीम के साथ अविलम्ब घटना स्थल पर पहुंचा और आग पक काबू पाने का प्रयास शुरू किया लेकिन तब तक इस घटना में 63 लोगों की मौत हो चुकी थीं और सैकड़ों लोग गंभीर रूप से घायल हो चुके थे। जानकार बताते हैं कि इस भयानक आगजनी के बीच फ्लोरियन और उनकी टीम ने जान की बाजी लगा दी और कड़ी मेहनत एवं अथक प्रयास के बाद वे आग पर काबू पाने में न केवल सफल रहे बल्कि दर्जनों जानें भी बचाई। इस खबर को देश के करीब-करीब सभी समाचारों पत्रों ने प्रमुखता से प्रकाशित किया। ऐसे में फ्लोरियन अपने बेहतर कामों के जरिए अब लोगों के सामने थे।



फ्लोरियन 1993 तक जमशेदपुर में कार्यरत रहे और इसी साल उनका तबादला मुजफ्फरपुर कर दिया गया। फ्लोरियन कहते हैं कि आगलनी की सबसे अधिक घटनाएं मुजफ्फरपुर जिले में ही होती हैं, ऐसे में फायर सर्विस के कार्यालय को सर्वाधिक फोन कॉल भी इसी जिले से आते हैं।

6 जुलाई, 1996 को मुजफ्फरपुर के सरैयांगज में घटी आगजनी की एक घटना को याद कर फ्लोरियन बताते हैं कि सरैयांगज की थोक दवाओं की मंडी में लगी भयावह आग की चपेट में 6-7 दुकानें आ गई थीं। सूचना मिलते ही मैं दमकल की गाड़ियों और अपनी टीम के साथ घटना स्थल पर पहुंचा। पूरे इलाके में अफरातफरी मची थी और दुकानों में रखी ईंधर की बोतलों के कारण आग लगातार फैलती जा रही थी। हमने आग बुझाने के क्रम में देखा कि एक दुकान में पांच लोग बेसुध पड़े थे, मैंने अपने सहयोगी फायरमेन सुधीर की सहायता से उन पांचों को बाहर निकालने में सफलता हासिल की लेकिन इस प्रयास में मेरे सहयोगी सुधीर बुरी तरह झुलस गए।

इसी साल मुजफ्फरपुर-समस्तीपुर रोड पर एक बड़ी घटना घटी जब जिले के एक सर्वोच्च अधिकारी द्वारा फ्लोरियन को व्यक्तिगत तौर पर घटना की जानकारी लेने भेजा गया। घटनास्थल पर पुलिस भी मौजूद थी लेकिन फ्लोरियन ने अपने तजुर्बे के आधार पर जाना कि यहाँ आगजनी की कोई घटना नहीं हुई है बल्कि केमिकल का रिसाव बड़े पैमाने पर हो रहा है।

फ्लोरियन विज्ञान के छात्र रहे हैं लिहाजा वहाँ फ्रैंकल रही गंध के आधार पर उन्हें यह समझते देर न लगी कि किसी टैक्सी के दुर्घटनाग्रस्त होने के कारण उस इलाके में एचसीएल यानी हाइड्रोक्लोरिक एसिड का रिसाव हो रहा है। हालात की गंभीरता को देखते हुए फ्लोरियन ने आधी रात के ब्रह्म स्थानीय लोगों की सहायता से पास के गाँव को खाली करवाया और इस प्रकार सैकड़ों लोगों की जान बचाई। लाल्बे कार्यकाल के दौरान क्लोमेन्ट फ्लोरियन की सराहनीय सेवाओं को देखते हुए 1995 में उन्हें राष्ट्रपति पदक से सम्मानित किया गया।

6 जुलाई, 1996 के दिन फ्लोरियन को सहायक राज्य अग्निशमन पदाधिकारी यानी असिस्टेंट स्टेट फायर ऑफिसर के रूप में पदोन्ति मिली और वे स्थाई तौर पर पटना सचिवालय स्थित कार्यालय में बैठने लगे। इस दौर में बिहार राज्य अग्निशमन के लिए तैयार कई बड़ी योजाओं पर काम करते हुए फ्लोरियन ने राज्य अग्निशमन पदाधिकारियों को सहयोग किया, साथ ही पटना में हुए कई भयावह अग्निकांडों के अग्निशमन का न केवल सफल

नेतृत्व किया बल्कि विधि व्यवस्था बनाए रखने में स्थानीय पुलिस को सहयोग भी किया। विभाग के कुछ सेवानिवृत्त अधिकारी कहते हैं कि आगलनी की सबसे अधिक घटनाएं मुजफ्फरपुर जिले में ही होती हैं, ऐसे में फायर सर्विस के कार्यालय को सर्वाधिक फोन कॉल भी इसी जिले से आते हैं।

फ्लोरियन ने समय-समय पर फायरमैन और स्टेशन ऑफिसर्स को प्रशिक्षण देने के अलावा बाढ़, भूकंप आदि के अतिरिक्त आपदा प्रबंधन से संबंधित जागरूकता अधियान से जुड़कर स्थानीय नागरिकों को आगलगी के कारणों और उनसे बचाव से संबंधित मॉक ड्रिल भी आयोजित करवाया। साथ ही राज्य के कई शरणों में फायर से संबंधित कई सेमीनार भी सफलतापूर्वक आयोजित किये और इस अवधि में वे फायर के निदेशक प्रमुख के विशेष कार्य पदाधिकारी के तौर भी कार्यरत रहे।

2007 में फ्लोरियन सहायक प्रमंडलीय अग्निशमन पदाधिकारी के पद पर प्रोन्नत हुए और 2012 में एक बार फिर उन्हें प्रमंडलीय अग्निशमन पदाधिकारी के रूप में प्रोन्नति मिली।

इस बीच पटना स्थित सेंट जेविर्य रस्कूल के पूर्व छात्र और इलाहाबाद एग्रीकल्चर डीप्टी यूनिवर्सिटी से स्नातक फ्लोरियन के पुत्र मोहित कुमार सिंविल सर्विसेस की तैयारियों के दौरान एक रेल दुर्घटना के शिकार हो गए और उन्हें अपने दोनों पैर गंवाने पड़े। जयगुर फुट के सहारे चलने वाले मोहित खुद को दिव्यांग नहीं समझते। यही वजह है कि वे न केवल कार और बाइक खुद चलाते हैं बल्कि अपने पिता से किसी प्रकार की अधिक सहायता लिए बगैर अपने दम पर अपने निजी कोर्चिंग सेंटर का संचालन कर रहे हैं।

फ्लोरियन के अनुकरणीय कामों को देखते हुए राज्य सरकार द्वारा उन्हें 2013 में प्रोन्नति देकर राज्य अग्निशमन पदाधिकारी के रूप में कार्यभार सौंपा गया और इस अवधि में उनके किये गए कामों को लोग आज भी याद करते हैं। जानकारों का कहना है कि 1990 के बाद से फायरमैन की कोई बहाली न होने के कारण विभाग इन कर्मचारियों की भारी कमी से जूझ रहा था, फ्लोरियन ने इस कमी को गंभीरता से लिया और राज्य सरकार का ध्यान इस ओर खींचा। कुछ ही समय बाद सरकार ने इस मामले को गंभीरता से लेते हुए 951 फायरमेनों की नियुक्ति के लिए फ्लोरियन को अधिकृत किया। अपने कार्यकाल के अंतिम दौर तक फ्लोरियन द्वारा 826 अग्निकांडों की बहाली कर उनके प्रशिक्षण की व्यवस्था भी सुनिश्चित की गई। उनके



साथ सचिवालय स्थित सरकारी कार्यालय से लोदीपुर स्थित नवनिर्मित कार्यालय से अपना कार्य आरम्भ किया।

क्लेमेन्ट फ्लोरियन 31 अक्टूबर, 2015 को बिहार अग्निशमन सेवा के निदेशक पद से सेवानिवृत्त तो हो गए लेकिन अपने बेहतर कामों की बढ़ौलत दो बार राष्ट्रपति पदक हासिल कर चुके इस शख्स की छवि आज भी लोगों के लिए प्रेरणास्रोत है। आज फ्लोरियन का फायर सेप्टी सोल्यूशन के निदेशक के तौर पर काम कर रहे फ्लोरियन कहते हैं कि घर, ऑफिस, कार आदि में फायर से सम्बंधित सभी उपकरणों का होना केवल सरकार की नहीं बल्कि हमारी भी जिम्मेवारी बनती है ताकि वक्त आने पर हम अपने जानों माल की हिफाजत कर सकें।

2015 में फ्लोरियन को बिहार अग्निशमन सेवा के निदेशक के तौर पर प्रोन्नति मिली और फ्लोरियन ने अपनी टीम के





पद्मश्री श्रीमती गोदावरी दत्त

## मिथिला पेंटिंग को पहुंचाया दुनिया के कोने-कोने में

मिथिला पेंटिंग की जब भी बात होती है गोदावरी दत्त का नाम खुद-ब-खुद सामने आ जाता है। कला की दुनिया में उनका नाम सम्मान से लिया जाता है। उन्हें बिहार के बेहद पिछड़े मिथिलांचल इलाके में दीवारों पर उकेरी जानी वाली पेंटिंग को वहां से निकाल पूरी दुनिया में पहुंचाने का श्रेय जाता है। उनके द्वारा प्रशिक्षित हजारों लोग आज चित्रकला की इस विधा के जरिये जीविकोपार्जन कर रहे हैं। वयोवृद्ध गोदावरी जी 89 साल की उम्र में भी इतनी सक्रिय हैं कि पटना स्थित बिहार म्यूजियम में कोहबर शीम पर पिछले दिनों उन्होंने एक विशाल पेंटिंग बनाई है जिसे देखने लोग दूर-दूर से आते हैं। 2018 में पद्मश्री से सम्मानित गोदावरी दत्त के नाम 1973 से लेकर 1979 तक लगातार सात साल ॲल इंडिया हैंडीक्राफ्ट एक्जीबिशन अवार्ड से सम्मानित होने का रिकार्ड है। इसके अलावा उन्हें दो बार देश के राष्ट्रपति के हाथों भी सम्मान हासिल हुआ है। 1980 में तत्कालीन राष्ट्रपति नीलम संजीव रेण्डी के हाथों उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार मिला जबकि 2006 में राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल द्वारा शिल्प गुरु सम्मान से सम्मानित की गई। राज्य तथा देश के स्तर पर उन्हें मिले अन्य पुरस्कारों, सम्मानों की तो कोई गिनती ही नहीं है।



गोदावरी दत्त का जन्म 7 नवंबर, 1930 को बिहार के दरभंगा जिले के बहादुपुर गांव में हुआ था। दरभंगा जिला बिहार के मिथिलांचल में आता है जहाँ शादी-ब्याह तथा अन्य शुभ कार्यों में दीवारों तथा फर्श पर देवी-देवताओं, प्राकृतिक नजारे, चाद-तों, पेड़-पौधों, मछलियों आदि की चित्रकारी का पारंपरिक रिवाज है। यहाँ की महिलाएं इस कार्य में दक्ष होती हैं। इसके अलावा भी घर को सजाने के लिए दीवारों पर चित्रकारी की जाती है। आमतौर पर इसे मिथिला पेंटिंग या मधुबनी पेंटिंग कहा जाता है। ऐसे ही एक मैथिल कायस्थ परिवार में जन्मीं गोदावरी दत्त की औपचारिक शिक्षा सिर्फ 9वीं कक्ष तक हुई। उनकी मां सुभद्रा देवी ने उन्हें बचपन से ही मिथिला पेंटिंग का प्रशिक्षण देना आरंभ कर दिया था। उन्होंने पूरी लगन से अपनी बेटी को इस कला की बारीयां सिखाई। जल्द ही गोदावरी की उंगलियां ब्रश पकड़ने में सिद्धहस्त हो गईं और ये पेंटिंग उनका जुनून बन गईं और वे इसके जरिये कुछ कर्माई भी करने लग गईं।

18 वर्ष की उम्र में मधुबनी जिले के रांटी गांव के उपेंद्र दत्त जी से गोदावरी की शादी हुई। शादी के बाद उन्हें तब जीवन की कड़वी सच्चाई का सामना करना पड़ा। जब चित्रकारी को लेकर पति से उनकी अनबन होने लगी। आखिरकार पति उन्हें छोड़कर चले गए। गोदावरी दत्त तब एक बेटे की मां



थीं। वे इस संकट से घबराई नहीं और उन्होंने मां की सिखाई कला से ही जीविका करने का फैसला कर लिया। एक बार इस कला में अपना कैरियर बनाने का फैसला करने के बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। उन्होंने सरकार तथा अन्य संस्थाओं द्वारा आयोजित कार्यक्रमों, प्रदर्शनों में सक्रिय हिस्सेदारी शुरू की जिससे उन्हें लोगों के बीच पहचान बनाने में मदद मिली। उनका संघर्ष रंग लाया और जल्द ही मिथिला चित्रकारी की इस कला में उनका नाम प्रसिद्ध हो गया। लोग उनका काम देखने आने लगे। गोदावरी ने देश-विदेश में कई प्रदर्शनियों में हिस्सा लिया। पटना, मुंबई, कोलकाता, रांची, त्रिवेंद्रम, चंडीगढ़, सूरजकुंड, दिल्ली हाट आदि में आयोजित कई प्रदर्शनियों में उनकी पेंटिंग्स को भरपूर सराहना

मिली। उन्होंने मुंबई की प्रतिष्ठित जहांगीर आर्ट गैलरी में अपनी सोलो पेंटिंग एकजीविशन भी लगाई। विदेश में जापान के उड़िके स्थित मिथिला म्यूजियम में 1990 से 1994 तक छह बार और हर बार छह महीने के लिए उन्होंने अपनी प्रदर्शनी लगाई। हाँ बार इनकी पेंटिंग्स को भारी सराहना मिली और वहाँ भी उन्होंने कई लोगों को यह कला सिखाई। इसके अलावा उन्होंने 1985 में जर्मनी में इंडिया प्रमोशन इवेंट में भागीदारी की। पेरिस के डेकोटिन आर्ट म्यूजियम में भी उनकी पेंटिंग्स प्रदर्शित की गई हैं। पर उन्हें कई अन्य आमंत्रण स्वास्थ्य एवं पारिवारिक कारणों से छोड़ने पड़े।

उन्होंने इस कला को दूर-दूर तक फैलाने के लिए

मिथिला कला विकास समिति के नाम से एक गैर सरकारी संगठन बनाया और लोग उससे जुड़ने लगे। इससे लोगों को इस कला में प्रवीन होने में मदद मिली। गोदावरी दत्त कहती हैं कि मिथिला में रहने के दौरान उन्होंने खासकर घर में रहने वाली बच्चियों और महिलाओं को यह कला सिखाई ताकि वे भी इसके जरिये धरोपार्जन कर सकें और स्वावलंबी बन सकें। उन्होंने इस पारंपरिक कला को बढ़ावा देने के लिए सीसीआरटी और डीसी हैंडीक्राफ्ट की मदद से सैकड़ों ग्रामीण और कस्बाई युवाओं तथा देश-दुनिया में लगने वाली प्रदर्शनियों के दौरान सैकड़ों विदेशियों को प्रशिक्षण दिया। उनसे सीखने वाले कई लोग बाद में अलग-अलग सरकारी संस्थाओं द्वारा सम्मानित किए और आज

देश-दुनिया में उनका भी नाम फैला है। मिथिला पेंटिंग्स को बाजारो-मुख बनाने के लिए गोदावरी दत्त ने इसे साड़ी, चादरों, वाल हैंगिंग आदि पर भी बनाना शुरू किया। ये कलाकृतियां अब ट्रैडेसेटर बन गई हैं और ये दुनिया में सराहना मिली हैं। गोदावरी दत्त दरभंगा के ब्रह्मानंद कला महाविद्यालय में 1981 से 1989 तक लेक्चरर रहीं। अभी 89 साल की उम्र में भी वे पेंटिंग्स बनाने में जुटी हैं। उन्होंने हाल ही में बिहार म्यूजियम पट्टा के लिए काहवर थीम पर एक विशाल कैनवास पेंटिंग बनाई है। उनके जीवन पर बनी एक डाक्यूमेंट्री फिल्म 'कलाकार नमस्कार' 1988 में दिल्ली दूरदर्शन पर प्रदर्शित हुई। 2014 में बिहार सरकार ने उन्हें लाइफ टाइम अचौकमेंट अवार्ड से सम्मानित किया।

गोदावरी दत्त ने अपने छह दशक लंबे चित्रकारी कैरियर में कई समान हासिल किए हैं। इनमें 1973 में बिहार स्टेट मास्टर क्राप्ट पर्सन अवार्ड, चेतना समिति, पटना द्वारा 1975 में ताप्रपत्र, बिहार राज्य हथकरघा एवं हस्तशिल्प कॉरपोरेशन द्वारा 1981 में दिया गया प्रमाणपत्र, बिहार के शिक्षा विभाग के तहत बिहार राष्ट्रभाषा परिषद द्वारा अनुदान एवं मान्यता, दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा 1983 में पुरस्कार, कर्ण कायस्थ महासभा दरभंगा द्वारा 1986 में पुरस्कार एवं मान्यता, 1992 में बिहार सरकार एवं मानव संसाधन विकास परिषद द्वारा प्रमाणपत्र, बिहार सरकार के युवा एवं संस्कृति विभाग तथा कोलकाता के पूर्वी क्षेत्र संस्कृति केंद्र द्वारा आयोजित आर्ट कैंप में प्रमाणपत्र, कर्ण सेवा द्वारा 2012 में कुलभूषण सम्मान, जनजागरण समिति द्वारा 2013 में विद्यापति चित्रकला रत्न सम्मान, ग्राम विकास परिषद द्वारा 2013 में दिया गया मिथिला विभूति विद्यापति सम्मान शामिल हैं।

उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर अखिल भारतीय हस्तशिल्प प्रदर्शनी में कई एक्सीलेंस सर्टिफिकेट मिले हैं। 1980 में उन्हें देश के राष्ट्रपति नीलम संजीव रेडी के हाथों राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। जबकि 1996 में उत्तर प्रदेश के पर्यावरण विभाग द्वारा आयोजित लखनऊ महोत्सव के दौरान एक्सीलेंस सर्टिफिकेट दिया गया। 1998 में आंत्र प्रदेश के विशाखापत्तनम में आयोजित क्राप्ट बाजार में प्रमाणपत्र, 1998 में राजस्थान के नितौड़गढ़ में आयोजित मीरा महोत्सव एवं मेवाड़ महोत्सव में प्रमाणपत्र और मुंबई में आयोजित कर्ण गोष्ठी में सराहना पत्र दिया गया। 2001 में गणतंत्र दिवस परेड में भागीदारी पर रक्षा मंत्रालय पद दिया गया तो 2006 में उन्हें राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल के हाथों शिल्प गुरु सम्मान मिला। गोदावरी दत्त लगातार अपने गांव से जुड़ी रही हैं, उन्होंने गांव की दूटी सड़क को मधुबनी के जिलाधिकारी से मिलकर पक्का कराया, गांव की लाइब्रेरी को पुर्जीवित किया और सरकारी मध्य विद्यालय में कमरे बनवाए। इसके अलावा अब उन्होंने 49,000 से अधिक लोगों को मिथिला पेंटिंग कला सिखाई है।





डॉ. गौतम मोदी

## चिकित्सा जगत में खुद से बनाई पहचान

विरासत में मिली अर्श की गरिमा को बनाए रखने का डॉ. गौतम के व्यक्तिगत जीवन का सफर, फर्श से आरम्भ होकर एक नई ऊंचाई यानी अर्श तक जाता है। उनका मानना है कि सफल माता-पिता की सन्तान होने में सुविधाओं के साथ-साथ ज़िम्मेदारियाँ तथा सफलता के स्थापित उच्च मापदण्ड भी होते हैं। ऐसे में अपनी एक अलग पहचान बनाना किसी फर्श से अर्श तक के सफर से कम नहीं।

डॉ. गौतम मोदी आज के दौर में बिहार व झारखण्ड राज्यों के एकमात्र एलजी विशेषज्ञ हैं और एलजी की जांच व उपचार में उनकी दक्षता अकाउट है। भारत के जन-माने एलजी विशेषज्ञ स्व. डॉ. रामकृष्ण मोदी और प्रसिद्ध प्रसूति एवं श्वी रोग विशेषज्ञ डॉ. प्रमिला मोदी के पुत्र डॉ. गौतम मोदी कहते हैं कि उनके पिता न केवल बिहार के बल्कि भारत के प्रारंभिक एलजी चिकित्सकों में रहे हैं। डॉ. प्रमिला कहती हैं कि गौतम के पिता की यह इच्छा थी कि उनका पुत्र एलजी के इलाज को उनके बाद भी जारी रखे। इसी भावना से प्रेरित हो उनके सपनों को साकार करने हेतु डॉ. गौतम ने शिक्षा पूर्ण होने के पश्चात 1998 से 2016 में पिता के निधन तक उनके संग कार्य किया व प्रशिक्षण लिया। इसी क्रम में उन्होंने प्रदेश

के चिकित्सा जगत में अपनी एक अलग पहचान बनाते हुए राष्ट्रीय स्तर पर एक अच्छे एलजी विशेषज्ञ के रूप में ख्याति प्राप्त की व सामाजिक तीर पर योग्य उत्तराधिकारी के रूप में पहचान बनाई।

पटना के संत जेवियर्स स्कूल के छात्र रहे गौतम मोदी ने कर्नाटक के गुलबर्गा स्थित एम.आर.मेडिकल कॉलेज से एम.बी.बी.एस की डिग्री हासिल की तत्पश्चात दिल्ली के प्रसिद्ध बल्लभ भाई पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट से एलजी में विशेष प्रशिक्षण हासिल किया। लम्बे ब्रह्म तक डॉ. गौतम पटना के कुर्जी स्थित होली फैमिली हॉस्पिटल में केजुअल्टी मेडिकल ऑफिसर के पद पर कार्यरत रहे। तत्पश्चात साल 2005 से पूर्णरूपेण अपने पिता के साथ एलजी चिकित्सक



की प्रैंटिस में लग गए। आज उनके पिता जी द्वारा 1978 में स्थापित और संचालित मोदी एलर्जी क्लीनिक उसी कार्यकुशलता से डॉ. गौतम मोदी की देखरेख व झारखण्ड राज्य के एकमात्र एलर्जी जांच एवं उपचार केंद्र के रूप में कार्यरत है।

डॉ. गौतम को न सिर्फ हिंदी व अंग्रेजी बल्कि उर्दू, कन्नड़ और तेलुगु भाषा की भी अच्छी जानकारी है तथा नाट्य साहित्य से इनका गहरा लगाव है। डॉ. गौतम मोदी की संगीत में आरप्स से ही गहरी रुचि रही और यही वजह है स्कूल के दिनों से ही कांगो बांगो, ड्रम्स जैसे वाद्ययंत्र बजाने में उनकी दिलचस्पी रहती थी। इसी क्रम में उन्होंने 10 वर्षों तक पटना स्थित भारतीय नृत्य कला पर्दिर में कर्नटक शास्त्रीय गायन की शिक्षा ली और समय-

समय पर आयोजित कई कार्यक्रमों में हिस्सा लिया। डॉ. गौतम मोदी की पत्नी और बिहार की जानी-मानी प्रसूति एवं खीरे रोग विशेषज्ञ डॉ. चारु मोदी कहती हैं कि डॉ. गौतम की एलर्जी के प्रति कार्य निया अनुसरणीय है। खासकर, श्वास सम्बंधी एलर्जी व दवाओं से होनी वाली एलर्जी पर उनका विशेष ध्यान रहता है। अपने जीवन में डॉ. गौतम को अनेक पुरकार व सम्मान प्राप्त हुए, जिनमें साल 2014 में चिकित्सा के क्षेत्र में किए गए उत्कृष्ट कार्यों को ध्यान में रखते हुए 'आई नेक्स्ट यंग एचीवर अवार्ड', जिसे बाद में 2017 में डॉ. चारु मोदी ने भी अपने नाम किया और तत्पश्चात वर्ष 2018 में आईकॉन्स ऑफ बिहार अवार्ड प्रमुख है।

एलर्जी को परिभाषित करते हुए डॉ. गौतम मोदी कहते हैं कि

शरीर की संवेदनशीलता जब किसी भी वजह से बढ़ जाती है या सहनशक्ति में कमी आने लगती है तो उसे हम एलर्जी कहते हैं। एलर्जी कोई बीमारी नहीं बल्कि डिसऑर्डर यानी विकार है जिसमें शरीर की प्रतिरोधक क्षमता में कमी आ जाती है। साथ ही, एलर्जी के प्रकोप से शरीर में कई अन्य बीमारियां उत्पन्न होने लगती हैं। चिकित्सा जगत में दो प्रकार से एलर्जी को वर्णित किया गया है, जिनमें पहली, श्वास से सम्बंधित विकार यानी सांस की तकलीफ सर्वी, खांसी, दमा आदि और दूसरी चर्म रोग और आंखों की एलर्जी हैं। डॉ. मोदी कहते हैं कि जीवनशैली में परिवर्तन, प्रदूषण और अचानक जलवायु परिवर्तन यानी ज्यादा ठंड और ज्यादा गर्म का एहसास एवं दवाओं का रिएक्शन एलर्जी की वजह बनता जा रहा है। साथ ही, दमे की बीमारी और खाद्य पदार्थों से भी लोगों को



एलर्जी हो रही है। डॉ. गौतम मोदी इंडियन कॉलेज ऑफ एलर्जी एंड एप्लाइड इम्यूनोलॉजी के स्थाई सदस्य एवं पूर्वी क्षेत्र के कन्वेनर के रूप में कार्यरत हैं। वे समय-समय पर विभिन्न माध्यमों/ कार्यक्रमों से एलर्जी के विषय में जानकारी का प्रचार-प्रसार करते रहते हैं।

जानकारों का कहना है कि डॉ. चारु और गौतम लाल्हे समय से समाज सेवा में सक्रिय हैं। डॉ. गौतम जकात में यकीन करते हैं और ऐसे में जरूरतमंद लोगों के बीच ये अपनी आमदानी का एक हिस्सा मुक्त दवाओं और निःशुल्क चिकित्सा के माध्यम से तो खर्च करते ही हैं। साथ ही, समय-समय पर मुक्त चिकित्सा शिविर द्वारा निर्जन रोगियों की सेवा का भी योगदान देते हैं। उनकी पत्नी डॉ. चारु मोदी भी पोस्स के माध्यम से दिन-रात गरीबों की सेवा और उन्हें जागरूक करने में लागी है। पोस्स की कई सदस्याएं कहती हैं कि डॉ. चारु पोस्स में बतौर पब्लिक अवेयरनेस कमिटी चेयरपर्सन सभी मेम्बर्स को साथ लेकर जन-जागरूकता अभियान में मुक्त स्वास्थ्य शिविरों के आयोजन द्वारा सुरक्षित मात्रुत्व को बढ़ावा देती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन यानी डब्लू.एच.ओ. के मुताबिक इम्यूनोथेरेपी पूरी दुनिया में एलर्जी के इलाज के एकमात्र विधि है जिसमें एलर्जी पेंदा करने वाले अलग-अलग पदार्थों के अर्क से जांच की जाती है और इस पद्धति से इलाज करने वाला 1978 में स्थापित व 20,000 संतुष्ट रोगियों द्वारा प्रमाणित मोदी एलर्जी विलिनिक बिहार-झारखण्ड का पहला और एकमात्र क्लिनिक है।



**डॉ. ( कैप्टन ) दिलीप कुमार सिन्हा**



रविन्द्र नाथ टैगोर पर डॉ. दिलीप कुमार  
सिन्हा द्वारा लिखित पुस्तक

## रीढ़ की हड्डी के इलाज को दिया नया आयाम

डॉक्टर ( कैप्टन ) दिलीप कुमार सिन्हा बिहार में ऑर्थोपेडिक सर्जरी की दुनिया का जाना- माना नाम हैं। 73 साल के डॉक्टर सिन्हा 1972 से स्पाइनल कॉर्ड इंजुरी ( एससीआई ) का इलाज कर रहे हैं और पटना मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के ऑर्थोपेडिक विभाग से रिटायर हुए हैं। एससीआई रीढ़ के हड्डी की सबसे खतरनाक चोट है, जिससे कोई भी ग्रसित हो सकता है

इससे चोट के नीचे वाले हिस्से की न केवल हाथ और पैर का शक्ति और महसूस करने का संवेदना खत्म होती है, बल्कि मल या मूत्र उत्सर्जन पर नियंत्रण भी समाप्त हो जाता है। हमारे देश में हर साल रीढ़ की हड्डी में चोट से पीड़ितों की संख्या, कम से कम 20 हजार नए रोगियों की दर से बहु रही है। एससीआई को लेकर लोगों में जागरूकता फैलाने में जुटे डॉक्टर दिलीप सिन्हा एससीआई मरीजों की देखरेख से जुड़े 'पटना मॉडल' के जनक हैं। इस मॉडल को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने दुनिया के विकासशील देशों के लिए कोर मॉडल के रूप में मान्यता दी है।

देश भर में एससीआई का इलाज करने वाले पूरे देश में गिने चुने अस्पताल हैं मार पटना के होप अस्पताल का इनमें अपना अलग स्थान है। डॉक्टर सिन्हा का यह डीम प्रोजेक्ट है जो मरीजों की जेब पर भारी पड़े बिना उन्हें स्वास्थ्य का वरदान दे रहा है। यह देश का एससीआई इलाज का इकलौता अस्पताल है जो निजी तौर पर चलाया जा रहा है। अन्य सभी अस्पताल या तो कॉर्पोरेट घरानों या फिर किसी न किसी दूसरा संचालित हैं। एससीआई के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए उन्हें इंडियन स्पाइनल इंजीरी सेंटर, नई दिल्ली में एक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान 2015 में लाइफटाइम अचौक्षिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 2018 में आउटलुक पत्रिका ने उन्हें 'आइकन्स ऑफ बिहार' अवार्ड से सम्मानित किया।

तीन हजार साल ईसा पूर्व के सबसे पुराने लिखित मेडिकल रिकॉर्ड, मिस्र के एडविन सिथ पेपिरस में, एससीआई को 'लाइलाज बीयारी' के रूप में घोषित किया गया था, क्योंकि इसके मरीज न तो ठीक हो पाते हैं और न ही लंबे समय तक जीवित रह पाते हैं। प्रोफेसर सर लुडविग 'पोपा' गट्टमैन ने दूसरे विश्व युद्ध की शुरुआत से ठीक पहले नाजी जर्मनी से भाग कर इंग्लैण्ड में शरण ली थी। गट्टमैन ने पहली बार ये साबित किया कि इन रोगियों को भी जीने का अधिकार है और समाज से उन्हें जोड़ने की आवश्यकता है, ताकि चोट के बाद वे मुकम्मल जीवन जी सकें। इन रोगियों के प्रति उनके समर्पण के कारण उन्हें 'पोपा' कहा जाता था, जो दो शब्दों पोप और पापा का एक संयोजन है।

भारत में एससीआई के उपचार का विकास भी विश्वास और बदलाव की कहानी है। डॉ. मैरी वर्गीज ने सीएमसी वेल्लोर में रीढ़ की हड्डी के रोगियों के लिए पहली पुनर्जीव इकाई स्थापित की थी। सबसे बड़ी बात यह कि डॉ. वर्गीज दुर्घटना के कारण खुद कमर से नीचे लकवास्त थीं। ऐसी ही कहानी है मेजर एच.पी.एस. अहलूवालिया की, जिन्होंने नई दिल्ली के वसंत कुंज में भारतीय स्पाइनल इंजीरी सेंटर की शुरुआत की। मेजर अहलूवालिया 29 मई, 1965 को माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाले पहले सेना अधिकारी थे। सिंतंबर





1965 में, जब भारत-पाकिस्तान युद्ध शुरू हुआ, तो उन्हें युद्ध के लिए बुलाया लिया गया था। उनकी यूनिट लाहौर से पहुंच गई। जब उनकी यूनिट ताशकंद संधि के तहत लाहौर से लौट रही थी, तो मेजर अहलूवालिया दुश्मन के स्नाइपर की गोलियों की चपेट में आ गए, जिससे वह गद्दन के नीचे पूरी तरह से लकवाप्रस्त हो गए।

लंदन के स्टोक मैंडेविले अस्पताल में अपने इलाज के दौरान, उन्होंने भारत में एक ऐसा ही अस्पताल स्थापित करने का निर्णय लिया। लंदन से लौटने के बाद उन्होंने अपने दोस्तों की मदद से एक ट्रस्ट की स्थापना की। 1993 में इस ट्रस्ट के बैर तले इंडिया स्पाइनल इंजरी सेंटर शुरू किया गया और अहलूवालिया को चेयरमैन नामित किया गया। आज यह विश्व प्रसिद्ध सेंटर है। बात करें डॉ. दिलीप कुमार सिन्हा की तो उन्होंने रांची के प्रसिद्ध रांजूर मेडिकल कॉलेज से एम.बी.बी.एस की पढ़ाई पूरी की और 1971 में हुई भारत-पाकिस्तान की लाईड के दौरान भारतीय सेना के मेडिकल कोर में कैप्टन के पद पर योगदान किया।

कुछ ही समय बाद उनकी 2 माउंटेन डिवीजन युनिट की तैनाती तकालीन ईस्ट पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) में कर दी गई। युद्ध की समसि पर सेना द्वारा डॉ.सिन्हा

का ट्रांसफर पुणे के किर्की स्थित आर्मी पैराप्लेजिक रिहेब सेन्टर में कर दिया गया जो स्पाइनल इंजरी के मरीजों के लिए सेना का पहला अस्पताल था।

आर्मी में रहकर मरीजों की सेवा के दौरान डॉ.सिन्हा इस अस्पताल के संस्थापक एवर मार्शल चहल के संपर्क में आए और चहल ने डॉ.सिन्हा को स्पाइनल कॉड इंजरी से संबंधित मरीजों के इलाज की पूरी जिम्मेवारी सौंप दी। इन लकवा ग्रस्त मरीजों का इलाज करते-करते डॉ. सिन्हा का उनके प्रति इनका लगाव बढ़ता गया और जिसने उनके भविष्य की जीवन की दिशा तय कर दी।

भारतीय सेना की नौकरी के बाद डॉ. दिलीप अपने गृहराज्य बिहार लौट गए और उन्होंने ऑर्थोपेडिक्स में एम.एस और पी.एच.डी के अलावा प्लास्टिक सर्जरी में एम.सी.एच की डिग्री भी हासिल की। इनी विशेषज्ञता हासिल करने के साथ वे पटना मेडिकल कॉलेज में कार्यरत रहे। यहाँ पर डॉ.दिलीप कुमार सिन्हा स्पाइनल कॉड इंजरी से पीड़ित मरीजों के सीधे संपर्क में आए और रोगियों का इलाज शुरू किया।

डॉ.सिन्हा कहते हैं कि तब पी.एम.सी.एच में गरीब मरीजों

की संख्या काफी अधिक थी मगर कर्मचारियों और संसाधनों की भारी कमी थी। ऐसे में इलाज के दौरान मरीजों के मूत्रमार्ग में संक्रमण के अलावा अन्य कई प्रकार के संक्रमण का भी खतरा रहता था। इस कारण मृत्युदर अपने चरम पर थी। इसे देखते हुए डॉ.दिलीप सिन्हा ने अपने सहयोगियों और पी.जी. के कई छात्रों के सहयोग से एस.सी.आई मरीजों को ध्यान में रखकर 'पटना मॉडल' की शुरूआत की।

डॉ.(कैप्टन) दिलीप कुमार सिन्हा कहते हैं कि पी.एम.सी.एच में प्रशिक्षित कर्मचारियों की कमी को देखते हुए हमने 'पटना मॉडल' के तहत समस्या के समाधान की तानी और प्रयोग के तौरपर मरीज के परिजनों को बुनियादी प्रशिक्षण देना आरंभ किया ताकि जरूरत पड़ने पर वे अपने और दूसरे मरीजों की भी देखभाल कर सकें और प्रशिक्षित नर्स की कमी की भरपाई हो सके। इस क्रम में परिजनों को यह भी सिखाया गया कि यदि किसी दुर्घटना में किसी व्यक्ति की गीढ़ में गहरी चोट लगी हो तो उसे कैसे अस्पताल तक सुरक्षित पहुंचाया जा सकता है। साथ ही इलाज के उपरान्त अस्पताल से छुट्टी मिलने पर कैसे उसकी देखभाल की जानी चाहिए। यह प्रयोग उस समय बिलकुल नया था और पहले कभी किसी ने इस प्रकार का सफल प्रयोग नहीं किया था।

उस समय के कई डॉक्टरों को याद है कि कैसे इच्छाकृत वाले डॉ. सिन्हा ने 'पटना मॉडल' की बुनियाद रखी और मानव संसाधन की समस्या का प्रभावी हल तलाशा। डॉ. सिन्हा ने अपने पीजी छात्र डॉ. अरुण कुमार को पटना मॉडल का थीसिस विषय देकर इस मॉडल को शुरूआत की। बाद में डॉ. सुदीप कुमार और डॉ. रवि खंडेलवाल ने इस मॉडल को और परिचृक्त किया। डॉ. (कैप्टन) सिन्हा कहते हैं, "संसाधनों की कमी से जूझते के लिए मैंने एक प्रयोग किया और ये कामयाब रहा।" 'पटना मॉडल' के सफल प्रयोग के कारण डॉक्टर सिन्हा को पूरी दुनिया से सराहना मिल चुकी है। डॉ.सिन्हा के इस मॉडल को पूरी दुनिया में सराहा गया और रेड क्रॉस सोसाइटी और डब्ल्यू.एच.ओ. द्वारा समय-समय पर डॉ.दिलीप सिन्हा को विश्व के कई देशों में संबंधित प्रशिक्षण के लिए आमंत्रित किया जाने लगा और इनकी ख्याति हिन्दुस्तान की सीमा पार कर गई। डॉ. सिन्हा को उनके पटना मॉडल के बारे में व्याख्यान देने के लिए लंदन के स्टेक मैडविले अस्पताल, अमेरिका में बोस्टन, ऑस्ट्रेलिया में पर्थ, जापान में कोबे और बांग्लादेश, नेपाल, थाईलैंड, मलेशिया और वियतनाम जैसे देशों में आमंत्रित किया गया।

पीएमसीएच में नौकरी के दौरान ही डॉक्टर सिन्हा ने देखा कि स्पाइनल कॉड की चोट के सभी मरीजों का इलाज वहाँ नहीं हो पाता है। कई मरीजों को इसके इलाज के लिए बिहार से बाहर जाना पड़ता। गरीब मरीजों की आर्थिक हालत इसके कारण दयनीय हो जाती है क्योंकि स्पाइनल कॉड की चोट का इलाज बहेत महंगा साबित होता है। इसी को देखते हुए डॉक्टर सिन्हा ने पटना में होप अस्पताल की शुरूआत की जो कि पूरी तरह सिन्हा परिवार द्वारा संचालित निजी अस्पताल है। डॉ.दिलीप सिन्हा की पत्नी डॉ.कृष्णा सिन्हा खुद फिजियोलॉजी की प्रोफेसर हैं। उन्होंने बताया कि उनके पति और बच्चे लंबे समय से यह महसूस कर रहे थे कि बिहार में एक अच्छे एस्सीआई अस्पताल की जरूरत है जो कम खर्च में मरीजों का इलाज कर सके। इसे ध्यान में रखकर सिन्हा परिवार ने 1998 में पटना के मीठापुर में होप हॉस्पिटल की शुरूआत की।

वियतनाम में इंटरनेशनल कॉफ्रेंस ऑफ स्पाइनल कॉड इंजरी के दौरान पटना मॉडल को पेश करते डॉ (कैप्टन) दिलीप कुमार सिन्हा



सासाहिक बिहार हेराल्ड का फिर से प्रकाशन शुरू कराया। उन्हें बिहार राज्य अल्पसंख्यक आयोग के उपाध्यक्ष के रूप में नामित किया जा चुका है और वे बिहार बांग्ला अकादमी के अध्यक्ष रह चुके हैं। डॉक्टर सिन्हा रविंद्रनाथ ठाकुर पर हाल टैगोर के सह-लेखक भी हैं। वर्तमान में, साधारण सा दिखने



ડી.એન.સિંહ

## શૂન્ય સે શિરવર તક

જનવરી 1964 કો ગયા જિલે કે ખિંજર સરાય થાના ક્ષેત્ર કે સૂરજું બીઘા ગાંવ મેં જન્મે દેવેંદ્ર નારાયણ સિંહ કો આજ પૂરા પ્રદેશ પ્રસિદ્ધ બિલ્ડર ડી.એન.સિંહ કે નામ સે જાનતા હૈ! સર્વોદય કંસ્ટ્રક્શન કે પ્રબંધ નિદેશક ડી.એન.સિંહ આજ સફળતા કે જિસ મુકામ પર ખંડે હું ઉસસે પૂરા પ્રદેશ તો વાકિફ હૈ લેકિન જિન મુશ્કિલ હાલાતોં સે ગુજરકર સિંહ ને યહ શોહરત હાસિલ કી હૈ, વો અદ્ભુત હૈ ઔર બેમિસાલ ભી



ઉનકે પરિવાર કે સદસ્ય બતાતે હું કી 1988 મેં દેવેંદ્ર કા વિવાહ અનુપમા કશણ્ય કે સાથ હુંઓ ઔર પતિ પત્ની અંગે કી પઢાઈ કે લિએ ગય સે પટના આ ગાએ। ઇસી સાલ અનુપમા ને પટના વિશ્વવિદ્યાલય મેં પાલિક ઎ડમિનિસ્ટ્રેશન મેં દાખિલા લિયા તો દેવેંદ્ર ને પટના ઇંજીનિયરિંગ કાલેજ કે છાત્ર કે રૂપ મેં એમ ટેક કી પઢાઈ આરથ્ય કી। યેચાંની છાત્ર કે રૂપ મેં પહેંચાન રહ્યેને વાલે દેવેંદ્ર કો યું જી સી કી તરફ સે 1800 રૂપએ પ્રતિમાહ સ્ટાઇપેંડ કે તૌર પર મિલતે રહે ઔર ઇસી છોટી સી રકમ સે પતિ-પત્ની કા ગુજરાત હોતા। પુનાને દિનોં કો વાદ કર ડી.એન.સિંહ કહતે હું કી ઉનિનોં હંગ પટના કે કેકિઝાના મેં બૈદ્યનાથ પ્રસાદ કે મકાન મેં 700 રૂપએ પ્રતિમાહ દેકર કિરાયે પર રહા કરતે થે। હમારે પાસ કિસી પ્રકાર કી કોઈ સવારી ભી નહીં થી, એસે મેં હમ દોનોં પતિ-પત્ની કેકડાગ સ્થિત અપને કિરાયે કે ઘર સે પ્રતિદિન પેંડલ વિશ્વવિદ્યાલય આતે જાતે રહે, ગયા સે જબ હમ પટના આયે થે તો સાથ મેં એક સ્ટોન્ચ ભી લેકર આયે થે લેકિન કુછ હી દિનોં બાદ અનુપમા કે પિતા ને હમેં એક ગેંસ ચૂંઠા દિલવાયા। આર્થિક હાલાત બેહદ ખરાબ હો ચલે થે, એસે મેંને કુછ કામ કરને કા ફેસ્લતા લિયા ઔર 1989 મેં મુંબે એક કંસ્ટ્રક્શન કંપની દ્વારા બોરિંગ રોડ સ્થિત કૃષ્ણા અપાર્ટમેન્ટ મેં ઇંટ સપ્લાઈ કા કામ મિલા, કુછ હી વકત બાદ કંપની કી ઇસી સાઇટ પર મુંબે બાલૂ સપ્લાઈ કા ભી કામ મિલા ઔર હાલાત પહ્લે સે બેહતર હુએ। નિર્માણાધીન અપાર્ટમેન્ટ પર અને જાને કે ક્રમ મેં મૈને કંસ્ટ્રક્શન કે કામોં કો બારીકી સે સમજા ઔર અને વાલે કુછ હી સાલોં મેં સર્વોદય કંસ્ટ્રક્શન કે નામ સે અપની કંપની કી શુંભુત કી। દેવેંદ્ર કહતે હું કી બી.આઈ.ટી મેસરા મેં પઢાઈ કે દૌરાન ઉન્કે એક મિત્ર રિપુંજય પ્રસાદ સિંહ ને પટના મેં અપની 5000 વર્ગફીટ ખાલી જમીન કા મુજસે જિક કિયા થા, બગેર દેરી કીએ મૈને રિપુંજય સે સંપર્ક કિયા ઔર ઉસી જમીન સે ગોશ અપાર્ટમેન્ટ કે રૂપ મેં મૈંને





શુભારથ કિયા। સિંહ કી ફ્રોડ દ્વારા જન્મની સેજી પાસ કેવેન્ટર્સ મિલક શેકી બિહાર, ઝારખંડ ઔર ઉત્તર પ્રદેશ કી ન કેવલ માસ્ટર ફેન્ચાઇઝી હૈ બલિક વેપટના મેં એલ બી ડલ્યુ રેસ્ટરાં કી દો શાખાઓને અલાવા સમી સુવિધાઓને યુક્ત હોટલ સર્વોદય કા સફલતા પૂર્વે સંવાલન ભી કર રહે હોય!

બિહાર કે ગયા જિલ્લે મેં જન્મે દેવેંદ્ર નારાયણ સિંહ કી જિન્દગી કા સફર કાફી શાનદાર રહો હૈ સ્વ. બાસુદેવ પ્રસાદ સિંહ ઔર સેન્બા દેવી કે પુત્ર દેવેંદ્ર કી પ્રારંભિક શિક્ષા અપને ચાચા ડૉ. અરવિન્દ કુમાર ઔર ફૂફો મદન લાલ કી દેખેરખ મેં પટના કે રાજેંદ્ર નગર સ્થિત રાજેંદ્ર પબ્લિક સ્કૂલ સે હુંડી। કુછ હી વક્ત બાદ દેવેંદ્ર વાપસ ગાંબ લૌટ ગએ ઔર પિત્ર કી દેખેરખ મેં આગે કી પઢાઈ શરૂ કી। શરૂઆતી કર્ડ મહીનોનું તક દેવેંદ્ર સ્કૂલ નહીં ગએ ઔર ગાંબ કે શિક્ષક રામવચન પ્રસાદ કે અધીન શિક્ષા ગ્રહણ કી। સંયુક્ત પરિવાર મેં પણ-બઢે દેવેંદ્ર કે પિતા ને અપને પુત્રોને અલાવા ગાંબ કે બચ્ચોને કે લિએ ભી નિશ્ચલ પઢાઈ કી વ્યવસ્થા કર રહી થી। કુછ હી વક્ત બાદ દેવેંદ્ર કે પિતા ને પાંચવંચી કક્ષા મેં ઇનકા નામાંકન એકંગરસરાય કે નજદીક એકંગરડીહ સ્થિત કુંડવાપર કે પાસ સીનિયર બેસિક સ્કૂલ મેં કરવાયા જહાં ખફરૈલ સે બની છત કે નીચે દેવેંદ્ર ને અપને સહપાઠીઓને કે સથ કુછ વક્ત બિતાયા। 6 માહ કી પઢાઈ કે ઉપરાન્ત દેવેંદ્ર નેતરહાટ કી પરીક્ષા મેં પાસ ન હો સકે એસે મેં ઉન્હેં વાપસ ઘર લૌટના પડ્યા।



1974 મેં દેવેંદ્ર કે ચાચા ડૉ. અરવિન્દ કુમાર કા દાખિલા ગયા સ્થિત ગયા મેડિકલ કॉલેજ મેં હુા ઔર દેવેંદ્ર અપને ચાચા કે સથ આગે કી પઢાઈ કે લિએ ગયા આ ગાએ ઔર ગયા કે એક સ્થાનીય સ્કૂલ મેં ઇનકા નામાંકન હુા ઔર ઇસી વિદ્યાલય સે દેવેંદ્ર ને પ્રથમ શ્રેણી મેં 1978 મેં મેટ્રિક કી પરીક્ષા પાસ કી। દેવેંદ્ર કે પિતા મેરીન ઇંજીનિયર થે લેનિન ઉછોને ખુદ સે અપના વાપસ શરૂ કિયા થા એસે મેં દેવેંદ્ર ખાત્રી પડે સમય મેં પિતા કારોબાર મેં ઉનકા સહયોગ કરરો। દેવેંદ્ર કહતે હૈ કે ઉનકે પિતા ગાંબ મેં સસ્થોં સે તેલ નિકલને, ધાન કૂટને કે કારોબાર શરૂ કિયા લેનિન પિતા કી તબિયત ટાંક ન રહેને કે અલાવા આટા ચક્કી કા ભી વ્યવસાય કરતે થે, સથ હી ઉનકા ટ્રાંસોર્ટ કા ભી કારોબાર થા। 1978 મેં દેવેંદ્ર ને ગયા કે પ્રસિદ્ધ અનુગૃહ મેમોરિયલ કॉલેજ મેં દાખિલા લિયા ઔર 1980 મેં આઈ.એસ.સી કી પરીક્ષા પાસ કી। 1981 મેં દેવેંદ્ર ઇંજીનિયરિંગ કી પરીક્ષા મેં બૈટે લેનિન પાસ નહીં હુએ ઔર ઇસી સાલ ઇન્હોને બી.એ.સ.સી મેં દાખિલા લિયા। સાલ 1982 મેં દેવેંદ્ર ને પુનઃ ઇંજીનિયરિંગ કી પરીક્ષા દી ઔર બી.આઈ.ટી મેસરા સે ઉત્તીર્ણ હુએ ઔંયાં સે સાલ 1986 મેં ઇંજીનિયરિંગ કી પરીક્ષા ભી પાસ કી! ઇ.એન.સિંહ કહતે હૈ કે 1986 મેં ગાંય મેં ડૉ. જગન્નાથ મિશ્રા કી સરકાર થી આ ગાંય કી ફાલ્યુ નદી પર અમર્દં દયાલ સિંહ કે ભસીન કંસ્ટ્રક્શન દ્વારા પુલ કા નિર્માણ કરવાયા જા રહ્યા થા। એસે મેં મુજબ ઇન્કા સે જુડ્કર મેટલ સટ્ટાઈ કરને કા

અવસર મિલા। કુછ હી વક્ત બાદ મેને વહ કામ છોડ દિયા ઔર 1987 મેં વૈનિક વેતનભોગી કે તૌર પર કર્નીય અભિયંતા કે રૂપ મેં ગયા રોજનલ ડેવલપમેંટ અર્થાત્રી મેં અપના યોગદાન દિયા! દેવેંદ્ર કહતે હૈ મેને કે જી.આર.ડી.એ. ઔર ભસીન કંસ્ટ્રક્શન કંપની સે જો કુછ કમાયા ઉસે અપને ગયા સ્થિત ઘર કે નિર્માણ મેં લગા દિયા।

1988 મેં દેવેંદ્ર કે પિતા ને એકંગરસરાય સે ઈંટ ભદ્રે કા કારોબાર શરૂ કિયા લેનિન પિતા કી તબિયત ટાંક ન રહેને કે કારણ દેવેંદ્ર સિંહ કો યહ કારોબાર કુછ વક્ત કે લિએ સંભાળના પડ્યા। જૂન 1988 મેં દેવેંદ્ર ઔર અનુપમા કી શારી હુંડી ઔર સંઘર્ષ કી હું શુઅતા હુંડી। અનુપમા કે પિતા સ્બ. સંચાર પ્રસાદ અપને જ્ઞાનને મેં નવાદા કે પ્રસિદ્ધ ઉદ્યોગપતિ હુા કરતે થે। અનુપમા વનરથ્યાલી વિદ્યાપીઠ સે સ્નાતક થી ઔર શારી કે બાદ આગ કી પઢાઈ જારી રહ૊ના ચાહતી થી। એસે મેં દોનોં પાત્ર પણી 1988 મેં પટના આ ગાએ ઔર દેવેંદ્ર સિંહ ને પણી કા નામાંકન પટા વિશ્વવિદ્યાલય મેં કરવાયા ઔર ખુદ ભી ઇંજીનિયરિંગ કॉલેજ (એપ.ટેક) મેં દાખિલા લિયા! યુ.જી.સી દ્વારા દેવેંદ્ર કો સ્ટાઇપંડ કે તૌર પર મિલ હે 1800 રૂપએ ઘર કે કિરાયે મેં ખર્ચ હો જાતે ઔર બચે સ્થપનોં સે મહીને તક ઘર કા ખર્ચ ચલતા!

एકંગરસરાય મેં પિતા કે ઈંટ ભદ્રે કે ભાડ્યોને સુર્દુર કર ચુકે સિંહ 1989 મેં અપને ભાઈ સે એક ઈંટ કા સેંપલ ગિપટ કે રૂપ મેં પૈક કરવા આશિયાન બિલ્ડર્સ કે માલિક સે મિલને પહુંચે। ગિપટ કે રૂપ મેં ઈંટ કી પૈકિંગ ને બિલ્ડર કો પ્રભાવિત કિયા ઔર ઉસી દિન સિંહ કો એક ટ્રક ઈંટ સટ્ટાઈ કા આર્ડર મિલા। બિહાર વિદ્યાસભા કે સભાપતિ અવારેસ નારાયણ સિંહ ઉન દિનોં આશિયાન યુપ કે પાર્ટનર હુા કરતે થે, સિંહ કો અવારેસ નારાયણ સિંહ કો પૂરા સહયોગ મિલા ઔર દેવેંદ્ર કો ઇલવર સે બાલુ લાકર રાત કે સમય કૃષ્ણ અપાર્ટમેંટ કે



નિર્માણધીન સાઇટ પર ગિરાને લગે। અપાર્ટમેંટ મેં નિરંતર આને જાને કે દૌરાન સિંહ કો અપાર્ટમેંટ નિર્માણ કી તકનીકી જાનકારી મિલી ઔર ઉછોને બિલ્ડર બનને કા ફેસલા લિયા। ઇથર 1986 મેં દેવેંદ્ર કે પિતા મસ્કુલર એલ્યુપી નામક બીમારી કી ચેપેટ મેં આ ગાએ ઔર લમ્બે ચલે ઇલાજ કે બાદ દિસ્મબર 1991 મેં ઉનકા નિધન હો ગયા। 1990 કે આસ પાસ ડી.એન. સિંહ ને સર્વોદય કંસ્ટ્રક્શન કે નામ સે એક કંપની કા ગતન કિયા ઔર એક કોસ્ટ કી જાનારી પદ્ધતિ 5000 વર્ગ ફ્લાન જર્મીન પર શ્રી ગણેશ અપાર્ટમેંટ કી બુનિયાદ રહ્યી હૈ। દેવેંદ્ર ને ગ્રાઉંડ કે સાથ આ પાર્ટનર કો નિકાલ કરાતું થા। ડી.એન.સિંહ દ્વારા બનાએ ગાએ કુછ પ્રમુખ પ્રોજેક્ટોને જીપારાણી ટાવર, બાસુદેવા કર્મશિયલ કાપ્લેક્સ, ઓમ નિર્મલાય અપાર્ટમેંટ, શ્રી જગદીશ અપાર્ટમેંટ, ગયા સર્કિટ હાઉસ ને નિકટ બિંગ બાજાર, નિર્માણધીન સર્વોદય સિટી અને સિલ્વિલ કોસ્ટ આદિ પ્રમુખ હોયાં। ડી.એન.સિંહ કી માને તો પટના કે ડાક બંગલો રોડે કે પાસ બૈંક ઔફ બડ્ડાદા એ.ટી.એમ કે નિકટ ઇનકા ખાલી પડી 11 કંડે જર્મીન પર શીઓપ્રી હી એક મૌલ કા નિર્માણ શરૂ કિયા જાએના।

અપની પણી અનુપમા કશયપ સે જુડે એક સવાલ પર ડી.એન. સિંહ કહતે હૈ કે અનુપમા ન કેવલ સંગીત કી અચ્છી જાનકારો મેં હૈ બલિક



**डॉ. नरेंद्र प्रसाद**

## साइकिल से पद्मश्री तक का सफर

डॉक्टर नरेंद्र प्रसाद बिहार के ख्यातिप्राप्त सर्जन हैं। साठ के दशक में साइकिल की सवारी कर दूर-दराज के गरीब मरीजों का इलाज करने वाले डॉ. प्रसाद को 2004 में उनकी सेवाओं के लिए देश में डॉक्टरों को दिया जाने वाला सबसे बड़ा सम्मान डॉक्टर बी.सी. राय अवार्ड दिया गया तो देश में नागरिक क्षेत्र में दिए जाने वाले चौथे सबसे बड़े सम्मान पद्मश्री से 2015 में सम्मानित किया गया है। कभी पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण उनके दादा को मेडिकल की पढ़ाई बीच में छोड़नी पड़ी थी। इस बात को ध्यान में रख डॉ. नरेंद्र के पिता मेदनी प्रसाद ने अपने पुत्र को उसके दादा का सपना पूरा करने का संकल्प दिलाया

पटना में डॉ. नरेंद्र प्रसाद के द्वारा स्थापित आलोक नर्सिंग होम एवं अनुपमा अस्पताल अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस एक प्रसिद्ध चिकित्सा केंद्र है जिसे अब उनके कुबिल सर्जन पुत्र डॉक्टर आलोक अभिजीत संभाल रहे हैं।

बिहारशीरीफ से चार किलोमीटर दूर तिड़ी गांव में आजादी से 14 साल पहले 1933 के 8 सितंबर को जन्मे नरेंद्र प्रसाद अपने पिता मेदनी प्रसाद और माता उमा देवी की सात संतानों में दूसरे नंबर पर थे उनके दादा राजकुमार लाल गांव के जर्मीदारों में शुमार होते थे, वे डॉक्टर बनना चाहते थे और इसकी पढ़ाई के लिए उन्होंने पटना के टेम्पल मेडिकल स्कूल (वर्तमान में पटना मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल, पीएमसीएच) में दाखिला लिया था। हालांकि वे मेडिकल की पढ़ाई पूरी नहीं कर पाए और जर्मीदारी के कामों के बोझ के कारण पढ़ाई अधूरी छोड़ दी, पर जैसे-जैसे परिवार बड़ा होता गया, जर्मीदारी छोटी होती गई। स्थिति यह हो गई कि राजकुमार लाल के बड़े बेटे मेदनी प्रसाद को अपना परिवार चलाने के लिए पहले कोर्ट में कलकत्ता की नौकरी करनी पड़ी जहां तरक्की पाकर वे मुहर्रिं और फिर पेशेकार के पद तक पहुंचे। बाद में उन्होंने यह नौकरी छोड़ दी और सरकारी शिक्षक बन गए।



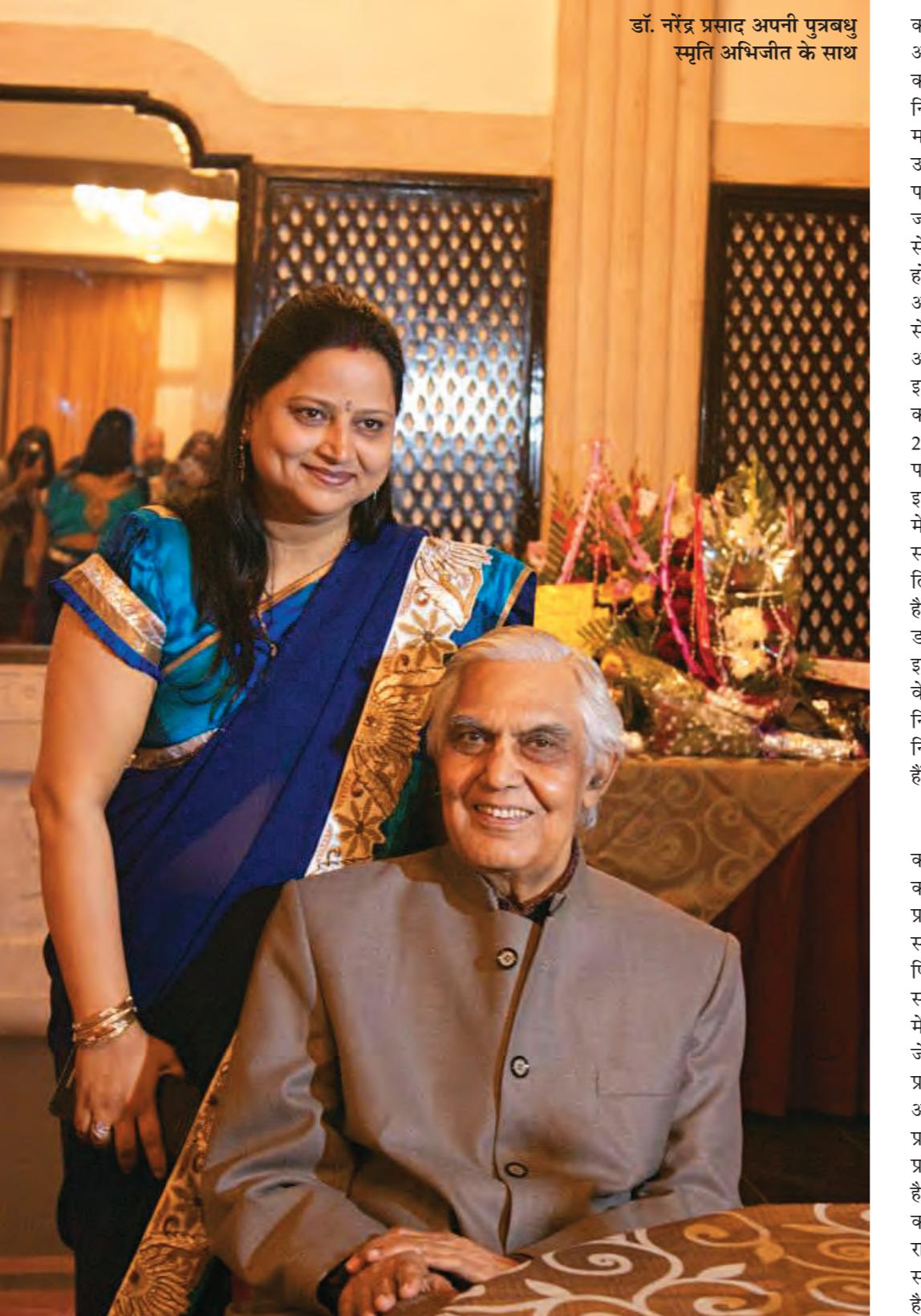
उन्होंने अपने सभी बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाई मगर उनमें भी नरेंद्र प्रसाद बेहद मेधावी थे। मेदनी प्रसाद चाहते थे कि नरेंद्र मेडिकल की पढ़ाई करे और उनके पिता का जो सपना असूया रह गया है, उसे उनका यह बेटा पूरा करे।

नरेंद्र ने भी इस सपने को अपना सपना बना लिया। उनकी सातवीं तक की शिक्षा औंदा मिडल स्कूल में हुई, आठवीं से आगे की पढ़ाई उन्होंने राजा राममोहन राय सेमिनरी स्कूल पटना से की, स्कूल से कॉलेज तक की उनकी पूरी पढ़ाई फुल फ्री शिप के तहत हुई। 1956 में उन्होंने पटना मेडिकल कॉलेज अस्पताल से एमबीबीएस की डिग्री हासिल कर दादा का सपना पूरा किया। हालांकि यह साल उनके लिए एक बुरी खबर लेकर भी आया जब उनके पिता का किडनी की बीमारी के कारण निधन हो गया।

एमबीबीएस करने के एक साल बाद उनका चयन बिहार स्वास्थ्य सेवा संवर्ग में हुआ और 1958 में उन्हें सहरसा जिले के थुम्हा स्वास्थ्य केंद्र पर बतार सिविल असिस्टेंट सर्जन नियुक्त किया गया। यहां वे 1960 तक कार्यरत रहे। वे एम.एस. औं एफआरसीएस करना चाहते थे मगर आर्थिक हालत गड़बड़ थी, यह देखकर उन्होंने निजी प्रैक्टिस शुरू की। थुम्हा केंद्र से जो समय बचता था, उसमें वे साइकिल से मीलों दूर तक जाकर मरीजों का इलाज करते थे। इस दौरान उन्होंने पीएमसीएच से एम.एस. की पढ़ाई भी आरंभ कर दी थी। 1959 में उन्हें एम.एस. की डिग्री मिली, इसके बाद अपने सपने को पूरा करने वे 1961 में पानी के जहाज से इंग्लैंड गए और एक साल बाद 1962 में रोयल कॉलेज ऑफ सर्जन, इंग्लैंड से उन्होंने एफआरसीएस किया।

इस दौरान पैसे की कमी के कारण उन्होंने मेनचेस्टर के बरी जनरल अस्पताल में नौकरी की। उन्होंने कुछ दिन कीसी हाईपोरी अस्पताल, लंदन में सर्जिकल रजिस्ट्रार का पद भी संभाला मगर आविरकार 30 सितंबर, 1962 को वे मात्रभूमि लौट आए। यहां आकर उन्होंने पीएमसीएच में नौकरी के साथ-साथ निजी प्रैक्टिस आरंभ की, पटना के मखनिया कुओं इलाके में 40 रुपये मासिक पर एक कमरा लेकर उन्होंने अपना क्लिनिक शुरू किया। तब बिजली की खारब हालत के कारण उन्होंने टार्च की रोशनी में कई बड़े ऑपेशन किए। 1962 से लेकर 1992 तक उन्होंने पीएमसीएच में रेजिंटें सर्जिकल ऑफिसर के पद से नौकरी की शुरुआत कर सर्जरी विभाग के अध्यक्ष पद तक को सुशोभित किया।

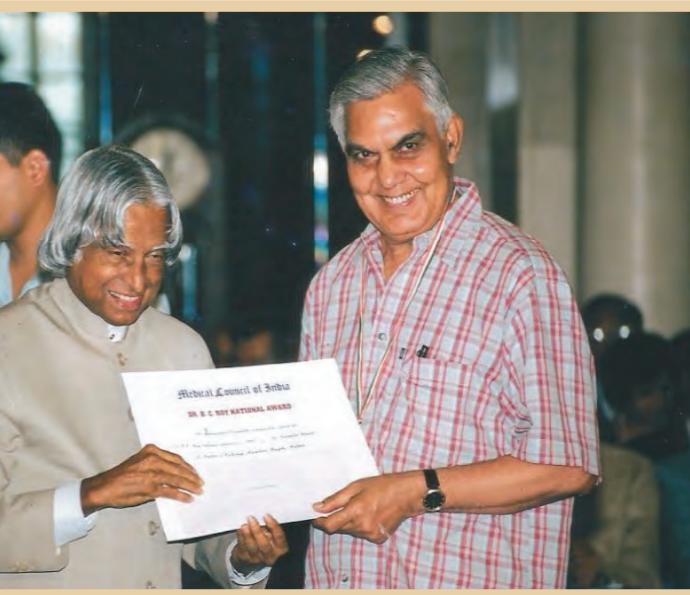
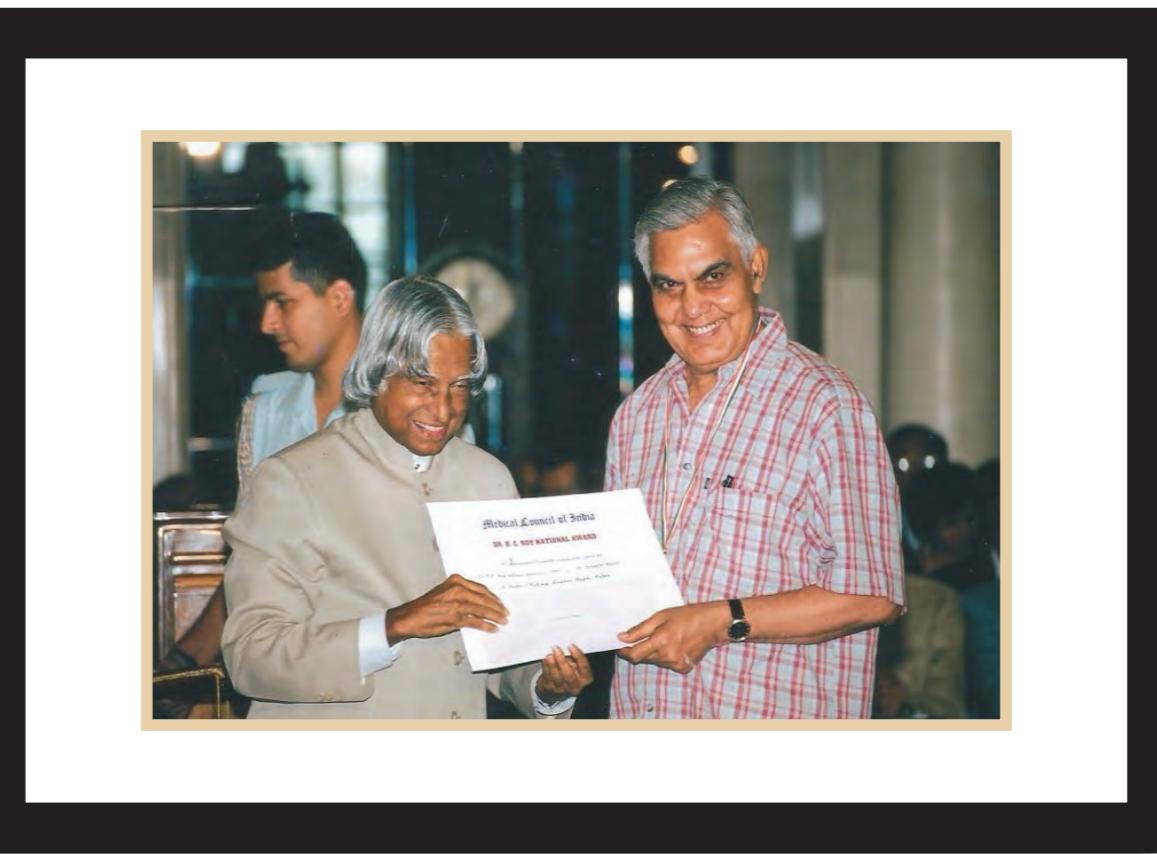
डॉक्टर नरेंद्र प्रसाद के जीवन का दूसरा अध्याय 1963 में शुरू हुआ जब लीला प्रसाद से उनका विवाह संपन्न हुआ। पत्नी इंटर पास थीं और डॉक्टर नरेंद्र ने उन्हें आगे पढ़ने के लिए प्रेरित किया। लीला जी ने मगध महिला कॉलेज से बीए ऑनर्स किया। इसी बीच 15 जून, 1964



डॉ. नरेंद्र प्रसाद अपनी पुत्रबधु  
स्मृति अभिजीत के साथ

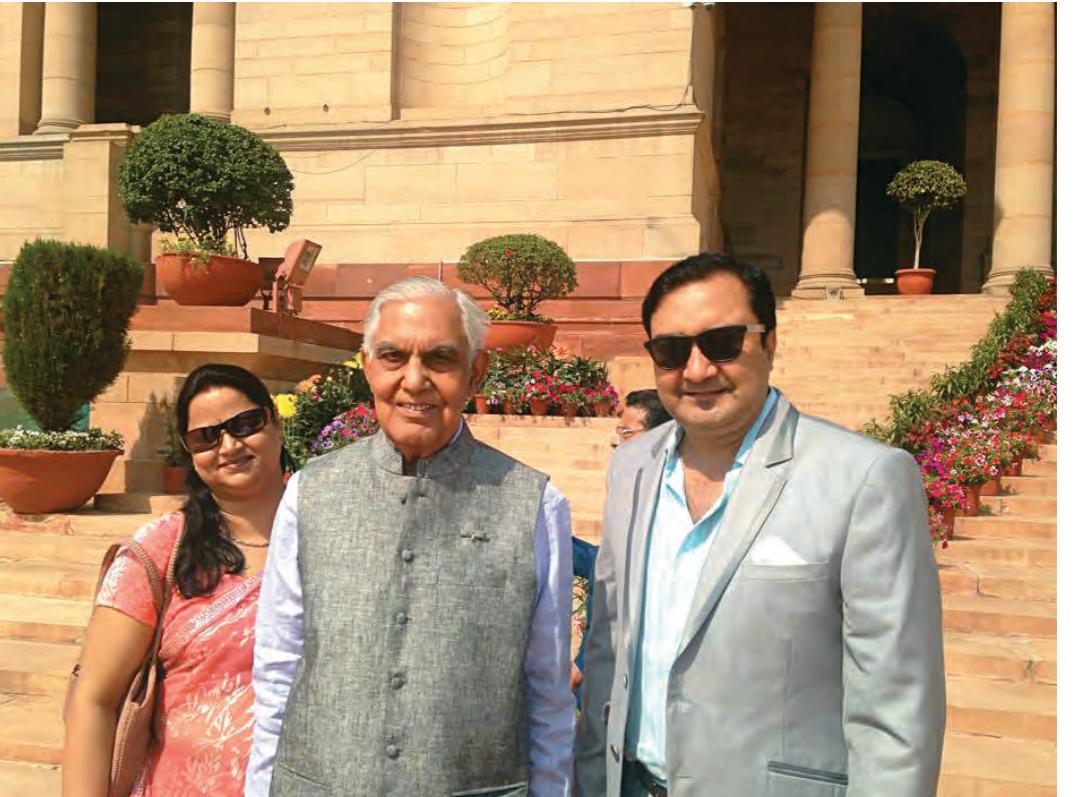
को इस दंपति के घर बेटे आलोक अभिजीत का जन्म हुआ और इसके तीन वर्ष बाद 18 जून, 1967 को बेटी अनुपमा का जन्म हुआ। लीला प्रसाद ने पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए एमए की पढ़ाई पूरी की और इसके बाद अरबिंद महिला कॉलेज में इतिहास की लेक्चरर बन गई। बाद में उन्होंने इतिहास में ही डॉक्टरेट की उपाधि भी ली, इस बीच परिवार की आर्थिक हालत सुधरने लगी तो खजांची रोड में जमीन खरीदकर उन्होंने निजी प्रैक्टिस को मख्यनिया कुआं से यहाँ शिफ्ट कर लिया। आज यहाँ स्थित आलोक नसिंग होम और अनुपमा अस्पताल की पहचान देश के बड़े और अत्याधिक केंद्रों में होती है। उनकी पुत्री अनुपमा पेशे से वकील र्थी मगर शादी के कुछ ही समय बाद पेटिक अल्सर के कारण 1996 में उनकी असामिक मौत हो गई। इससे लीला जी पूरी तरह दूट गई वे गुमसुम रहने लगीं और कई तरह की बीमारियों की चपेट में आ गईं। आखिरकार 2009 में लीला प्रसाद ने इस नशव शरीर को त्याग दिया। पहले बेटी और फिर पत्नी के जाने से डॉ. प्रसाद दूट गए। इसके बावजूद उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। चिकित्सा के पेशे में उनका नाम आसमान पर लिखा हुआ था। बिहार ही नहीं, सर्जरी के मामले में पूरी दुनिया में उनका नाम इन्जिनियर से लिया जाता है। जाहिर है, जब इंसान की कामयाबी बढ़ती है तो उसकी जिम्मेदारियाँ भी उसी अनुपात में बढ़ती हैं और डॉ. नरेंद्र ने अपनी जिम्मेदारियों से मुंह मोड़ना नहीं सीखा, इसलिए पारिवारिक पोते या इतने झटके लगाने के बावजूद वे अपनी पेशेगत और सामाजिक जिम्मेदारियों को बखूबी निभाते रहे। एक डॉक्टर के रूप में अपनी जिम्मेदारियों के निर्वहन के लिए उन्होंने दुनिया के कई देशों की यात्राएं की हैं और व्याख्यान दिए हैं।

उनके पुत्र आलोक अभिजीत भी एक डॉक्टर और काविल सर्जन हैं एवं अब डॉक्टर नरेंद्र प्रसाद के अस्पताल का काम संभालते हैं। डॉक्टर आलोक की शादी रंची के प्रसिद्ध शिशु रोग विशेषज्ञ डॉक्टर रमेश की पुत्री स्मृति के साथ हुई है और दंपति को दो पुत्रियों और एक पुत्र के मातापिता होने का सौभाग्य प्राप्त है। डॉक्टर प्रसाद का ज्यादातर समय अब पोते-पोतियों और अपने प्रोफेशन एवं समाजसेवा में ही बीतता है। डॉक्टर प्रसाद जेपी से प्रभावित रहे और जेपी विचार मंच के अध्यक्ष का काम भी संभाला। उनके प्रयासों और तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के अनुमोदन से लोकसभा में जेपी की 18 फीट ऊंची कांस्य प्रतिमा की स्थापना हुई थी। समाजसेवा को लेकर वे कितने प्रतिबद्ध हैं, इसका अंदाज इस बात से लगाया जा सकता है कि अपने गांव की जमीन उन्होंने समाज के नाम समर्पित कर दी। गांव की अपनी 5 एकड़ जमीन उन्होंने बिहार के राज्यपाल के नाम रजिस्टरी कर दी और उस जमीन पर राज्य सरकार की अनुमति से एक हाईस्कूल का निर्माण करवाया है। इस स्कूल का नाम उनके पिता और माता के नाम पर



मेदनी-उमा उच्च विद्यालय रखा गया है। डॉक्टर प्रसाद के भाइयों ने भी अपनी जमीन राज्य सरकार को दी है जिसपर सरकार की ओर से मध्य विद्यालय चलाया जा रहा है। गांव के विकास के लिए उन्होंने और भी कई काम कराए हैं। उन्होंने एक स्वावलंबी सहकारी समिति का गठन कराया है जिसका नेतृत्व उनके पुत्र डॉक्टर आलोक करते हैं। गांव के सर्वांगीन विकास और खासकर बच्चों के कैरिअर को लेकर डॉक्टर साहब बहुत ही सजग रहते हैं।

डॉक्टर नरेंद्र इंडियन मेडिकल एसोसिएशन से भी जुड़े हुए हैं। 1966 से शुरू हुआ यह जुड़ाव अबतक अनवरत चल रहा है। 1966 से 1997 तक वे आईएमए विहार के अध्यक्ष रहे। 1990 से वे राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य हैं। तो एसोसिएशन ऑफ सर्जन्स ऑफ इंडिया के भी 1990 से सदस्य हैं, इसके अलावा भी अनगिनत संस्थाओं से जुड़े रहे हैं। 1997 से 1999 तक वे नेशनल मेडिकोज ऑर्गनाइजेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे और उसके बाद से अब इस संस्था के संरक्षक हैं। उन्होंने 'मेरा जीवन संघर्ष और सेवा' नामक अपनी आत्मकथा लिखी है जो काफी प्रसिद्ध हुई, डॉक्टर नरेंद्र प्रसाद आरएसएस के स्वयंसेवक हैं मगर शाखाओं में कम जाते हैं। इसके अलावा वे भारतीय जनता पार्टी (बिहार प्रदेश) के चिकित्सा मंच के अध्यक्ष रहे हैं। □





डॉ. नवनीत कुमार

## अपनों के लिए कुछ करने की तड़प ने दिलाई कामयाबी

अपने लिए कुछ करने का सपना तो सभी देखते हैं मगर समाज के लिए कुछ करने का सपना देखना और उसे पूरा करने में खुद को झाँक देना सबके बस की बात नहीं होती। ये आलेख ऐसी ही शाखियत डॉक्टर नवनीत कुमार के बारे में है जो बिहार के लोगों की आंखों के लिए नई ज्योति साबित हो रहे हैं।



समाज के मध्य वर्गीय हिस्से से आने वाले लोग अकसर नौकरी, घर और बीबी-बच्चों की जिम्मेदारियों में ही उलझ रहे जाते हैं। मगर ये भी सच है कि समाज के इसी हिस्से से ऐसे लोग भी निकलते हैं जो अपने लिए कम और समाज के लिए ज्यादा सोचते हैं। बिहार के ऐसे ही एक चिकित्सक हैं डॉक्टर नवनीत कुमार। नेत्र चिकित्सा के क्षेत्र में बिहार ही नहीं बल्कि दूसरे राज्यों में भी इनका नाम है। पटना में नेत्र चिकित्सा से संबंधित सभी अत्याधुनिक उपकरणों से लैस वेदांता नेत्र विज्ञान केंद्र, डॉक्टर नवनीत कुमार की उस उक्त इच्छा का प्रतिफल है जिसके तहत वे बिहार के मरीजों को आंख के इलाज के लिए बिहार में ही अत्याधुनिक सुविधा प्रदान करना चाहते थे। पटना के आशियाना-दीधा रोड पर करीब 10 हजार वर्ग फीट क्षेत्रफल में स्थापित वेदांता सेंटर फॉर ऑथेलिमिक साइंस पूर्णतः वातानुकूलित परिसर है जिसमें तीन ऑपरेशन थियेटर, पोस्टिओपीटी कैर, ओपीडी, डॉक्टर्स रूम आदि सभी मूलभूत सुविधाएं और इसके अलावा सभी जरूरी उपकरण मौजूद हैं।

हालांकि मध्यम वर्ग से आने वाले एक बच्चे के लिए इस उपलब्धि को हासिल करना कठर आसन नहीं था। बिहार के सीतामढ़ी से आने वाले डॉक्टर नवनीत कुमार की शुरुआती शिक्षा जिते के सरकारी स्कूल में हुई। इनके पिता श्री विरेन्द्र कुमार इंजीनियर और मां साक्षिया चौधरी सामान्य गृहिणी थीं। चार भाई-बहनों में से एक नवनीत कुमार ने स्कूली पढ़ाई के दौरान ही डॉक्टर बनने की ठान ली थी। उनके इसी निश्चय का असर था कि हाईस्कूल पास होने के बाद फहले ही प्रयास में इनका पेंडिकल एंड्रेस क्लियर हो गया और उन्हें कनाटक के मैसूरु पेंडिकल कॉलेज में दाखिला मिल गया। वहां से एमबीबीएस करने के बाद उन्होंने नेत्र चिकित्सा में विशेषज्ञता हासिल करने के लिए दिल्ली के अखिल भारतीय अयुर्विज्ञान संस्थान के राजेंद्र प्रसाद नेत्र चिकित्सा केंद्र से नेत्र शल्य चिकित्सा में एम. डी. किया। नेत्र चिकित्सा में विशेषज्ञता हासिल करने के लिए उन्होंने 2006 में ब्रिटेन के मैनचेस्टर में नेत्र शल्य चिकित्सा में ही एमआरसीएस किया और इसके बाद कुछ सालों तक इंसैंड के अस्पतालों में कार्य किया।

मगर उनके मन में तो अपना देश बसा था इसलिए विदेशों में नौकरी के अवसरों को टुकराकर डॉक्टर नवनीत कुमार भारत लौट आए। भारत लौटने देश के विभिन्न राज्यों के नेत्र अस्पतालों में अपनी सेवा दी। इसमें दिल्ली का एस्सी भी शामिल था जहां उन्होंने एक-एक दिन में 200 तक मरीजों का इलाज किया। हालांकि इन सभी अस्पतालों में नौकरी के दौरान एक चीज उन्हें परेशान करती थी। इन अस्पतालों में आने वाले मरीजों में बड़ी संख्या उनके गृहराज्य बिहार के लोगों की होती थी। डॉक्टर नवनीत कुमार को समझ आ गया था कि बिहार में नेत्र चिकित्सा की बुरी हालत के कारण वहां के लोगों को राज्य से बाहर इलाज



66 | डॉ. नवनीत कुमार



के लिए जाना पड़ता है। बस यहीं से उनके जीवन की दिशा बदल गई और उन्होंने अपनी जन्मस्थली बिहार को अपनी कर्मस्थली बनाने का इरादा कर लिया।

बिहार के हजारों चिकित्सक आज राज्य से दूर दूसरी जगहों पर काम कर रहे हैं। डॉक्टर नवनीत कुमार ऐसे भी चिकित्सकों के लिए प्रेरणास्रोत हैं। इनमें से कुछ डॉक्टर भी यदि डॉक्टर नवनीत की तरह अपने राज्य के भाई बंधुओं का भला करने की नीत से वापस लौटे तो निश्चित रूप से बिहार में स्वास्थ्य क्षेत्र में क्रांति हो सकती है।

डॉक्टर नवनीत कुमार बिहार तो आ गए मगर मुश्किल ये थी कि सभी अत्याधुनिक सुविधाओं और उपकरणों से लैस नेत्र अस्पताल शुरू करने के लिए उनके पास पर्याप्त संसाधन नहीं थे। उनके पास कुछ था तो नेत्र चिकित्सा का व्याओपक अनुभव था। अपने इसी अनुभव के बूते उन्होंने बिहार में ऐसा नेत्र अस्पताल बनाने का प्रण कर लिया जिससे बिहार के लोगों को अपना समय और पैसा खर्च कर बिहार के बाहर इलाज के लिए न जाना पड़े। उनका अनुभव और उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ-साथ उनकी चिकित्सक पत्नी डॉक्टर नीतू ने उनका साथ दिया और अंततः सभी बाधाओं को पार करके 2016 में उन्होंने पटना में वेदांता सेंटर फॉर ऑथेलिमिक साइंसेज की स्थापना कर डाली।



इस केंद्र में मोतियाबिंद, क्यूर लेसिक (चश्मे से छुटकारा), फैको टकनीक से मोतियाबिंद का इलाज, रेटिना का इलाज, न्यूरो ऑथेल्मोलॉजी, पेंडियाट्रिक ऑथेल्मोलॉजी आदि का इलाज किया जाता है।

जैसा कि पहले लिखा गया है इस केंद्र की स्थापना के पीछे डॉक्टर नवनीत कुमार की मंशा बिहार के मरीजों को इलाज के लिए बैंगलूरु जाते थे मगर उसमें भी बढ़कर उनकी मंशा ये थी कि बिहार के लोगों को सामान्य खर्च में अत्याधुनिक सुविधाएं मिल जाएं। ये अस्पताल उनके इस सपने को सही तरीके से पूरा कर रहा है।

इस केंद्र की खासियत ये है कि ये पूरी तरह मरीजोन्मुखी सेंटर है। डॉक्टर नवनीत कुमार खुद मृदु भाषी डॉक्टर हैं और मरीजों से उनका व्यवहार दोस्ताना रहता है। उन्होंने अपने सारे स्टाफ को भी ये स्पष्ट हिदायत दे रखी है कि मरीजों के साथ विनप्रता पूर्वक व्यवहार किया जाए। सेंटर में हाईजीन यानी साफ-सफाई का पूरा ख्याल रखा जाता है। जरा सी भी गंदगी बर्दास्त नहीं की जाती है। अस्पताल के अंदर कैफेटेरिया, दवा की दुकान और चश्मे का काउंटर भी है ताकि मरीजों को एक ही जगह सारी सुविधाएं मिल सकें और उन्हें कहीं भटकना न पड़े। किसी फाइब स्टार होटल की तरह सुसज्जित इस सेंटर में सुविधाएं भी उसी श्रेणी की हैं।

डॉ. नवनीत कुमार | 67



**प्रियम्बद सिंह**

## मार्केटिंग का दिग्गज

बिहार के बेगूसराय जिले के मूल निवासी और अपने ज़माने के ख्यातिप्राप्त साहित्यकार और टी.एन. बी कॉलेज भागलपुर में प्रोफेसर रहे रामसागर प्रसाद सिंह के पुत्र प्रियम्बद सिंह का नाम आज बिहार की उन चंद हस्तियों में शुमार है जिहोंने अपनी सूझबूझ, नेतृत्व क्षमता और कठिन परिश्रम की बदौलत न केवल अपनी एक अलग पहचान बनाई बल्कि डायरेक्ट सेलिंग इंडस्ट्री के सिरमौर कहे जाने वाले एमवे के व्यापार में डबल डायमंड का खिताब अपने नाम कर देश में सर्वोच्च दूसरा स्थान हासिल किया। उनकी उपलब्धियों को ध्यान में रखकर जुलाई 2014, 2017-18 और 2018-19 में एमवे द्वारा प्रकाशित पत्रिका एमाग्राम के कवर पेज पर न केवल इस जोड़े की तस्वीरों के साथ इनकी सफलता की कहानी दी गई बल्कि इंडिया टुडे के जून 2019 के ताज़ा अंक में प्रियम्बद सिंह के इंटरव्यू को भी प्रमुखता से प्रकाशित किया गया है।



प्रियम्बद सिंह का जन्म बिहार के बेगूसराय जिले के पहसारा गाँव में हुआ किन्तु उनकी प्रारंभिक शिक्षा कहलगांव एवं भागलपुर में हुईं प्रियम्बद ने मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई एम.आइ.टी मुजफ्फरपुर से पूरी कर इंजीनियरिंग की नौकरी नहीं की एवं अपने सपनों को नई उड़ान देने और अपने राज्य बिहार में कुछ कर गुजरने की चाहत के बीच बिहार लोक सेवा आयोग की परीक्षा पास की और बिहार वित्त सेवा (सेल्स टैक्स) में नौकरशाह बने। सरकारी नौकरी में रहते हुए प्रियम्बद ने टैक्स सुधार, वैट सेल, विश्व बैंक की टीम के साथ प्रशिक्षण का काम एवं आप सचिव के रूप में परिवहन एवं कला संस्कृति एवं युवा विभाग में अपना योगदान दिया।

साथ ही राज्य के विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा निजी संस्थाओं में अलग-अलग विषयों पर छात्रों एवं कर्मचारियों को प्रशिक्षित एवं प्रेरित करने में भी इनकी भूमिका अग्रणी रही लेकिन प्रियम्बद सिंह का सफर यहीं नहीं थमा। उनके परिवार के सदस्य बातों हैं कि प्रियम्बद के दिलो-दिमाग में अपनी शर्तें पर आज्ञाद और निर्बाध जिन्दगी जीने के साथ कुछ बड़ा करने की ख्वाहिश हमेशा से रही।

गुजरे ज़माने को याद कर प्रियम्बद सिंह कहते हैं कि वह भी एक बक्ता था जब मैं शाम के समय ईस्ट एंड बेर्स्ट नामक आई.ए.एस कोविंग इंस्टिट्यूट में वहाँ के छात्रों को पढ़ाने का काम करता था, उसी दौरान साल 2001 में मेरी पत्नी सुनीता ने विश्व के 100 से ज्यादा देशों में संयुक्त डायरेक्ट सेलिंग इंडस्ट्री के सिरपौर एमवे के अवसर को देखा और जौकी के बाद खाली बचे समय में शाम के बक्ता सुनीता और प्रियम्बद ने इस काम को शुरू किया।

कौशल विकास, स्वरोजगार, नेतृत्व विकास, देश-विदेश की लोकप्रियता तथा राज्य के विकास में योगदान जैसी सभावाओं को समझ प्रियम्बद अभिभूत हो गए और उन्होंने लोगों की जिन्दगी बदलने की दिशा में प्रभावी कदम उठाने का निर्णय लिया। दिन, महीने और साल बदलते गए, और बदलते बक्त के साथ प्रियम्बद ने वह सब कुछ हासिल किया जिसे ऐसे से खरीदा जा सकता था और वह सब भी जिसे ऐसे से कभी खरीदा नहीं जा सकता।

एक प्रसिद्ध मोटिवेशनल स्पीकर के तौर पर प्रियम्बद की छवि अब न केवल लोगों को प्रभावित कर रही थी बल्कि लाखों की संख्या में वैसे लोग भी सामने आने लगे जो उनकी छवि में खुद को तलाश रहे थे।

तेज़ी से बढ़ती लोकप्रियता के बीच साल 2009 में यह खबर मिली कि प्रियम्बद सिंह ने बिहार-झारखंड में पहले डायमंड का खिताब अपने नाम कर लिया है। इस खबर ने



प्रियम्बद सिंह की परिवार का एक दृश्य। उनके पास एक छोटा लड़का है जो उनकी ताकती भूमिका के लिए जाना जाता है।

एमवे बिज़नेस से जुड़े लाखों लोगों का न केवल उत्साह बढ़ाया बल्कि खुद प्रियम्बद सिंह की गिरती डायरेक्ट सेलिंग इंडस्ट्रीज से जुड़े देश के सर्वश्रेष्ठ लोगों में की जाने लगी। अपने कठिन पारंप्रथम के बूते डायमंड के शिखर पर पहुँचने वाले प्रियम्बद सिंह ने कभी पलट कर पीछे नहीं देखा और विग्रह दस वर्षों में हिन्दुस्तान के सफलतम शीर्ष तीन लोगों में उनका नाम शुमार है और आज प्रियम्बद सिंह एमवे के डायरेक्ट सेलिंग के व्यापार में डबल डायमंड हैं। एमवे के व्यापार से जुड़े जानकारों का मानना है कि हजारों लोगों की जीवन शैली में बदलाव एवं बिहार के कौशल विकास और जी.डी.पी में प्रियम्बद सिंह के आंशिक योगदान से इनकारा नहीं किया जा सकता।

प्रियम्बद की उद्यमिता एकांगी नहीं रही। 2011 में अपनी वरीय सरकारी नौकरी का त्याग कर उन्होंने अपने कुछ महत्वाकांक्षी मित्रों के साथ पटना जिले के बिहार में प्राइवेट फ्रेट टर्मिनल यानी रेलवे साइडिंग के निर्माण में महती भूमिका निभाई जो आज बिहार के व्यवसायियों के लिए देश भर से माल ढुलाइ का लोकप्रिय प्लेटफार्म है। प्रियम्बद ने बिहार और झारखण्ड में रिटेल-आउटलेट का बढ़िया प्लेटफार्म भी तैयार किया है जो पटना, मुजफ्फरपुर, देवघर और धनबाद में विभिन्न ब्रांडों यथा एडिडास, खादिम, वी.आई.पी आदि के रूप में कार्यरत है।



प्रियम्बद की पत्नी सुनीता कहती हैं कि उनके पति का शरीर यदि व्यवसाय और लोगों की जिन्दगियों को बदलने में लगा रहा तो उनकी आत्मा लिखने-पढ़ने और लोगों को प्रेरित करने से जुड़ी रही है।

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अपनी कविताओं और लेखनी के माध्यम से पाठकों के सामने रखे प्रियम्बद को विश्व भर के लाखों लोग उनकी सी.डी.यू-ट्यूब एवं सेमीनार से उनके जीवन को प्रकाशित करने में लगे हैं। प्रियम्बद ने दुनिया के 40 से ज्यादा देशों का भ्रमण किया है और एक अद्भुत बक्ता के तौर पर अपनी एक अलग पहचान बनाई है।



आज प्रियम्बद न केवल युवाओं के आदर्श के रूप में लोगों के सामने हैं बल्कि उनका करिश्माई व्यक्तित्व भी लोगों को अपनी ओर खींचता है। बातचीत के क्रम में प्रियम्बद कहते हैं कि मेरा सपना है कि बिहार का प्रत्येक जिला स्वरोजगार और उद्यमिता से भरपूर हो एवं डायरेक्ट सेलिंग और कौशल विकास के माध्यम से लाखों लोग एक शानदार जिन्दगी जी सकें और बिहार का नाम देश के पहले पायदान पर हो।



डॉ. प्रवीण आनंद

## होम्योपैथी के बारे में बदली लोगों की सोच

डॉक्टर प्रवीण आनंद मुजफ्फरपुर शहर के जाने-माने होम्योपैथी चिकित्सक हैं जो लोगों के बीच होम्योपैथी की सोच और समझ को बदलने में जुटे हैं। आमतौर पर एलोपैथी इलाज से हार चुके लोग ही होम्योपैथी की शरण में आते हैं और डॉक्टर प्रवीण आनंद इसी सोच को बदलना चाहते हैं, क्योंकि उनका मानना है कि होम्योपैथी इलाज की एक संपूर्ण पद्धति है जिससे किसी भी बीमारी का सटीक उपचार हो सकता है। बचपन से ही मरीजों का उपचार करने की इच्छा रखने वाले डॉक्टर आनंद की लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि मुजफ्फरपुर शहर के कई आला अधिकारी और उनके परिजन भी इलाज के लिए उन्हीं के पास आते हैं। कई कैंसर रोगियों तक को स्वास्थ्य का वरदान दे चुके डॉक्टर प्रवीण आनंद बिहार में होम्योपैथी मेडिकल कॉलेजों की दुर्दशा से व्यथित हैं और इसलिए अपना मेडिकल कॉलेज शुरू करना चाहते हैं।



बिहार के मुजफ्फरपुर में 2 जुलाई, 1975 को श्री नागेश्वर मिश्र और कुमुद मिश्र के घर जन्मे प्रवीण आनंद को बचपन से ही डॉक्टरों का जीवन लुभाता था। वे एम्बीबीएस करना चाहते थे। उनके पिता नागेश्वर मिश्र बिहार सरकार में एक्जीक्युटिव इंजीनियर थे मगर उनमें ईमानदारी कूट-कूट कर भरी थी। उनका परिवार भी बड़ा था। ऐसे में उनके वेतन से बस किसी तरह परिवार का भण्णा-पोषण हो जाता था। नागेश्वर मिश्र प्रवीण आनंद की एम्बीबीएस की पढ़ाई का खर्च उठाने में असमर्थ थे। इसके बावजूद प्रवीण ने हार नहीं मानी। जिला स्कूल से मैट्रिक और आरटीईएस कॉलेज से इंटर करने के बाद उन्होंने मुजफ्फरपुर के लंगट सिंह कॉलेज से स्नातक की पढ़ाई पूरी की। इसके बाद उन्होंने

यह तय किया कि अगर वे एम्बीबीएस नहीं कर सकते तो होम्योपैथी के जरिये चिकित्सा करेंगे मगर डॉक्टर बनने की अपनी इच्छा जरूर पूरी करेंगे। मगर वह मुश्किल था क्योंकि इस पढ़ाई के लिए भी पिता की अर्थिक हालत मददगार नहीं थी। ऐसे में प्रवीण ने एजुकेशन लोन के लिए बैंक से संपर्क किया। यह वो दौर था जब बैंक भी आसानी से लोन नहीं देते थे और बैंक ने प्रवीण आनंद से लोन के लिए कोई संपत्ति गिरवी रखने की मांग की। हालांकि बाद में प्रवीण किसी तरह बैंक लोन लेने में कामयाब हुए और होम्योपैथी से एम्डी की पढ़ाई पूरी की। वे आज भी बैंक लोन की ईएमआई भर रहे हैं। होम्योपैथी की डिग्री हासिल करने के बाद उन्होंने मुजफ्फरपुर के मिठनपुरा इलाके में



प्रवीण आनंद ने इस दंपत्ति का इलाज किया और आज उनके सूने घर में बच्चे की किलकारियां गूंज रही हैं। डॉक्टर आनंद ऐसे कई केस सफलतापूर्वक हल कर चुके हैं। उन्होंने केंसर जैसी लाइलाज बीमारी का इलाज भी किया है और केंसर के कई मरीज आज बीमारी से पूरी तरह मुक्त जीवन जी रहे हैं।

क्लिनिक शुरू करने के बाद उनकी घरेलू जिंदगी में थोड़ी अव्यवस्था आ गई थी मगर शादी के बाद वह कमी दूर हो गई। उनकी पत्नी साक्षी आनंद सच्ची सहभार्ती हैं जो सुख और दुख में उनके साथ खड़ी रहती हैं। किसी भी विषय पर उनके सुझाव डॉक्टर आनंद के लिए कारगर सबित होते हैं। शादी के कुछ साल के अंदर ही बेटे अच्युत आनंद और बिटिया आराध्या आनंद के जन्म ने इस परिवार को खुशियों से भर दिया और डॉक्टर आनंद का परिवारिक जीवन सच में आनंदमय हो गया। वे अपनी सफलता का श्रेय अपने पिता से मिले संस्कारों को देते हैं। वे कहते हैं, 'मेरे पिता हमेशा ईमानदारी के पक्षधार थे। उनका मानना था कि गलत तरीके से कमाए गए चैसेसे घर के संस्कार बिगड़ जाते हैं। वे उदाहरण भी देते थे कि उनके कई साथी इंजीनियरों ने गलत तरीकों से धन अर्जित किया मगर उनके बच्चे बिगड़ गए। कई तो शराबी हो गए।' ऐसे में डॉक्टर आनंद ने पिता की ईमानदारी की सीख को गांठ बांध कर रखा है और अपने बच्चों को भी यही संस्कार दे रहे हैं।

डॉक्टर प्रवीण आनंद का एक सपना है। वे अपना होम्योपैथी मेडिकल कॉलेज आरंभ करना चाहते हैं। दरअसल बिहार ही नहीं, पूरे देश में होम्योपैथी शिक्षा की जो दुर्दशा है, उसे लेकर वे व्यक्ति हैं। बिहार में जो गिने-चुने मेडिकल कॉलेज हैं भी, उनमें संसाधनों का घोर अभाव है। सरकार भी इसे लेकर उदासीन है। ऐसे में वे एक आधुनिक होम्योपैथी कॉलेज शुरू करना चाहते हैं जहां बच्चों को हर संसाधन सुलभ हो। हालांकि वे जानते हैं कि उनका यह सपना अभी पूरा नहीं हो सकता इसलिए वे अपनी भविष्य की योजनाओं में इसे शमिल करना चाहते हैं। हालांकि फिलहाल बच्चों को शिक्षा देने के लिए वे मोतिहारी के आर.के. केडिया होम्योपैथी कॉलेज में बौद्धि प्रैफेसर अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

डॉक्टर आनंद होम्योपैथी चिकित्सकों की निम्न गुणवत्ता से दुखी हैं। इसका दोष वे ज्ञोता छाप डॉक्टरों को देते हैं। वे कहते हैं कि देश में कई लोग होम्योपैथी की एक या दो किताबें पढ़कर अपनी दुकान खोले बैठे हैं और मरीजों की जान से खिलवाड़ कर रहे हैं। डॉक्टर आनंद कहते हैं कि होम्योपैथी का ज्ञान बहुत ही विस्तृत है, जिसे सिफे एक या दो किताबें पढ़कर नहीं सीखा जा सकता। डॉक्टर आनंद होम्योपैथी चिकित्सा की दुनिया का वो चमकता सितारा हैं जिसने अभी अपनी चमक दिखानी शुरू ही की है। उम्मीद है कि भविष्य में उनकी चमक पूरे बिहार, बल्कि पूरे देश में दिखाई देगी। □





एम.के. झा

## लगी-लगाई नौकरी छोड़ शिक्षा की अलख जगाने वाला गणितज्ञ

एम.के. झा का नाम बिहार के शिक्षा जगत में आदर से लिया जाता है क्योंकि उन्होंने रेलवे की सुरक्षित और स्थायी नौकरी छोड़कर नई पीढ़ी को गणित सिखाने में अपनी सारी ऊँजा लगा दी। पटना के झा क्लासेस केंद्र में उनकी लगन और मेहनत के कारण

आज 5,000 से अधिक बच्चे प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में लगे हैं। झा को दिसम्बर 2018 में पटना में आउटलुक द्वारा आयोजित “आइकॉन्स ऑफ बिहार” के सम्मान से नवाज़ा जा चुका है। बिहार के मधुबनी जिले के शाहपुर में मई, 1970 में जन्मे एम.के. झा का नाम गणित की दुनिया में किसी परिचय का मोहताज नहीं है

पटना के नया टोला में झा क्लासेस के नाम से गणित का ट्यूटोरियल केंद्र चलाने वाले मनोज कुमार झा बचपन से ही प्रतिभाशाली छात्र थे। उनके पिता ताराकांत झा चाहते थे कि

बेटा ऊँची तालीम लेकर बड़ा सरकारी अधिकारी बने। उनके बिहार के मैथिल ब्राह्मणों के परिवार से आने के कारण यह एक सहज और स्वाभाविक आकांक्षा थी, क्योंकि बिहार के

मिथिलांचल में आमतौर पर प्रशासनिक सेवाओं या बैंक की नौकरियों का बड़ा क्रेज है। ताराकांत ज्ञा खुद एक व्यवसायी थे मगर अपने समाज के अन्य लोगों की तरह उनकी यही इच्छा थी कि उनका बेटा सरकारी अधिकारी बने। मगर मनोज के दिमाग में तो कुछ और ही चल रहा था। दरअसल मनोज अरंभ से ही शिक्षक बनना चाहते थे और छात्रों को गणित की शिक्षा देना चाहते थे। उनके एक प्रतिष्ठित शिक्षाविद बनने की यात्रा की शुरुआत स्कूली जीवन से ही हो गई थी। उन्होंने बोकारो (अब झारखण्ड) के पास चास स्थित आदर्श मध्य विद्यालय से आठवीं कक्षा तक की शिक्षा ग्रहण की और चास के ही रामरुद्ध उच्च विद्यालय से 1984 में मैट्रिक की परीक्षा पास की। इंटरमीडिएट में साइंस की पढ़ाई करने के लिए उन्होंने रांची यूनिवर्सिटी के मारवाड़ी कॉलेज का रुख किया। इसके बाद उन्होंने रांची कॉलेज से 1989 में स्नातक की डिप्री हासिल की। रांची विश्वविद्यालय के उनके कई साथी उनकी प्रतिभा के कामल रहे हैं और उनका कहना है कि गणित में ज्ञा की पकड़ उन्हें दूसरों से अलग करती थी। तब भी उनकी इच्छा यही थी कि अपना गणित का यह ज्ञान के दूसरों में बांटें। अपनी पढ़ाई के दिनों में वे गरीब बच्चों को पुस्त में पढ़ाया करते थे। अस्सी के दशक का यह जुनून अब भी बरकरार है और आज भी फीस देने में अक्षम छात्र उनके कोचिंग संस्थान में मुक्त में शिक्षा ग्रहण करते हैं।

लेकिन कोचिंग संस्थान शुरू करने की यात्रा आसान नहीं थी। पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों के दबाव में मनोज ज्ञा ने नब्बे के दशक में पटना के महेंद्र में रहकर बैंक के प्रोबेशनरी



अधिकारी, स्टाफ सलेक्शन कमीशन तथा रेलवे की नौकरियों की तैयारी शुरू कर दी। मनोज प्रतिभाशाली तो थे ही इसलिए रेलवे में उन्हें एसएसएम की नौकरी जल्द ही मिल गई। मगर वे नौकरी के लिए बने ही नहीं थे इसलिए उन्होंने नौकरी छोड़ दी। नौकरी छोड़ने के बाद एक बार फिर उनपर परिवार का दबाव पड़ा और इस दबाव में आकर उन्होंने पटना के ललितनगराण मिश्र इंस्टीट्यूट ऑफ बिजेनेस मैनेजमेंट से एमबीए पाठ्यक्रम के लिए आईवन कर प्रवेश परीक्षा पास की। लेकिन इसके बाद उन्होंने अपने मन को मजबूत कर लिया और किसी भी दबाव में आने से इनकार कर दिया। उन्होंने एमबीए कोर्स में दाखिला नहीं लिया और शिक्षण को अपना पेशा बनाने की घोषणा कर दी। 1995 में, उन्होंने परिवार के ही कुछ छात्रों को अंग्रेजी और गणित पढ़ाना शुरू कर दिया। उनके द्वारा शिक्षा पाए थे छात्र कुछ समय बाद बैंक, एलआईसी और रेलवे की अलग-अलग परीक्षाओं में चुन लिए गए। इस वक्त से मनोज को और प्रोत्साहन मिला और 1996 में पटना के महेंद्र इलाके में उन्होंने अपना कोचिंग संस्थान शुरू कर दिया।

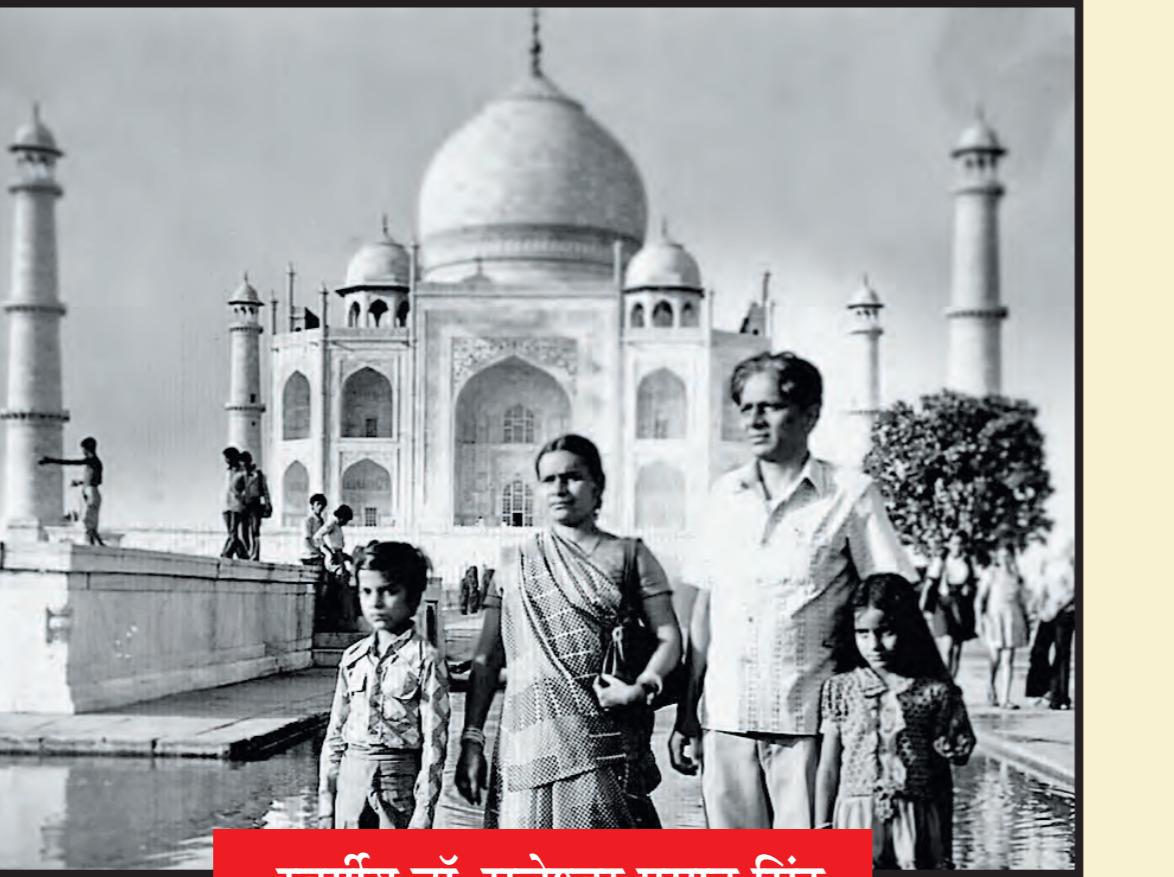
दो साल बाद यानी 1998 में उन्हें पटना के ही करतार कोचिंग में दृढ़ने का प्रस्ताव मिला, जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। सन् 2000 में उन्होंने अपने कोचिंग संस्थान को महेंद्र से पटना के गोपाल मार्केट में स्थानांतरित कर लिया। इसके बाद 2011 तक यह संस्थान यहीं से संचालित होता रहा। एम.के. ज्ञा ने अपने संस्थान को पहचान दिलाने के लिए दिन-रात मेहनत की। उन्होंने आधी रात को भी छात्रों को पढ़ाया।

इस समय तक उन्हें यह महसूस होने लगा कि करतार क्लासेस और अपने कोचिंग संस्थान के लिए वे एक साथ समय नहीं निकाल पाएंगे। इसलिए 2012 में कोचिंग संस्थान को छोड़ दिया और अपने संस्थान पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने अपने संस्थान को ज्ञा क्लासेस का नाम दिया। इस समय तक पटना में गणित के शिक्षक के रूप में मनोज कुमार ज्ञा का नाम पूरी तरह स्थापित हो चुका था। उनकी प्रसिद्धि बिहार के दूर्घ जिले यहां तक कि पड़ावेसी राज्य झारखण्ड तक फैल चुकी थी। नब्बे के दशक में अपने परिवार के केवल चार छात्रों के साथ शिक्षण शुरू करने वाले ज्ञा ने जब औपचारिक रूप से कोचिंग का पहला बैच शुरू किया, तो उनके पास 50 छात्र थे। आज ज्ञा क्लासेस में छात्रों की संख्या 5,000 से अधिक हो चुकी है। छात्रों की यह बढ़ती संख्या न केवल इस तथ्य की ओर इंगित करती है कि इस संस्थान के छात्र एम.के. ज्ञा के शिक्षण से प्रभावित हैं, बल्कि यह भी कि यह संस्थान वास्तव में अपने छात्रों की देखभाल करता है और उन्हें अपने कैरिअर के निर्माण में उचित मार्गदर्शन देता है।

ज्ञा की पाली बबीता ज्ञा इस सफलता का श्रेय अपने पति के गणित ज्ञान के साथ-साथ उनके जीवन के दो गुणों को देती हैं। वे कहती हैं कि मनोज अपने जीवन में अनुशासन और समय के उचित उपयोग का कठोरता से पालन करते हैं। इसी अनुशासन की बड़ौलत वे राज्य के सफलतम शिक्षकों में हैं। बबीता मनोज ज्ञा का परिवार संभालने के साथ-साथ ज्ञा क्लासेस का प्रबंधन भी संभालती हैं। उनके अनुसार, “हमारे बेहतर प्रबंधन और गुणवत्तापूर्ण शिक्षण ने हमारे संस्थान और खुद एम.के. ज्ञा को कई पुस्तकर दिलाएँ हैं। इसका श्रेय हमारे छात्रों को भी जाता है, जिन्होंने अपनी पढ़ाई के लिए खुद को समर्पित किया और अपने कैरिअर को एक आकार दिया। इसने हमारे संस्थान को प्रसिद्धि दिलाई।” एम.के.ज्ञा अब छात्रों की एक और मदद करने जा रहे हैं। इस बारे में वे खुद बताते हैं, “बैंकों, एसएसपी और रेलवे की तैयारी को ध्यान में रखते हुए मैंने हाल ही में ‘ऑफिसिटिव अर्थेमटिक’ नामक एक पुस्तक लियी है जिसे दिल्ली के मशहूर प्रकाशन समूह लिया द्वारा प्रकाशित किया जाएगा। यह किताब छात्रों की मदद के लिए जल्द ही बाजार में आ जाएगी।”

वाकई कि किसी भी व्यक्ति के लिए अच्छी-खासी नौकरी छोड़ शिक्षक के पेशे को अपनाना अत्यन्त दुष्कर होता है। यह अत्यन्त दुर्लभ गुण और अपने ध्येय एवं उद्देश्य के प्रति समर्पण का ही परिणाम है और एम.के. ज्ञा में यह विशेषता भरपूर मात्रा में है। बिहार के हजारों छात्र इसका फायदा उठा रहे हैं और उठाते रहेंगे। उनकी 'संपूर्ण गणित' नामक पुस्तक बाजार में आ चुकी है। यह उनकी लगन और मेहनत का ही नमीजा है कि धूलाई 2019 में जारी एसएसपी (जी डी) के फाइनल रिजल्ट में ज्ञा क्लासेज के 30 छात्र चयनित हुए हैं।





**स्वर्गीय डॉ. राजेश्वर प्रसाद सिंह**

## बिहार में दंत चिकित्सा के पितामह

डॉ. राजेश्वर प्रसाद सिंह को बिहार में दंत चिकित्सा क्षेत्र का पितामह कहा जाता है और ऐसा स्वाभाविक है। उनके जीवन से कई सारी ऐसी चीजें जुड़ी हैं जो इससे पहले नहीं हुई थीं। वे बिहार सरकार के पहले डेंटल सर्जन थे जिन्हें मेडिसिन विभाग का फैकल्टी डीन बनाया गया। इसी प्रकार बिहार में बीडीएस और एमडीएस दोनों डिग्रियां हासिल करने वाले वे पहले चिकित्सक थे। उन्हें बिहार का पहला निजी डेंटल कॉलेज स्थापित करने का श्रेय जाता है। पटना गवर्नर्मेंटल डेंटल कॉलेज के लगातार 14 साल तक प्राचार्य रहने वाले वे पहले डॉक्टर थे। उन्होंने ही पहली बार पटना डेंटल कॉलेज में एमडीएस कोर्स की शुरुआत की। यानी डॉक्टर सिंह आजीवन कुछ न कुछ नया करते रहे और इसमें हमेशा समाज की भलाई छिपी होती थी। उनकी उपलब्धियों को देखते हुए तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने उन्हें चिकित्सा क्षेत्र में दिए जाने वाले सर्वोच्च सम्मान 'बीसी राय अवार्ड', से सम्मानित किया था। बुद्धा इंस्टीट्यूट ऑफ डेंटल साइंस, जिसे बिहार के लोग आमतौर पर बुद्धा डेंटल कॉलेज के नाम से जानते हैं, आज किसी पहचान का मोहताज नहीं है और बिहार ही नहीं बल्कि दूसरे राज्यों के छात्र भी यहां से शिक्षा लेकर काबिल दंत चिकित्सक बनते हैं। मगर इस कॉलेज के संस्थापक का जीवन इतना सरल नहीं था। आउटलुक डॉ. आर.पी.सिंह को भावभीनी श्रम्भाजलि अर्पित करता है।



12 जनवरी, 1931 को यानी देश की आजादी से करीब साढ़े सोलह साल पहले पटना के निकट सूर्यपुरा करजान में पैदा हुए डॉ. राजेश्वर के पिता रामगुलाला सिंह ने इस बात का पूरा ध्यान रखा कि उनके बेटे की शिक्षा में कोई कमी न रहे। उनकी आरंभिक शिक्षा अथवलागोला मिडिल स्कूल और शबानी हाई स्कूल से हुई। मैट्रिक के बाद आगे की पढ़ाई के लिए उन्हें पटना के प्रासिद्ध साइंस कॉलेज में दाखिल कराया गया। उनके बड़े भाई रामवक्ष सिंह रेलवे में अधिकारी थे और अपने सभी भाई-बहनों की शिक्षा को लेकर बेहद सचेत रहते थे। राजेश्वर प्रसाद सिंह ने इंटर की पढ़ाई के दौरान ही डॉक्टर बनने का फैसला कर लिया था इसलिए साइंस कॉलेज से 1948 में आई.एससी करने के बाद वे डेंटल साइंस की पढ़ाई करने तब देश के पहले और इकलौते डेंटल कॉलेज डॉक्टर आर.अहमद डेंटल कॉलेज एंड हॉस्पिटल पूर्णे। यह कॉलेज कोलकाता विश्वविद्यालय के अधीन था। यहां से साल 1957 में उन्होंने बीडीएस की डिग्री हासिल की। बीडीएस करने के तुरंत बाद उन्हें बिहार सरकार में नौकरी मिल गई और पहली नियुक्ति बतौर डेंटल सर्जन गया के जिता चिकित्सालय में मिला। इसके अगले साल वे इंडियन डेंटल एसोसिएशन के सदस्य बने और इसी साल उन्होंने पटना डेंटल कॉलेज एवं अस्पताल में बतौर फैकल्टी ज्वाइन किया। 1963 में बिहार सरकार ने उन्हें इस कॉलेज में लेक्चरर के रूप में नैनारी दी। हालांकि इस समय तक उन्होंने एमडीएस की डिग्री नहीं ली थी। यही सोचकर उन्होंने 1964 में बांधे यूनिवर्सिटी के गवर्नर्मेंट डेंटल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में एमडीएस की पढ़ाई के लिए दाखिला लिया। अपने अच्छे खासे चलते कैरियर को बीच में छोड़कर उन्होंने अपनी क्षमता और दक्षता को और बढ़ाने का फैसला लिया और 1966 में एमडीएस की डिग्री हासिल की। जैसा कि ऊपर लिखा गया है, बिहार में बीडीएस और एमडीएस दोनों डिग्रियां हासिल करने वाले वे पहले डेंटल सर्जन थे। यह डिग्री हासिल करने के बाद पटना लौटने पर पटना डेंटल कॉलेज में उन्हें प्रोफेसर के पद पर पदोन्ति देकर फिर से नियुक्ति दे दी गई।

कैरियर की इस दौड़भाग के बीच में उनका विवाह महाराजी देवी के साथ हुआ जो उनकी सही सहचरी साबित हुई और उनके उठाए हर कदम पर उन्होंने उनका पूरी तरह साथ दिया। दोनों के छह बच्चे हैं, प्रमिला, अरुण, अनिता, संगीता, विनय और शालिनी। डॉक्टर आर.पी.सिंह और उनकी पत्नी ने अपनी मेहनत और संघर्ष के दम पर समाज में अपने लिए इज्जत कराई और अपने बच्चों को भी ऐसे ही संस्कार दिए। उनकी बड़ी बेटी प्रमिला सिंह कहती हैं कि पापा भले ही डॉक्टर थे मगर घर की माली हालत बहुत अच्छी नहीं थी। इसके बावजूद पिता की कोशिश यही रहती थी कि बच्चों को कभी कोई परेशानी न हो। उन्होंने अपनी

और से बच्चों की हर इच्छा पूरी की और उन्हें अच्छी शिक्षा और संस्कार दिए।

1976 में डॉक्टर आर.पी. सिंह पटना डेंटल कॉलेज में प्राचार्य के पद पर आसीन हुए। इस पद पर रहते हुए उन्होंने कॉलेज में 1979 में पहली बार डेंटल मेनेजिंग और एमडीएस कोर्स की शुरुआत कराई। इससे उनकी ख्याति पूरे बिहार में फैल गई। डॉक्टर सिंह को डेंटल सर्जन होने के बावजूद पटना यूनिवर्सिटी का मेडिसिन का डीन नियुक्त किया गया। ऐसा पहली बार हुआ था कि किसी डेंटल सर्जन को यह पद दिया गया हो। इस पद पर डॉक्टर सिंह लंबे समय तक बने रहे। वे बिहार डेंटल काउंसिल के अध्यक्ष भी रहे और बाद में उन्होंने डेंटल काउंसिल ऑफ इंडिया के अध्यक्ष का पद भी संभाला। बिहार सरकार उनकी योग्यता से इतनी प्रभावित थी कि उन्हें सरकार का डेंटल सलाहकार बनाया गया। अस्सी के दशक में उन्हें फेले ऑफ इंटरनेशनल कॉलेज ऑफ डेंटिस्ट द्वारा फेलोशिप प्रदान की गई। इस दौर में बिहार सरकार ने उन्हें डूग कंट्रोल विभाग में ऑफिसिएटिंग डायरेक्टर के तौर पर नियुक्ति दी। सरकार और समाज में डॉक्टर सिंह की ख्याति चरम पर पहुंच चुकी थी मगर उनका एक सपना अब तक उन्हें परेशान किए हुए था। वह सपना था एक डेंटल कॉलेज शुरू करने का। आखिरकर 1985 में 54 साल की उम्र में उन्होंने इस सपने को भी साकार कर दिखाया। पटना



डॉ. आर.पी. सिंह को डॉ. बी.सी. रॉय राष्ट्रीय पुरस्कार देते हुए तत्कालीन पीएम स्वर्गीय राजीव गांधी



की कंकड़बाग कॉलोनी में सिर्फ दो कमरे से उन्होंने बुद्धा इंस्टीट्यूट ऑफ डेंटल साइंस की शुरुआत की। यह बिहार का पहला निजी डेंटल कॉलेज था। यह डॉक्टर राजेश्वर प्रसाद सिंह की अद्यम इच्छाकृति का ही परिणाम था कि आज यह डेंटल कॉलेज एक पूर्ण विकसित और सभी आधुनिक सुविधाओं से युक्त है जहां देश के तकरीबन सभी राज्यों से आए छात्र शिक्षा ग्रहण करते हैं। बुद्धा डेंटल कॉलेज का नाम दंत चिकित्सा सेवा में आदर के साथ लिया जाता है। इस कॉलेज की स्थापना के करीब 15 साल बाद यानी 69 साल की उम्र में उन्होंने कंकड़बाग इलाके में ही राजेश्वर अस्पताल की स्थापना की। यह वो दौर था जब निजी अस्पतालों में मल्टी स्पेशिलिटी सुविधाएं नहीं होती थीं और आईसीयू की सुविधा भी सिर्फ सरकारी अस्पतालों में ही होती थी। राजेश्वर अस्पताल में ये सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं, आज यह अस्पताल पटना के नामी अस्पतालों में गिना जाता है।

चिकित्सा के क्षेत्र में इतना योगदान करने वाले डॉक्टर राजेश्वर प्रसाद सिंह आज हमारे बीच नहीं हैं, मगर उनके बनाए हुए संस्थान आज भी लोगों के जीवन को मुक्तान से भर रहे हैं। उनकी पत्नी महारानी देवी कहती हैं, “मेरे पति एक साधारण इंसान थे जिन्होंने खुद से ज्यादा मुझे और बच्चों को प्यार किया।” डॉक्टरी से बचे समय में उन्हें क्रिकेट मैच, बिम्बिलाह खान की शहनाई और एस्ट्रोलॉजी की पुस्तकों में सुकून मिलता था।

स्वर्गीय डॉ. आर.पी. सिंह के पुत्र और  
डेन्टल काउंसिल ऑफ इंडिया के सदस्य  
डॉ. विनोय कुमार सिंह



पद्मश्री प्रो. रवींद्र कुमार सिन्हा

## गंगा डॉलफिन का रक्षक एक अथक सेनानी

प्रो. रवींद्र कुमार सिन्हा नालंदा ओपन यूनिवर्सिटी, पटना के कुलपति हैं। मगर यह उनका अधूरा परिचय है। दरअसल प्रो. सिन्हा की असली पहचान गंगा में पाई जाने वाली डॉलफिन मछलियों से जुड़ी है। बतौर पर्यावरण एवं वन्यप्राणी संरक्षण विशेषज्ञ उन्होंने अपनी पूरी जिंदगी गंगा डॉलफिन के संरक्षण के प्रयासों को अमरी जामा पहनाने में गुजारी है। पढ़ाई के बाद पटना यूनिवर्सिटी के प्राणिशास्त्र विभाग में पहले व्याख्याता और फिर प्रोफेसर के रूप में नौकरी करने के दौरान उन्हें गंगा डॉलफिन संरक्षण के कार्य से जुड़ने का मौका मिला।

इस कार्य में उनकी दक्षता और अनुभव को देखते हुए बाद में इससे संबंधित अधिकारी कमेटियों और परियोजनाओं में उन्हें अनिवार्य रूप से शामिल किया जाने लगा। आज प्रो. सिन्हा विहार में गंगा डॉलफिन संरक्षण के जैसे पर्याय बन गए हैं। गंगा संरक्षण कार्य के लिए भारत सरकार से पद्मश्री सम्मान पाने वाले प्रो. सिन्हा को नीदरलैंड का सर्वोच्च सम्मान भी हासिल हो चुका है। इसके अलावा उनके जीवन पर अंग्रेजी औंफ्रेंच भाषाओं में दो डॉक्युमेंट्री भी बनाई जा चुकी हैं। हालांकि एक बहेद साधारण किसान परिवार से आने वाले प्रो. सिन्हा के लिए यह सब इतना आसान नहीं था। रवींद्र कुमार सिन्हा का जन्म विहार के जहानाबाद ज़िले के मखदुमपुर प्रखंड की मखदुमपुर नगर पंचायत में स्थित केओटार गांव के एक साधारण किसान परिवार में एक जुलाई, 1954 को हुआ था। उनकी माता गौरी देवी एवं पिता राम दहिन सिंह पढ़े-लिखे नहीं थे। पिता के हिस्से में केवल चार एक डू जमीन थी जिसकी खेती के दम पर वे अपनी एक पुत्री और चार पुत्रों का पालन कर रहे थे।

रवींद्र कुमार की तीसरी कक्षा तक की शिक्षा गांव में ही हुई और उसके बाद सातवीं तक की पढ़ाई उन्होंने मध्य विद्यालय मखदुमपुर और फिर 12वीं तक की पढ़ाई उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मखदुमपुर से पूरी की। तब विहार विद्यालय परीक्षा समिति द्वारा आयोजित उच्चतर माध्यमिक परीक्षा 1970 में अपने स्कूल से प्रथम श्रेणी लाने वाले वे एकमात्र विद्यार्थी थे। इसके बाद बी.एससी पार्ट वन की पढ़ाई उन्होंने बी.एन.

कॉलेज पटना से जबकि बी.एससी (ऑनर्स) की शिक्षा प्राप्ति विज्ञान विषय के साथ 1973 में पटना साइंस कॉलेज से पूरी की। ऑनर्स में उन्हें पूरी यूनिवर्सिटी में चौथा स्थान मिला। इसके बाद उन्होंने पटना यूनिवर्सिटी से ही प्राणि विज्ञान में एम.एससी की। उनका बीच 1973-75 का था मगर देश में जयप्रकाश आंदोलन चल रहा था जिसके कारण स्थानकोत्तर का उनका रिजिट 1977 में आया। उनकी शैक्षणिक प्रतिभा का प्रदर्शन इसमें भी जारी रहा और उन्होंने यूनिवर्सिटी में तीसरा स्थान हासिल किया। एम.एससी का परिणाम आने के कुछ समय बाद ही 30 मार्च, 1978 को उन्हें सुरक्षक कॉलेज मुल्तानांज में प्राणिशास्त्र के व्याख्याता के रूप में नौकरी मिली। हालांकि कुछ ही महीने बाद उनका स्थानकोत्तर आरडी एंड डी जे कॉलेज मुंगेर में कर दिया गया। इस बीच 6 जून, 1978 को उनकी शादी भी हो गई। शादी के एक साल के अंदर उनका चयन पटना विश्वविद्यालय में प्राणिशास्त्र के व्याख्याता के लिए हो गया और उन्होंने पटना साइंस कॉलेज में 17 अप्रैल, 1979 को पदभार ग्रहण कर लिया। इसके बाद रवींद्र कुमार सिन्हा ने फैसला कर लिया कि वे अपनी पीएचडी, भी पर्यावरण एवं वन्यप्राणी संरक्षण के क्षेत्र में करेंगे।

उन्होंने पीएचडी, थीसिस के लिए गंगा नदी से संबंधित विषय चुना। इसी शोध के दौरान उन्हें गंगा डॉलफिन के बारे में कई नई जानकारियां मिलीं। जब वे गंगा डॉलफिन की संख्या कम होने के कारणों की तह में गए तब पता कि दरअसल मछुआरे डॉलफिन की हत्या कर उसके शरीर से तेल निकालते हैं और उस तेल का इस्तेमाल दो अन्य प्रजाति की मछलियों को पकड़ने में किया जाता था। उनके लिए यह बिलकुल नई जानकारी थी। इसके बाद पटना यूनिवर्सिटी के कुलपति के आदेश पर उन्होंने 1983 में गंगा नदी के बारे में एक इंटरडिसिलिनरी शोध प्रस्ताव बना कर उनके समक्ष रखा। जिसे केंद्रीय योजना आयोग को भेजा गया। इसके बाद 1985 में भारत सरकार के पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के तीन विशेषज्ञों की एक टीम पटना यूनिवर्सिटी में इस शोध प्रस्ताव पर विचार-विमर्श के लिए आई। इस मीटिंग में विशेषज्ञों, कुलपति एवं अन्य सभी विभागाधिकारी, प्राचार्यों के समक्ष रवींद्र सिन्हा ने अपने शोध प्रस्ताव पर एक प्रेजेंटेशन दिया। केंद्रीय टीम इससे इतनी प्रभावित हुई कि इस प्रेजेंटेशन के सिर्फ दो सप्ताह बाद 19 मार्च, 1985 को तीन वर्ष के लिए उनकी शोध पर्यायोजना को स्वीकृति मिल गई। तब इस पर्यायोजना का कुल बजट 19 लाख रुपये के करीब था जो बाद में 28 लाख से अधिक हो गया। इस पर्यायोजना में पटना यूनिवर्सिटी के केवल चार विभागों-प्राणिशास्त्र, वन्यप्राणी शास्त्र, रसायन शास्त्र एवं भूगर्भ शास्त्र को शामिल किया गया।

यह प्रो. सिन्हा के जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि थी। इस शोध पर्यायोजना के तहत गंगा जल की भौतिक-रासायनिक



प्रो. रवींद्र कुमार सिन्हा | 85



86 | प्रो. रवींद्र कुमार सिन्हा

गुणवत्ता, गंगा नदी एवं गंगा के किनारे की जैव विविधता, गंगा का भूर्जीय अध्ययन तथा गंगा नदी में भारी धातु पर शोध शामिल था। परियोजना के तीन साल पूरे होने पर 1988 में फाइनल टेक्निकल रिपोर्ट पेश की गई जिसमें प्रो. सिन्हा ने अन्य विषयों के अलावा गंगा डॉलफिन पर आधारित सभी प्रकार की सूचनाओं एवं तस्वीरों को भी शामिल किया।

उन दिनों गंगा प्रोजेक्ट डायरेक्टर के डायरेक्टर डॉ. एम. के. रणजीत सिंह थे जिन्हें वन्य प्राणियों से काफी लगाव था। उन्होंने प्रो. सिन्हा से डॉलफिन कंजर्वेशन प्रोजेक्ट विकासित करने का अनुरोध किया। प्रो. सिन्हा ने यह गंगा प्रोजेक्ट विकासित कर जल्द ही गंगा प्रोजेक्ट डायरेक्टर, भारत सरकार, नई दिल्ली को भेज दिया। 1991 में उनकी इस परियोजना को भी केंद्र सरकार की मंजूरी मिल गई और काम शुरू हो गया। प्रो. सिन्हा ने इस दौरान गंगा डॉलफिन पर इनांशों को भी उनके साथ काम करने लगे थे। 1992 से 1995 तक प्रायः एक हिस्से यूनिवर्सिटी के प्रो. आर. तत्सुकावा ने प्रो. सिन्हा के साथ मिलकर गंगा डॉलफिन के शरीर में भारी धातु एवं अन्य प्रकार की कठोरीटेड फील्डशिक दवाओं की मात्रा और इनसे होने वाली बायोरियों के खारे में शोध किया। अन्तरराष्ट्रीय संस्था, अंतरराष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ के चेयरमैन डॉ. स्टेफेन लेडरबुड ने प्रोफेसर सिन्हा के कार्य से प्रभावित होकर उन्हें स्टैटिस्टिक स्पेशलिस्ट ग्रुप का सदस्य बनाया। इस समूह द्वारा एशियाई नदियों में डॉलफिन के संरक्षण की योजना बनाई गई और इसके लिए गठित कमेटी में भी उन्हें शामिल किया गया।

1990 के पूरे दशक में उन्होंने विदेशी विशेषज्ञों के साथ मिलकर बहुत-सा शोध कार्य किया। अगस्त 1994 में उन्हें यूनिवर्सिटी ऑफ मेनचेस्टर, इंग्लैंड में आयोजित अंतरराष्ट्रीय कांग्रेस ऑफ इकोलॉजी में दो व्याख्यान-गंगा डॉलफिन एवं गंगा कार्य योजना के ऊपर देने के लिए आमंत्रित किया गया। गंगा डॉलफिन के ऊपर किए गए उनके काम की गुणवत्ता और महत्व को देखते हुए अंतरराष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ के सिटीसिइन स्पेशलिस्ट ग्रुप ने 1994 में प्रकाशित कंजर्वेशन एक्शन प्लान में पटना विश्वविद्यालय के प्राणिशास्त्र विभाग में गंगा डॉलफिन के लिए एक रिसर्च केंद्र बनाने के लिए प्रस्ताव शामिल किया। 1995 में डॉ. सैयद जहूर कासिम के नेतृत्व में योजना आयोग की एकटीम ने फैसला लिया कि पटना विश्वविद्यालय में डॉलफिन रिसर्च केंद्र की स्थापना की जाए। इस समय तक प्रो. सिन्हा डॉलफिन संरक्षण को लेकर पूरी दुनिया में प्रसिद्ध हो चुके थे और विदेशी पत्रकार उनकी जिंदगी में दिलचस्पी लेने लगे थे। फ्रांस के एक बड़े पत्रकार क्रिस्टियन गैलरीजिस्यान 1995 से लेकर 2007 तक लगातार हर वर्ष कुछ समय उनके साथ गुजारकर उनके कामों को शूट करते रहे और 2008 में उन्होंने दो डॉक्यूमेंट्री फिल्म-एक

इंग्लिश में 52 मिनट की ‘मिस्टर डॉलफिन सिन्हा-थिंक ग्लोबली ऐंड ऐक्ट लोकली’ और दूसरी फ्रेंच भाषा में 26 मिनट की ‘अलटर्नॉन द गंगोज़’ रिलीज़ की।

वैसे इन दोनों डॉक्यूमेंट्री की रिलीज से पहले जनवरी, 1996 में उन्हें विश्व की पहली बायोलॉजिकल सोसाइटी (1788 में स्थापित)-लिनियन सोसाइटी ऑफ लंदन का फेलो चुना गया। यह सम्मान पाने वाले वे भारत से 16वें और बिहार से पहले वैज्ञानिक थे। फरवरी 1997 में उन्हें बांग्लादेश में आयोजित द्वितीय एशियाई रिवर डॉलफिन समिति का चेयरमैन चुना गया। यह सम्मान हासिल करने वाले वे पहले भारतीय थे। जुलाई 1999 में गंगा डॉलफिन और गंगा की जैवविविधता के लिए किए गए उनके कार्यों को देखते हुए उन्हें नीदरलैंड्स के हिज रोयल हाइनेस प्रिंस बर्नहार्ड द्वारा देश के सर्वोच्च सम्मान ‘द आर्डर ऑफ द गोल्ड आर्क’ से सम्मानित किया गया। यह सम्मान हासिल करने वाले वे 12वें भारतीय हैं जबकि भारत के पहले यूनिवर्सिटी शिक्षक हैं। वर्ष 2000 में उन्हें नेशनल अकादमी ऑफ न्यूयॉर्क जाने का मौका मिला। उन्होंने अमेरिका की कई यूनिवर्सिटीज में व्याख्यान दिए हैं। केंद्र सरकार ने उनकी सेवाओं को देखते हुए 2016 में उन्हें देश के चौथे सबसे बड़े नागरिक सम्मान पदाश्री से सम्मानित किया। 2017 में बिहार के राज्यपाल ने उनकी नियुक्ति नालंदा ओपन यूनिवर्सिटी के कुलपति के रूप में की। फिलहाल प्रो. सिन्हा इसी पद पर अपनी सेवाएं दे रहे हैं।



प्रो. रवींद्र कुमार सिन्हा | 87

ई.रबिन्द्र सिंह

## कठिनाइयों से हासिल किया मुकाम

बिहार के वैशाली जिले के मूल निवासी ई.रबिन्द्र सिंह की कहानी आम लोगों के लिए किसी प्रेरणा से कम नहीं! अगस्त 1967 को वैशाली जिले के महनार में जन्मे रबिन्द्र की शिक्षा आसाम के गुवाहाटी से हुई! ई. बनने के पश्चात रबिन्द्र को भारतीय वायु सेना, इंडियन आयल कॉर्पोरेशन और कॉलेजों में लेक्चरर बनने के ऑफर मिले जिसे उन्होंने ठुकरा दिया क्योंकि वो कुछ अलग और बड़ा करना चाहते थे! उस दौर में रबिन्द्र ने टॉफेल और जी.आर.ई की परीक्षा भी पास की और कनाडा यूनिवर्सिटी से दाखिले का ऑफर आया लेकिन वित्तीय हालात ठीक न होने के कारण रबिन्द्र उच्च शिक्षा हासिल करने विदेश न जा सके!

एक मेघावी छात्र के रूप में पहचान रखने वाले रबिन्द्र ने दिल्ली का रुख किया और सिविल सर्विस की तैयारी आयोग द्वारा आयोजित प्रिलिस की परीक्षा में सफल हुए लेकिन ट्रांसपोर्ट के व्यवसाय में कदम रख देने के कारण उनकी आगे की पढ़ाई अधूरी रह गई! आगे आगे वाले कुछ ही सालों में रबिन्द्र सिंह ट्रांसपोर्ट के व्यवसाय का एक बड़ा चेहरा बन कर उभे और फिर देखते ही देखते इके व्यवसाय ने उद्योग का रूप ले लिया! ई. रबिन्द्र सिंह हाजीपुर स्थित ओवल एग्रोटेक इंडस्ट्रीज के चेयरमेन हैं और बिहार के उद्योग जगत में इनकी अपर्णी एक अलग पहचान है।

बिहार के वैशाली जिले के महनार में जन्मे ई.रबिन्द्र सिंह की न केवल व्यवसाय और उद्योग जगत में अच्छी पकड़ है बल्कि राज्य की राजनीति में भी लोग उनका लोहा मानते हैं! रबिन्द्र बताते हैं कि उनकी प्रारंभिक शिक्षा असम के गुवाहाटी में हुई और श्री गुरुनानक नेशनल हाई स्कूल से 1983 में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की! गुवाहाटी के आर्य विद्यालय से 1985 में इन्होंने इण्टर की परीक्षा पास की और असम के जोरहाट इंजिनियरिंग कॉलेज से 1990 में फर्स्ट क्लास अॉनर्स के साथ दूसरा स्थान प्राप्त कर डिग्रॉड़ असम यूनिवर्सिटी में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया।

पढ़ाई के दौरान रबिन्द्र सिंह को इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन, भारतीय वायुसेना के अलावा असम यूनिवर्सिटी से लेक्चररशिप का ऑफर आया लेकिन रबिन्द्र इन नौकरियों के लिए तैयार

नहीं हुए! वे इसी साल टॉफेल और जी.आर.ई की परीक्षा में भी पास हुए और उन्हें कनाडा यूनिवर्सिटी से दाखिले का ऑफर मिला लेकिन मात्री हालत कमज़ोर होने के कारण रबिन्द्र को इस ऑफर का त्याग करना पड़ा और फिर सिविल सर्विसेस की परीक्षाओं की तैयारी को ध्यान में रखकर नवम्बर 1990 में वे असम से दिल्ली आ गए।



रविन्द्र ने पैसों की तंगी के बीच 14 दिसम्बर, 1990 को दिल्ली से ट्रांसपोर्ट का व्यवसाय आरम्भ किया और खाली समय में संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित की जा रही परीक्षाओं की तैयारी में भी जुट गए! 1992 में लोक सेवा आयोग द्वारा जारी प्रिलिम्स परीक्षा पास तो हुए लेकिन व्यवसाय में व्यास्त होने के कारण वे मैन्स की परीक्षा में सफल न हो सके। 1994 में उनका विवाह साधना सिंह के साथ संपन्न हुआ और विवाहोपरांत उन्होंने व्यवसाय ने जोर पकड़ा! साल 1995 में रविन्द्र ने विहार के अलावा नार्थ इस्ट, बंगल, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान और गुजरात में अपने ट्रांसपोर्ट व्यवसाय को बढ़ाया और सभी राज्यों में कंपनी के कार्यालयों की शुरूआत हुई!

रविन्द्र कहते हैं कि 1998 का दौर व्यापार जगत के लिए भारी मंत्री लेकर आया, व्यापार में भारी नुकसान हुआ और बाजार में पूँजी फंस जाने के कारण यह साल काफी परेशानी भरा रहा। बाबजूद इसके हमारी कंपनी का सालाना टर्न ओवर 12-13 करोड़ रुपए का रहा!

रविन्द्र आगे बताते हैं कि वर्ष 2002 में जब नीतीश कुमार भारत सरकार में रेल मंत्री बने तो उन्होंने ट्रांसपोर्ट के लिए रेलवे द्वारा लीज पार्सल वैन की नई योजना शुरू की इसके तहत



सरकार द्वारा लीज पार्सल वैन और लीज एस.एल.आर को 3 साल के लिए टेंडर पर देने की योजना पर काम शुरू हुआ। ऐसे में हमारी कंपनी टी एंड एस लॉजिस्टिक प्राइवेट लिमिटेड आगे आई और हमने रेलवे से हाथ मिलाकर नार्थ इस्ट को ट्रैन से मुंबई, दिल्ली, बैंगलोर, चेन्नै एवं कोलकाता को एक दूसरे से जोड़ दिया। काम ने रफ्तार पकड़ी और 2006 आते-आते कंपनी का टर्न ओवर 30 करोड़ रुपए पहुँच गया साथ ही ट्रांसपोर्ट व्यवसाय को रेल और हवाई मार्ग से जोड़ देने के कारण हमारी लोकप्रियता बढ़ने लगी।

बदलते समय के साथ में कंपनी का टर्न ओवर भी लगातार बढ़ रहा था, साथ ही राशीय स्तर पर काम करने के कारण कंपनी को पूँजी की जरूरत महसूस होने लगी। ऐसे में रविन्द्र सिंह और उनकी कंपनी को किसी पार्टनर की जरूरत थी। 2009 आते-आते कंपनी का टर्न ओवर 30 करोड़ से बढ़कर 80 करोड़ रुपए तक जा पहुँचा। ऐसे में रविन्द्र ने सालाना 200 करोड़ के टर्न ओवर की योजना पर काम शुरू किया और बैंक से वित्तीय सहायता ली, लेकिन यार्टर्नों के कारण कंपनी को भारी घटे के दौर से गुजरना पड़ा। 2011 में रविन्द्र ने पार्टनरों से अलग होकर सुधः ट्रांसपोर्ट के इस व्यापार को खड़ा किया और अपने भाईयों को जमा जमाया व्यापार सौंप कर वापस पटना आ गए।

यदि रविन्द्र की मार्गें तो पोल्ट्री उद्योग उन्हिंने विहार में काफी पीछे था। साथ प्रदेश में हैंचिंग एस्स का उत्पादन और ब्रीडिंग फार्म भी नहीं था। रविन्द्र ने इस बावत सर्वे कराया तो पता लगा कि विहार में प्रतिहाह ढेड़ करोड़ चूज़ों की जरूरत थी और इन चूज़ों का विहार में आयात किया जाता था। रविन्द्र सिंह ने बगैर देरी किये योजना बनाई कि यदि इनका उत्पादन विहार में शुरू किया जाए तो राज्य को काफी फायदा होगा। साल 2012 में रविन्द्र ने आंवल एंट्रोपेक प्राइवेट लिमिटेड नामक कंपनी की स्थापना की और 6 लाख चूज़ों के प्रतिहाह उत्पादन का लक्ष्य बना 8 करोड़ की लागत से हैंचरी एवं विहार के पहले ब्रीडिंग फार्म की शुरूआत की। हाजीपुर औद्योगिक इलाके में शुरू हुए इस उद्योग में सभी आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर और वातावरण का पूरा ध्यान रखते हुए ऐसे शुरू किया गया।

विहार के पोल्ट्री उद्योग के सिरमौर कहे जाने वाले ई. रविन्द्र सिंह ने इस व्यवसाय में लाखों लोगों को आगे बढ़ाया और आज प्रदेश में 30 लाख लेयर एक्स यानी खाने वाले अण्डों का उत्पादन हो रहा है। साथ ही विहार के सैकड़ों करोड़ रुपए की रकम जो प्रदेश के बाहर जा रही थी, अब वही रकम प्रदेश के विकास में काम आ रही है।

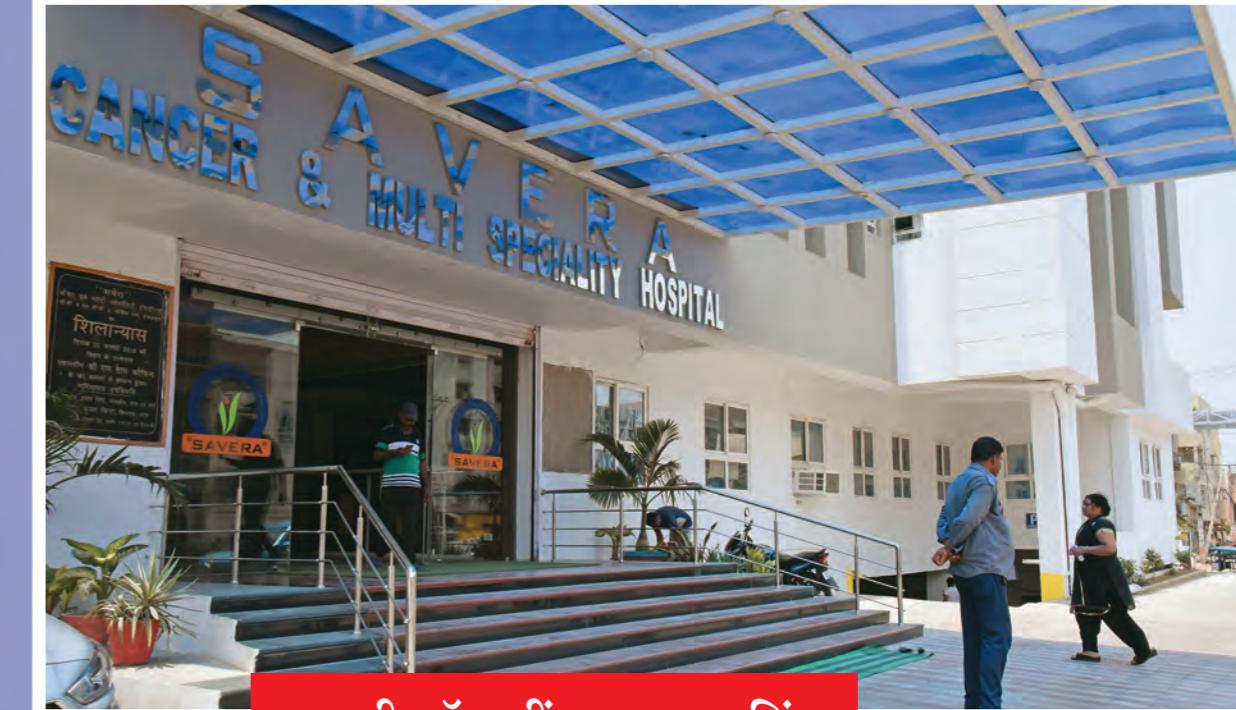


जिसपर तेज़ी से काम चल रहा है! रविन्द्र की कंपनी ने इसी साल वैशाली ज़िले के लालगंज में 12 एकड़ ज़मीन पर 21 करोड़ रुपए की लागत से विहार के सबसे बड़े लेयर एग के उत्पादन की योजना पर काम शुरू किया है जो न केवल सभी प्रकार के अन्याथुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर से लैस होगा बल्कि अण्डों का संग्रह भी स्वचालित फीडिंग के द्वारा किया जाएगा। जून 2020 में शुरू होने जा रहे इस उद्योग में प्रतिदिन 1 लाख 80 हजार अण्डों के उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है।

एक सफल उद्योगपति और राजनीतिक के तौर पर रविन्द्र सिंह के जीवन का सफर शानदार रहा है! अपनी व्यावसायिक सोच के जरिए सिंह ने जिस प्रकार अपने राज्य को सशक्त बनाया है, उसी प्रकार राजनीति में रहकर वे विहार को और

मजबूत बनाना चाहते हैं। जानकारों का मानना है कि यदि रविन्द्र उद्योग के जरिए अण्डों के आयात को कम कर विहार को अर्थिक तौर पर सशक्त बना सकते हैं तो ऐसा व्यक्ति राजनीतिक तौर पर क्या कुछ नहीं कर सकता। रविन्द्र सिंह द्वारा इसी साल 25 फरवरी को पटना के ऐतिहासिक गाँधी मैदान में आयोजित राशीय समान अधिकार यात्रा महारौली में पूरे प्रदेश से लाखों लोगों का गाँधी मैदान पहुँचना रविन्द्र की राजनीतिक लोकप्रियता के साथ साथ उनकी बेहतर सोच को भी दर्शाता है। आउटलुक हिंदी में 5 नवम्बर, 2018 को प्रकाशित एक इंटरव्यू में उन्होंने कहा था कि मेरा राजनीतिक सोच तुषीकरण की राजनीति को छोड़कर जात-पात और बगैर धर्म की बात किये मानव समाज के निर्माण का है ताकि सभी को सामान रूप से विकास का अवसर मिल सके। इसके लिए हमें समान

शिक्षा व्यवस्था, समान पाठ्यक्रम को पूरे देश में लागू करना होगा ताकि सभी वर्ग, जाति, सम्प्रताय के अलावा गरीब और अमीरों के बच्चे भी एक ही छत के नीचे शिक्षा ग्रहण कर सकें। इसी प्रकार स्वास्थ्य के लिए प्रयेक प्रबंध में मल्टी स्पेशलिटी अस्पतालों का निर्माण हो ताकि लोगों को आधुनिक चिकित्सा सुविधाएँ मिल सकें। किसानों को सही निति के तहत उन्हें अपने उत्पादों का मूल्य निर्धारित करने का अधिकार मिले, जिसके तहत प्रखंड स्तरीय एक ऐसे कृषि बाजार का निर्माण हो जिसमें वे अपनी फसल को बेच सकें और उसी बाजार से व्यापारी या फेक्टरी मालिक खरीद भी सकें। ताकि मूल्यों पर नियंत्रण रखा जा सके, यदि ऐसा होता है तो बेशेजारी स्वतः समाप्त होगी और देशवासी स्वरोजगार शुरू कर सकेंगे।



पद्मश्री डॉ. रबींद्र नारायण सिंह

## स्वास्थ्य और समाज को समर्पित

डॉ. रबींद्र नारायण सिंह बिहार के चिकित्सा क्षेत्र का एक प्रसिद्ध नाम हैं। उन्होंने चिकित्सा और परोपकार दोनों क्षेत्रों में व्यापक काम से एक अलग पहचान बनाई है। वे देश के प्रसिद्ध रोटेरियन और ऑर्थोपेडिक विशेषज्ञ हैं। डॉक्टर सिंह ने अपने कैरियर के शुरुआती दौर में बहुत संघर्ष किया और पटना के कदमकुआं इलाके में एक छोटे से कार गैराज से अपने क्लिनिक की शुरुआत की। समय के साथ उनकी शोहरत बढ़ती गई। बाद में उन्होंने कंकड़बाग में अनूप इंस्टीट्यूट ऑफ ऑर्थोपेडिक एंड रिहैबिलिटेशन की स्थापना की। इसके अलावा पटना में उन्होंने सभी अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त सवेरा कैंसर एंड मल्टी स्पेशियलिटी हॉस्पिटल के नाम से एक बहुत बड़े अस्पताल की शुरुआत की है जिसका उद्घाटन हाल ही में हुआ है। उन्होंने बिहार के सहरसा स्थित अपने गोलमा गांव में भी एक मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल की शुरुआत की है। उनकी उपलब्धियों को देखते हुए आउटलुक पत्रिका समूह ने 2018 में उन्हें 'आइकन्स ऑफ बिहार' अवार्ड से सम्मानित किया है।

बिहार के सहरसा जिले के गोलमा गांव में जमे डॉ. रबींद्र नारायण सिंह ने 1970 में पटना मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस की पढ़ाई की और 1976 में उसी कॉलेज से एमएस की पढ़ाई पूरी की। इसके बाद उन्होंने उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैंड का विकल्प चुना और नॉटिंघम में कर्वीस मेडिकल कॉलेज के एनाटॉमी विभाग में शिक्षक के रूप में काम करने के अलावा और भी कई संस्थानों में काम किया। उच्च शिक्षा के लिए विदेश जाने से पहले डॉक्टर सिंह पटना के नालंदा मेडिकल कॉलेज में एनाटॉमी के शिक्षक थे।

1976 में डॉ. रबींद्र ने एडिनबर्ग के रॉयल कॉलेज ऑफ सर्जन्स (एफआरसीएस) की फैलोशिप प्राप्त की। वे लंबे समय तक इंग्लैंड में रहे और लिवरपूल विश्वविद्यालय से

आर्थोपेडिक्स में एमसीएच डिग्री प्राप्त की। एक प्रतिभाशाली छात्र के रूप में विख्यात डॉ. रबींद्र को विदेशों से नौकरियों के कई प्रस्ताव मिले। लेकिन उनके पिता, जो कि अपने समय के मशहूर जिला जज थे, की इच्छा थी कि रबींद्र एमएस की पढ़ाई पूरी की। इसके बाद उन्होंने उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैंड का विकल्प चुना और नॉटिंघम में कर्वीस मेडिकल कॉलेज के एनाटॉमी विभाग में शिक्षक के रूप में काम करने के अलावा और भी कई संस्थानों में काम किया। उच्च शिक्षा के लिए विदेश जाने से पहले डॉक्टर सिंह पटना के नालंदा मेडिकल कॉलेज में एनाटॉमी के शिक्षक थे।

देश लौटने के बाद से डॉ. रबींद्र पटना के कंकड़बाग क्षेत्र में 27 साल पुराने राधा वल्लभ हेल्थ केयर एंड रिसर्च फाउंडेशन और अनूप इंस्टीट्यूट ऑफ आर्थोपेडिक्स एंड रिहैबिलिटेशन के अध्यक्ष के रूप में अपनी सेवा दे रहे हैं। उनके साथियों के अनुसार, डॉ. रबींद्र द्वारा चलाए जा रहे 100 बेड वाले इस अस्पताल में अति आधुनिक सुविधाएं समय तक इंग्लैंड में रहे और लिवरपूल विश्वविद्यालय से



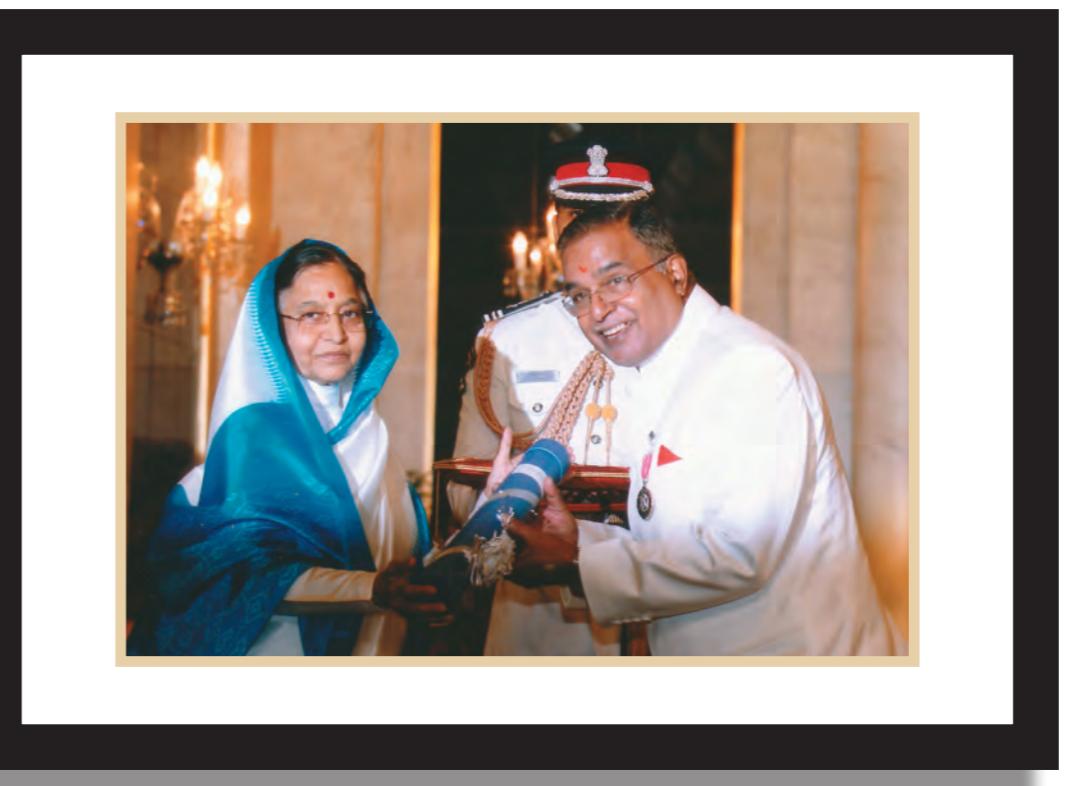
94 | डॉ. रबींद्र नारायण सिंह

चार ही बड़े अस्पताल हैं-संचेती अस्पताल, पुणे; कुलकर्णी संस्थान, मिराज; गंगा अस्पताल, पुढुचेरी और भट्टाचार्य इंस्टीट्यूट ऑफ आर्थोपेडिक्स, कोलकाता। डॉ. रबींद्र नारायण सिंह का झुकाव हमेशा से सामाजिक कार्यों की तरफ रहा। यही कारण है कि वे 1983 में पटना में रेडक्रॉस सोसाइटी के साथ जुड़ गए। लगभग तीन दशक पहले उन्होंने हर मंगलवार को 20 मरीजों को मुफ्त इलाज देना शुरू किया और आज भी यह क्रम जारी है। वर्ष 1990 तक डॉ. रबींद्र पटना के राजेंद्र नगर इलाके के एक अनाथालय किशोर दल शिशु भवन से जुड़ चुके थे। डॉ. रबींद्र के परोपकार के कार्यों में उत्साह और प्रतिबद्धता को महसूस करते हुए शिशु भवन के तत्कालीन व्यवस्थापक रंजीत भाई को उनसे बहुत अधिक उम्मीदें थीं। डॉ. रबींद्र रंजीत भाई की उम्मीदों पर खरे

उतरे और उनकी मदद से भवन में करीब 30 अनाथ बच्चियों को आश्रय मिला। बाद में इन लड़कियों के लिए पास के रबींद्र बालिका विद्यालय में मुफ्त शिक्षा का इंतजाम किया गया। आखिरकार, उन्होंने न केवल इन लड़कियों की शारीरिक विकास का उन्नति करने में मदद की बल्कि उन्हें अपने निजी अस्पताल में रोजगार भी दिया। डॉ. रबींद्र 1994 से ही पटना के कुम्हरर स्थित एक संस्था अंतर्ज्योति बालिका विद्यालय के सदस्य के रूप में भी जुड़ हुए हैं। डॉ. रबींद्र की एक अन्य परोपकारी पहल भारत में लड़कियों के घटते अनुपात और उनकी शिक्षा की चुनौती पर केंद्रित है। इन मुद्दों का हल निकालने के लिए उन्होंने अपनी मां स्वर्गीय इंदु देवी की याद में 'इंदु देवी छात्रा प्राप्ताहन राशि' की शुरूआत की। इस पहल के तहत उनके पैतृक गांव गोलमा की मेधावी छात्राओं को छात्रवृत्ति दी जाती है, ताकि वे बिना किसी बाधा के अपने अध्ययन को पूरा कर सकें और एक स्वस्थ तथा प्रगतिशील राष्ट्र के विकास में योगदान दे सकें। 2003 में उनकी तीसरी बेटी पुष्पांजलि सिंह की असामियक और आकस्मिक मौत ने डॉ. रबींद्र और उनकी पत्नी कविता सिंह को गरीब बच्चों को मुफ्त शिक्षा और छात्रवृत्ति देने के लिए एक और पहल शुरू करने के लिए प्रेरित किया। 'पुष्पांजलि शिक्षा केंद्र' नाम से शुरू इस संस्थान की जिम्मेदारी कविता सिंह खुद संभालती हैं। यह केंद्र गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले दर्जनों लड़के और लड़कियों को मुफ्त शिक्षा देता है। डॉ. आर.एन. सिंह का मानना है कि किसी को सशक्त बनाने में शिक्षा से



डॉ. आर.एन. सिंह के पुत्र और प्रसिद्ध नी ऐंड हिप रिप्लेसमेंट विशेषज्ञ डॉ. आशीष सिंह



अधिक किसी चीज का योगदान नहीं है। इसीलिए अपने कई प्रयासों से वे खुद संतुष्ट नहीं होते और अपने व्यस्त कार्यक्रम के बावजूद 'हर एक को एक सिखाए' के सिद्धांत का प्रचार करना जारी रखते हैं। इसके तहत डॉक्टर सिंह समाज के अच्छे लोगों से एक कन्या को अपाने और उसकी शिक्षा की जिम्मेदारी लेने की अपील करते हैं, ताकि वह समाज की मुख्यधारा में आ सके।

2009 में बिहार के तत्कालीन राज्यपाल आर.एल. भाटिया ने डॉ. रबींद्र को रेडक्रॉस में उनके काम के लिए स्वर्ण पदक से सम्मानित किया था। 2010 में, उन्हें सामाजिक कार्यों और चिकित्सा क्षेत्र में उनके योगदान के लिए पद्मश्री से सम्मानित किया गया। पद्मश्री डॉ. रबींद्र न केवल पटना में बिहार नेत्रहीन परिषद के अध्यक्ष के रूप में काम कर रहे हैं, बल्कि नेत्रहीन लोगों को मुख्यधारा में लाने के उनके प्रयास सभी के लिए एक सशक्त उदाहरण हैं। डॉ. रबींद्र के जीवन पर दिनेस आनंद द्वारा निर्देशित एक फिल्म 'ए डॉक्यूमेंटी ऑन डॉ. रबींद्र' यू-ट्यूब पर सर्च करके देखी जा सकती है।

डॉ. रबींद्र नारायण सिंह | 95

डॉ.रविशंकर उर्फ बच्चन सिंह

## संघर्ष ने दिलाई सफलता की राह

छात्रों द्वारा शिक्षकों को दिए जाने वाले आदर और सम्मान को देखते हुए डॉ.रविशंकर सिंह उर्फ बच्चन सिंह ने छात्र जीवन में ही शिक्षा के क्षेत्र में कृतिअर बनाने का फैसला ले लिया था!

रविशंकर कहते हैं कि पूर्व में विश्वविद्यालयों में जितनी नियक्तियां हुआ करती थीं, वे राज्य सरकार या कुलपति द्वारा गठित कमिटी द्वारा की जाती थीं लैंकिन जब मेरा छात्र जीवन समाप्त हुआ उस दौरान यूनिवर्सिटी सर्विस कमीशन बहाल हुआ और इस कमीशन को छात्रों के दाखिले का अधिकार मिला! दो बार हुए इंटरव्यू में भी मेरा चयन न हो सका लेकिन शिक्षा के प्रति मेरे गहरे लगाव के कारण 1989 में मैंने बॉटनी के प्रब्ल्याट शिक्षक डॉ. ( प्रो ) अशोक कुमार सिन्हा ( अब दिवंगत ) के माध्यम से कोचिंग जगत में कदम रखा और छात्रों के बीच अपनी एक अलग पहचान बनाई! उन्होंने 90 के दशक में पटना के कंकड़बाग इलाके से गाइडेंस नाम से एक निजी कोचिंग संस्थान की शुरुआत की और आगे आने वाले वक्त में उन्हें वह सब कुछ मिला जिसे रूपयों से खरीदा जा सकता है और वह भी मिला जिसे पैसों से कभी खरीदा नहीं जा सकता!





98 | डॉ.रविशंकर

इस दौरान यूनिवर्सिटी कमिशन द्वारा लिए गए एक इंटरव्यू में बच्चन को अविभाजित बिहार (अब झारखण्ड) से नौकरी का ऑफर मिला लेकिन उन्होंने इस नौकरी का परित्याग कर दिया! बिहार के शिक्षा जगत में अपनी अलग पहचान बना चुके डॉ.रविशंकर ने 2012 में पटना के निसरुपुरा में गाइडेंस इंटर कॉलेज की स्थापना की और 2014 में गाइडेंस नर्सिंग एंड एलाइड साईंसेस के अलावा दीक्षा पारामेडिकल की भी शुरुआत की। आज बच्चन द्वारा स्थापित इन संस्थानों में कीवी 1500 छात्र-छात्राओं के अलावा 100 से अधिक अधिकारी और कर्मचारी काम कर रहे हैं। 24 जनवरी, 2018 को प्रकाशित इंडिया डुडे के अंक में डॉ.रविशंकर के सफलता की कहानी को प्रमुखता से प्रकाशित किया जा चुका है।

5 अप्रैल, 1963 को पटना में जन्मे डॉ.रविशंकर सिंह उर्फ बच्चन सिंह का नाम आज बिहार के शिक्षा जगत में बड़े ही सम्मान के साथ लिया जाता है। पटना विश्वविद्यालय से 1986 में एमएससी की डिग्री हासिल करने के पश्चात बच्चन ने 1988 में एलएलबी किया और फिर इसी यूनिवर्सिटी से 1989 में पीएचडी की डिग्री ली। पटना साइंस कॉलेज के छात्र रहे रविशंकर लगातार 3 वर्ष तक कॉलेज स्थित कामन रूम के सचिव रहे और इस दौरान उन्होंने कॉलेज के छात्र-छात्राओं के अलावा अपने शिक्षकों के दिलों में एक अलग जगह बनाई।

उनके परिवार के सदस्य बताते हैं कि बच्चन आरम्भ से ही न केवल मेघावी छात्र थे बल्कि एक कुशल समाजसेवी होने के साथ-साथ एक कुशल मोटिवेटर भी थे। बच्चन के पिता और प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी स्व.शशुचन प्रसाद सिंह उन दिनों पालीगंज स्थित मसौदा मिडिल स्कूल के प्रधानाध्यापक थे और वे चाहते थे कि बच्चन डॉक्टर बने लेकिन तबतक बच्चन ने अध्यापन के क्षेत्र में उत्तरने का मन बना लिया था। यह वो दौँथा था जब रविशंकर को न केवल एक पेट्रोलियम कंपनी से उच्च पद पर नौकरी का ऑफर मिला बल्कि अविभाजित बिहार (अब झारखण्ड में) के एक प्रसिद्ध कॉलेज से लेक्चररशिप का ऑफर भी आया लेकिन अपने दिल की सुनने बात वाले इस शख्स ने एक बार फिर अपने दिल की ही सुनी और इन दोनों ही ऑफरों को टुकड़ा किया।

रविशंकर के कई मित्र बताते हैं कि स्कूल के दिनों से ही बच्चन की खेलों में गहरी रुचि थी और बैडमिंटन, वॉलीबाल एवं क्रिकेट के बेहतरीन खिलाड़ियों में उनका नाम शुभार था। यदि वे चाहते तो खेल जगत में भी अपना कैरियर बना सकते थे लेकिन बच्चन ने शिक्षा जगत की तरफ अपने कदम बढ़ाये और सफल हुए।

1987 में डॉ.रविशंकर उर्फ बच्चन सिंह पटना के बी.एम. दास रोड स्थित एक निजी कॉर्सिंग संस्थान के सहयोग से



अपने विषय बायोलॉजी के साथ छात्रों के सामने आये और एनाटॉमी, हिस्ट्रोलॉजी और फिजिओलॉजी पढ़ना आरम्भ किया। उन्होंने 1987 के अंतिम माह में पटना के कंकरबाग इलाके में गाइडेंस नाम से एक छोटे-से कोचिंग संस्थान की शुरुआत की और फिर देखते ही देखते इस संस्थान आकार तेजी से बढ़ने लगा। जानकार बताते हैं कि डॉ.रविशंकर ने अपने ज्ञान, अपने विषय पर पकड़ और मोटिवेशनल क्षमता की बढ़ाई जिस तेजी से सफलता पायी है, वह खुद में एक मिसाल है।

नीट बायोलॉजी और आईआईटी की तैयारियों के लिए प्रसिद्ध इस संस्थान ने अभी हाल के वर्षों में जो रिजन्ट दिए हैं वे इस संस्थान के नाम की सार्थकता को सिद्ध करते हैं। डॉ.सिंह बताते हैं कि इस संस्थान से राज्य में सबसे कम फीस और अनुशासन के साथ अच्छी पढाई के लिए कि जाना जाता है, इसके साथ ही हमने गर्भी रेखा से नीचे जिन्दगी बसार कर रहे बच्चों की निशुल्क शिक्षा को ध्यान में रखकर एक मुहिम की भी शुरुआत की है जिसके तहत बी.पी.एल के बच्चों को चिन्हित कर उन्हें शिक्षा प्रदान की जा रही है ताकि वे भी समाज की मुख्यधारा में आ सकें।

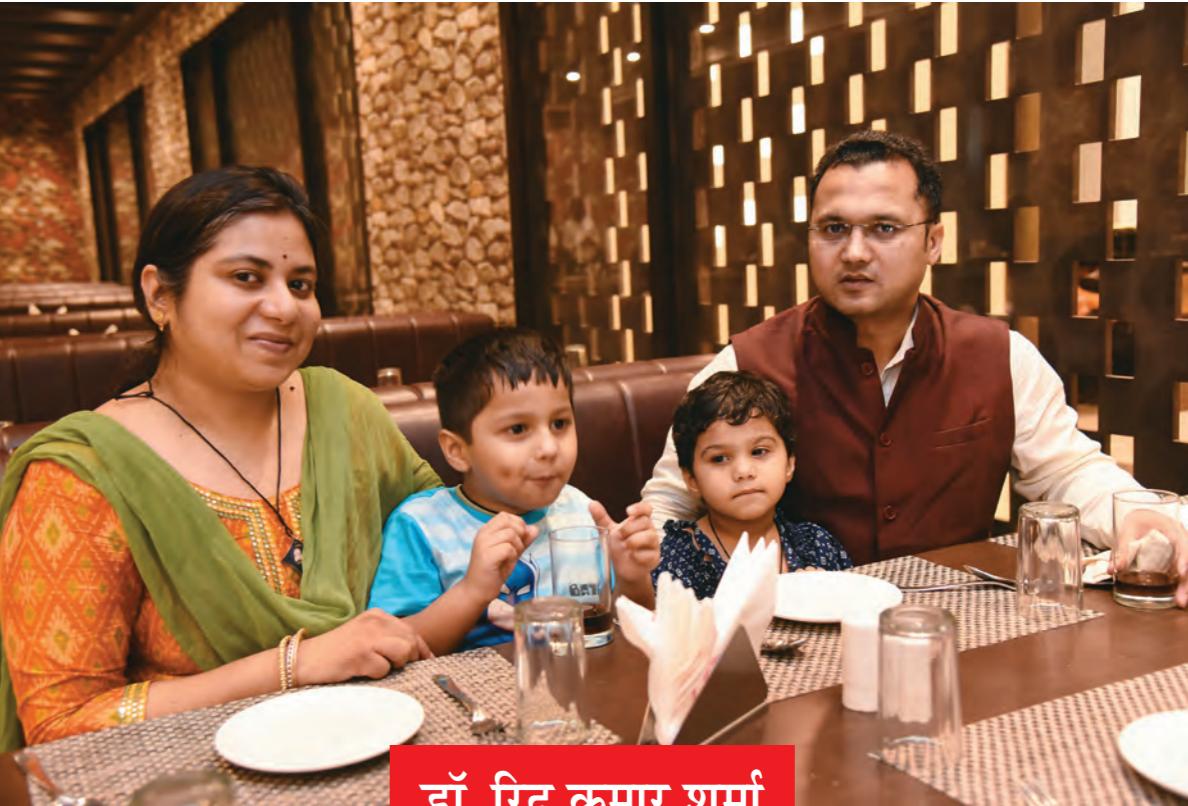
बिहार के शिक्षा जगत में अपनी अलग पहचान बना चुके डॉ.रविशंकर उर्फ बच्चन सिंह ने 2012 में पटना के निसरुपुरा में गाइडेंस इंटर कॉलेज की स्थापना की और इसके दो साल बाद 2014 में पटना के कंकरबाग इलाके में गाइडेंस नर्सिंग एंड एलाइड साईंसेस के अलावा दीक्षा पारामेडिकल की भी स्थापना की जहाँ पढ़ रहे बच्चे-बच्चियों को उच्च कोटि की शिक्षा प्रदान की जा रही है।

शिक्षा के क्षेत्र में कई प्रतिष्ठित अवाइर्स अपने नाम कर चुके डॉ.रविशंकर कहते हैं कि मैं अवाइर्स के लिए नहीं बल्कि अपनी संस्था की तरकी के लिए अवाइर्स का होना भी आवश्यक है। मैं इसे अपना सौभाग्य मानता हूँ कि हाल के वर्षों में कुछ प्रमुख समाचार पत्रों, टीवी चैनलों के अलावा कई स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा मुश्के सम्मानित किया गया। व्यस्तता के कारण अक्सर इस प्रकार के कार्यक्रमों में मैं स्वयं शिरकत नहीं कर पाता लेकिन अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से उपस्थिति दर्ज करवाने की हरसंभव कोशिश करता हूँ।

बहरहाल, इतना तो तय है कि 30 साल पुराने इस गाइडेंस ने पीढ़ियों के अनुभव के साथ शिक्षा की गुणवत्ता को जिस प्रकार काम रखा है, उसका श्रेय न केवल बच्चन सिंह को जाता है बल्कि इस संस्थान के छात्र-छात्राओं की भी इसमें अहम् भूमिका है।



100 | डॉ. रिदु कुमार शर्मा



डॉ. रिदु कुमार शर्मा

## अद्भुत और वेमिसाल शोहरत के धनी

फरवरी 1982 में पटना के नौबतपुर के कोरावां गाँव के एक किसान परिवार में जन्मे डॉ. रिदु कुमार शर्मा के संघर्ष की कहानी काफी दिलचस्प है। करीब पांच हजार की आबादी वाले इस गाँव में दूर-दूर तक कोई डॉक्टर न था। रिदु के पिता अरविन्द कुमार शर्मा पढ़-लिखे किसान थे और उनकी चाहत थी कि उनका पुत्र पढ़-लिखकर चिकित्सक बने और गरीबों की सेवा करे। रिदु मेघावी छात्र थे लेकिन परिवार की आर्थिक हालत अच्छी न थी। ऐसे में पटना के महेन्द्र इलाके में एक लॉज में रहकर उन्होंने मेडिकल की तैयारी शुरू की।

कड़ी मेहनत, संघर्ष और बुलंद हौसले के बीच रिदु की मेहनत रंग लाई और आज उनकी शिवार के प्रमुख ऑन्कोलॉजिस्ट यानी कैंसर रोग विशेषज्ञों में की जाती है।

मगध कैंसर फाउंडेशन के संस्थापक और बिहार के जनेमाने कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. रिदु कुमार शर्मा ने अल्पावधि में जो शोहरत हासिल की है वह अद्भुत है, और वेमिसाल भी। पटना के नौबतपुर के निकट त्रिभुवन हाई स्कूल से प्राइमरी शिक्षा ग्रहण करने वाले रिदु शर्मा ने इसी विद्यालय से 1997 में मैट्रिक और 1999 में नौबतपुर स्थित मालतीधारी कॉलेज से आई.एस.सी की परीक्षा पास की। डॉ. रिदु कहते हैं कि परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने के कारण निजी तौर पर शिक्षक से पढ़ पाना मुश्किल सा था, ऐसे में सारी पढ़ाई मुझे खुद ही करनी पड़ी। पिता अरविन्द कुमार शर्मा चाहते थे कि उनका पुत्र पढ़-लिखकर डॉक्टर बने। ऐसे में पिता की चाहत का सम्मान करना उनका फर्ज भी था और उनकी चाहत भी। इन्हीं सब परिस्थितियों के बीच रिदु 1999 में पटना आ गए।



और महेन्द्र इलाके में स्थित एक लॉज में रहकर मेडिकल परीक्षाओं को तैयारियों में जी-जान से जुट गए। 2002 में अॉल इंडिया सी.बी.एस.सी./पी.एम.टी. द्वारा आयोजित परीक्षा के नतीजे काफी चौकाने वाले थे क्योंकि रिटु शर्मा ने राष्ट्रीय स्तर पर 260वाँ रैंक हासिल किया था। एक अत्यंत मेघावी छात्र के रूप में पहचान बना चुके रिटु शर्मा ने 2002 में मुंबई के प्रसिद्ध लोकमान्य तिलक मेडिकल कॉलेज में दाखिला लिया और 2002 से 08 तक इसी कॉलेज से पढ़कर एम.बी.बी.एस की डिग्री हासिल की। गाँव के लोगों और परिवार के सदस्यों की खुशी और उत्साह के बीच डॉ. शर्मा को अब अपनी जिम्मेवारियां भी बढ़ती दिखाई दे रही थीं। ऐसे में उहाँने पी.जी.आई चंडीगढ़ का रुख किया और 2009 से 2012 तक खूब दिल लगाकर पढ़ाइ की और रेडिएशन ऑन्कोलॉजी में पास्ट ग्रेजुएट किया।

कुछ कर गुजरे की चाहत के बीच 2013 में डॉ. शर्मा ने पटना स्थित महावीर कैंसर संस्थान में अपना योगदान दिया और ग्याह महीने तक सेवाएं दीं। दिसम्बर 2013 में डॉ. रिटु शर्मा ने बतौर सीनियर रेजिडेंट पटना स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान यानी आई.जी.आई.एम.एस में अपना योगदान दिया और इसी साल त्रिवेंद्र स्थित रीजनल कैंसर सेंटर से मेडिकल ऑन्कोलॉजी में डी.एम के लिए दाखिला लिया और 2014-17 में डॉ.एम की डिग्री हासिल की। इस अवधि में डॉ. शर्मा ने त्रिवेंद्र में रहकर केमोथेरेपी, टार्गेट थेरेपी, बोन मेरो ट्रांसप्लांट और इम्युनो थेरेपी आदि का भी प्रशिक्षण हासिल किया और 2017 में वापस पटना आ गए। श्रीकृष्णापुरी इलाके से अपनी निजी प्रैक्टिस की शुरुआत की। पटना स्थित यासस एच.एस.आर.आई हॉस्पिटल द्वारा उन्हें बतौर कैंसलेटेंट मेडिकल ऑन्कोलॉजिस्ट के पद पर काम का ऑफर मिला जिसे डॉ रिटु शर्मा ने स्वीकार कर लिया। प्रदेश के ख्यात प्राप्त चिकित्सक, इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष और डॉ.बी.सी.राय राष्ट्रीय अवार्ड से सम्मानित डॉ.सहजानंद प्रसाद सिंह कहते हैं कि यदि हम डॉ. रिटु शर्मा की उम्र से नहीं बल्कि योग्यता के पैमाने पर उनके कार्यों का मूल्यांकन करेंगे तो पाएंगे कि उनके व्यक्तित्व में कुछ खास है। सफलता उपर नहीं बल्कि, योग्यता को आधार बना आपके दरवाजे पर दस्तक देती है और आपको देश में ऐसे कई उदाहरण मिल जायेंगे।

डॉ. सहजानंद आगे कहते हैं कि ऑन्कोलॉजी बड़ा जटिल विषय है और जिस प्रकार डॉ. शर्मा हिमेटो ऑन्कोलॉजी, पेडियाट्रिक ऑन्कोलॉजी और बोन मेरो ट्रांसप्लांट फिजिशियन के तौर पर काम कर रहे हैं, ऐसे में पूरे भरोसे के साथ कहा जा सकता है कि यह शाखा प्रदेश के चिकित्सा जगत में एक नई लकीर खींचेगा। अपने पेशे से संबंधित कई विषयों में फेलोशिप हासिल कर चुके डॉ.शर्मा न केवल इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के आजीवन सदस्य हैं बल्कि

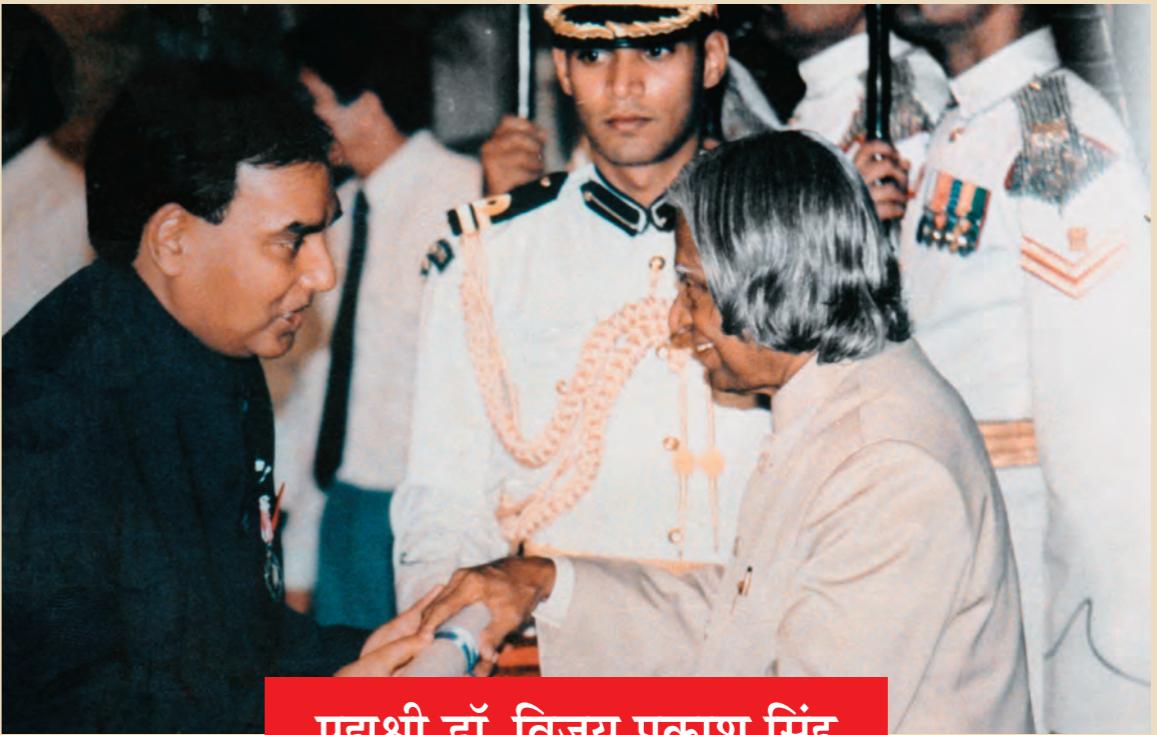


भारत के प्रसिद्ध कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. आडवाली के साथ डॉ. रिटु कुमार शर्मा



ICON और ESMO( Europaen society of medical oncology) के सदस्य भी हैं। एक कैंसर विशेषज्ञ के तौर पर डॉ.शर्मा इस बात को लेकर काफी चिंतित हैं कि बच्चों में भी यह बीमारी तेजी से बढ़ रही है विशेषकर ब्लड कैंसर, ब्रेन ट्यूमर, किंडनी कैंसर, सॉफ्ट इंश्यू सार्कोमा और बोन ट्यूमर आदि।

डॉ. शर्मा की पत्नी डॉ. प्रसन्नता कहती हैं कि हमने मगध कैंसर फाउंडेशन की शुरुआत कैंसर रेगियों को जागृत करने के मकसद से की थी। हमारा मानना है कि रेगियों का उपचार जितना जरूरी है उतनी ही जरूरत उन्हें जागृत करने की भी है। मैं एक फॅमिली फिजिशियन हूँ और मेरा भी यह दायित्व बनता है कि हम समय-समय पर जागरूकता अधियान चलाकर लोगों को उन पदार्थों से दूर रहने को कहें जो कर्क रोग के प्रमुख कारण हैं। मगाथ कैंसर फाउंडेशन द्वारा समय-समय पर शहरों और गांवों में जागरूकता अधियान चलाया जाता है जिसमें तब्बाकू और सिगरेट से बचाव और उपायों पर चर्चा की जाती है। डॉ. रिटु कहते हैं कि मुझे समय-समय पर बिहार और राज्य के बाहर भी फैकल्टी लेक्चर के लिए आमंत्रित किया जाता है और मैं जहाँ भी जाता हूँ, लोगों को एक बात जरूर कहता हूँ कि आम लोग जब तक तम्बाकू का बहिष्कार नहीं करेंगे, तब तक कैंसर रूपी दानव हमारे सामने से नहीं हटेगा।



पद्मश्री डॉ. विजय प्रकाश सिंह

## बिहार की चिकित्सा जगत में बिंग हॉस्पिटल की दर्तक

पटना मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के गैस्ट्रोएंट्रोलॉजी विभाग में प्रोफेसर सह विभागाध्यक्ष पद्मश्री डॉ विजय प्रकाश सिंह बिहार की चिकित्सा जगत का जाना माना नाम है। 1954 को बिहार के बांका में जन्मे डॉ. विजय प्रकाश का बचपन संघर्ष और तकलीफों के दौर से गुज़रा। बिहार पुलिस में कॉस्टेबल और फिर सब-इंस्पेक्टर रहे विजय के पिता की मृत्यु 1972 में सरकारी नौकरी के दौरान ही हो गयी थी, ऐसे में पढ़ाई को जारी रखने में विजय को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। अत्यंत मेघावी छात्र के रूप में पहचान रखने वाले विजय प्रकाश ने 1971 में रांची विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित आई.एस.सी की परीक्षा में न केवल टॉपर रहे बल्कि विजय को पटना मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस की डिग्री के साथ 1978 में सर्वश्रेष्ठ स्नातक के रूप में सम्मानित भी किया गया। अपनी बेहतर चिकित्सा के दम पर डॉ. विजय प्रकाश सिंह ने प्रदेश की चिकित्सा जगत में जो अभिट छोड़ी है वो अद्भुत भी है और बेमिसाल भी। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन की बिहार इकाई से जुड़े कई सदस्य बताते हैं की डॉ. प्रकाश ने हमेशा से कुछ बड़ा और कुछ अलग करने का प्रयास किया और इस कड़ी में डॉ. विजय प्रकाश द्वारा पटना में संचालित बिंग हॉस्पिटल इसका एक बेहतरीन उदाहरण है जहाँ हर तबके से आने वाले मरीजों के इलाज की समुचित व्यवस्था है। डॉ. विजय प्रकाश की बेहतर चिकित्सा और कामों को ध्यान में रखकर साल 2003 में उन्हें भारत के तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे अब्दुल कलाम के हाथों पद्मश्री देकर सम्मानित किया गया इसके अलावा डॉ. प्रकाश की उपलब्धियों को देखते हुए दिसंबर 2018 में आउटलुक पत्रिका समूह द्वारा उन्हे "आइकॉन्स ऑफ बिहार" अवार्ड से भी सम्मानित किया जा चुका है।



बतौर प्रतिभाशाली छात्र डॉ. विजय प्रकाश ने राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड से एनबीआई में डिप्लोमा हासिल किया और उच्च शिक्षा हासिल करने के लिए लंदन के रॉयल कॉलेज ऑफ फिजियोथेरेपी का रुख किया। उन्होंने कॉलेज में महज साढ़े चार महीने की अवधि के दौरान 1988 में जब एमआरसीपी की उपाधि हासिल की, तो इससे न सिर्फ उनके परिवार बल्कि बिहार का भी सम्मान बढ़ा। सूत्रों के अनुसार, डॉ. विजय प्रकाश के 20 शोध पत्र राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। उन्होंने 20 वर्ष तक पीएमसीएच में स्नातकोत्तर शिक्षक के रूप में अपनी सेवा के दौरान 40 से अधिक शोध कार्यों का पर्यवेक्षण किया। उन्हें चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में उन्नत योगदान के लिए 2003 में तत्कालीन राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा पद्मश्री से सम्मानित किया गया था। डॉ. विजय प्रकाश कहते हैं कि उन्होंने अपने लंबे मेडिकल करियर के दौरान पाया

कि बेहतर, सुव्यवस्थित, आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं के अभाव में बिहार, झारखंड और अन्य ऐसे राज्यों के मरीज दिल्ली, मुंबई और दूसरे विकसित राज्यों की ओर रुख करते हैं। इसलिए, उन्होंने एक अच्छे निजी अस्पताल की जरूरत महसूस की, ताकि मरीजों को व्यवहारिक और किफायती इलाज उपलब्ध कराकर उन्हें बड़े शहरों की ओर पलायन से रोका जा सके। इसने उन्हें पटना के अगमकुआ में मल्टी सुपर-स्पेशलिटी बिग हॉस्पिटल स्थापित करने के लिए प्रेरित किया।

वर्ष 1954 में बांका सदर अस्पताल में जन्मे डॉ. विजय प्रकाश सिंह को बचपन में काफी मुश्किलों का सम्मान करना पड़ा। बिहार पुलिस में एक कांस्टेबल और सब-इंस्पेक्टर रहे डॉ. विजय के पिता की 1972 में नौकरी के दौरान ही मृत्यु हो गई। विजय के बड़े भाई को परिवार

की जिम्मेदारियां निभानी पड़ी और कठिनाइयों से जूझते हुए उन्होंने अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाया। अपने माता-पिता की तीसरी संतान विजय प्रकाश की पढ़ाई में गहरी स्थिति थी और वे अपने छात्र जीवन में स्कूलों द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में पहला स्थान हासिल करते थे।

परिवार के सदस्यों के अनुसार, विजय ने अपना बचपन भागलपुर के पास कहलगांव में बिताया। उन्होंने रांची के पास नेतरहाट विद्यालय की प्रवेश परीक्षा में भाग लिया और उसमें टॉप किया। चूंकि वह एक प्रतिभाशाली छात्र थे, तो उनका परिवार चाहता था कि वह एक डॉक्टर बनें। उन्होंने परिवारवालों की भावनाओं का सम्मान किया और आते ही दो दशकों में एमबीबीएस, एमडी और एमआरसीपी जैसी डिग्री हासिल की।

प्रसिद्ध गैस्ट्रोएंटोरोलॉजिस्ट पद्मश्री डॉ. विजय प्रकाश एसोसिएशन ऑफ फिजियोथेरेपी ऑफ इंडिया, इंडियन एसोसिएशन ऑफ बिल्निकल मेडिसिन, इंडियन सोसाइटी ऑफ गैस्ट्रोएंटोरोलॉजी, सोसाइटी ऑफ गैस्ट्रोइंटोस्टोडाइनल एंडोस्कोपी ऑफ इंडिया और इंडियन मेडिकल एसोसिएशन जैसी विभिन्न संस्थाओं के आजीवन सदस्य हैं। उन्होंने लंबे समय तक इंडियन सोसाइटी ऑफ गैस्ट्रोएंटोरोलॉजी के बिहार चैप्टर में सचिव और अध्यक्ष के रूप में कार्य किया है। उन्हें 1986 में पटना में इंडियन सोसाइटी ऑफ गैस्ट्रोएंटोरोलॉजी द्वारा पटना में आयोजित एक संयुक्त संगोष्ठी के सफल आयोजन के साथ एक संयुक्त आयोजन सचिव के रूप में कार्य करने की मान्यता प्राप्त है।

विशेषज्ञों का कहना है कि डॉ. विजय प्रकाश न सिर्फ एक सफल चिकित्सक हैं, बल्कि चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में उनका योगदान अविस्मरणीय है। एक प्रसिद्ध चिकित्सक और इंडियन मेडिकल एसोसिएशन की बिहार इकाई के अध्यक्ष का कहना है कि डॉ. विजय प्रकाश ने पीजीआई, चंडीगढ़ की स्थायी शैक्षणिक समिति, राष्ट्रीय परीक्षा की संचालन परिषद, भारत संकाय के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय में समिति, पटना विश्वविद्यालय में चिकित्सा संकाय और आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय के निर्वाचित सदस्य के रूप में सराहनीय काम किया। पिछले 20 वर्षों से राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर की कार्यशालाओं, सेमिनारों और सम्मेलनों में 16 पर्यावरण के साथ स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर के अध्ययन में एक प्रोफेसर के रूप में सक्रिय रहे हैं।

वैसे भी न केवल राज्यों के मरीजों बल्कि चिकित्सा जगत ने भी डॉ. विजय प्रकाश के आधुनिक बिग हॉस्पिटल के नए परिसर का इंतजार किया, जिसका हाल में उद्घाटन हुआ। यह दस मंजिला अस्पताल बिहार के चिकित्सा क्षेत्र में एक मील का पथर साबित होगा।





डॉ. वरुण कुमार

## गोली लगने से घायल मरीजों का मसीहा

बिहार की नेपाल सीमा पर स्थित सीतामढ़ी जिले में नंदीपत अस्पताल के संचालनकर्ता जनरल और लेप्रोस्कोपिक सर्जन डॉक्टर वरुण कुमार सीतामढ़ी और उसके आसपास के जिलों में ही नहीं, पड़ोसी देश नेपाल तक गोली लगने से घायल हुए लोगों के लिए उम्मीद की किरण बनकर उभरे हैं। 2009 में किराए के कमरे से छोटी-सी शुरुआत कर और कई साल तक संघर्ष का दौर देखने के बाद 2014 में नंदीपत अस्पताल के जरिये उन्होंने कामयाबी हासिल की। 2014 से पहले तक इस इलाके में गोली लगने से घायल हुए लोगों के इलाज की कोई सूविधा नहीं थी और उन्हें मुजफ्फरपुर या पटना का रुख करना पड़ता था मगर अब डॉक्टर कुमार ने इस कमी को पूरी कर दिया है। डॉक्टर कुमार अबतक गोली लगने से घायल हुए 100 से अधिक लोगों के शरीर से 105 गोलियां निकाल कर उन्हें जिंदगी का वरदान दे चुके हैं। 2019 में हुए लोकसभा चुनाव में सीतामढ़ी लोकसभा क्षेत्र से एन डी ए (जदयू) द्वारा डॉ वरुण को प्रत्याशी बनाया गया लेकिन चिकित्सा (सर्जरी) के प्रति समर्पित डॉ.वरुण ने चुनाव लड़ने से इंकार कर दिया



खास बात यह कि इस मामले में उनकी सफलता का प्रतिशत 100 है यानी उनके अस्पताल में आया ऐसा कोई भी मरीज अब तक मौत के मुँह में नहीं गया है। इस मामले में उनकी सफलता को देखते हुए ही उन्हें गोली डॉक्टर कहकर पुकारा जाने लगा है। सामाजिक कार्यों के मामले में भी डॉक्टर वरुण कुमार हमेशा आगे रहते हैं।

15 जनवरी, 1976 को जन्मे डॉक्टर कुमार ने एमबीबीएस की पढ़ाई किंग जॉर्ज मेडिकल कॉलेज, लखनऊ से की और एमएस की पढ़ाई कानपुर के जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज से। पढ़ाई के बाद उन्होंने हल्द्वानी में नौकरी शुरू की। वहां सीनियर रेजिडेंट और सहायक प्रोफेसर के रूप में काम करने के दौरान उनका जीवन बहुत आराम से चल रहा था मगर खुद डॉक्टर वरुण और उनके पिता महेश प्रसाद लोगों को गोली लगने से होने वाली मौत की खबरों को देखकर बहुत



च्यथित रहा करते थे। महेश प्रसाद कहते हैं कि 2014 से पहले सीतामढ़ी में ऐसा कोई अस्पताल नहीं था जहां गोली लगने से घायल हुए लोगों का इलाज हो पाता। ऐसे में मरीजों को मुजफ्फरपुर के श्रीकृष्ण मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल या फिर पटना के पटना मेडिकल कॉलेज अस्पताल भेजना ही उपाय था। अकसर ऐसे मरीजों की रास्ते में ही मौत हो जाती थी। तब उन्होंने अपने बेटे से कहा कि वे अपने सर्जन होने का लाभ जिले को पहुंचाएं और ऐसे मरीजों की मदद करें। यह मुझ डॉक्टर वरुण को भी पेशान कर रहा था और इसलिए उन्होंने अपनी आरामदायक नौकरी छोड़ने और सीतामढ़ी में नए सिरे से संघर्ष करने का फैसला कर लिया। आखिरकार 2009 में उन्होंने सीतामढ़ी के डुमरा रोड इलाके में एक मकान किराए पर लेकर सिफर छह लोगों के साथ अपने अस्पताल की शुरुआत की और अगले चार साल यानी 2013 तक यहां से काम करते रहे। इस दौरान उनकी पहचान एक काबिल

सर्जन के रूप में तो बनी मगर वे जो सपना लेकर आए थे, वह अपी तक पूरा नहीं हुआ था। आरंभ में उनके पास संसाधन भी नहीं थे कि वे आधुनिक उपकरणों से लैस बढ़ा अस्पताल आरंभ कर पाते।

आखिरकार 2014 में सीतामढ़ी में वर्तमान स्थल स्थित पर नंदीपत मेमोरियल हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेंटर अस्तित्व में आया। इसी दौरान नेपाल में मध्येरी आंदोलन भड़क उठा। आंदोलन के दौरान एक दिन पुलिस तथा मध्येरीयों के बीच हुई झड़प में 17 लोग घायल हो गए जिसमें 14 लोगों को पुलिस की गोलियां लगी थीं। इन सभी 14 लोगों को नंदीपत अस्पताल लाया गया और डॉक्टर वरुण कुमार ने एक ही दिन में इन सभी लोगों का ऑपरेशन कर गोलियां निकाल कर उनका अवतार रूप से घायल कई लोगों की जान बचाई। एक गांव के मुखिया संजय कुमार को 4 गोलियां लगी थीं और उसे भी इन्होंने बचा लिया। उन्होंने इसके अलावा भी गंभीर रूप से घायल कई लोगों की जान बचाई। एक जनरल और लेप्रोस्कोपिक सर्जन होने के कारण डॉक्टर कुमार के पास सर्जरी के दूसरे मामले भी आते रहते हैं और उन्होंने अब तक अलग-अलग वजहों से जख्मी 235 से अधिक मरीजों का इलाज सफलतापूर्वक किया है। डॉक्टर कुमार को इस मिशन में अपनी पत्नी डॉक्टर श्वेता का पूरा सहयोग मिलता है। खुद एक प्रसूति, स्त्री एवं निःसंतानता रोग विशेषज्ञ डॉक्टर श्वेता नंदीपत अस्पताल का सारा प्रबंधन देखने के साथ-साथ डॉक्टर कुमार का घर भी कुशलता पूर्वक संभालती है।

देखा। इस घटना के बाद से इलाके में गोलीबारी के शिकार हुए लोगों को इलाज के लिए नंदीपत अस्पताल लाया जाने लगा और डॉक्टर कुमार अब तक ऐसे 100 से अधिक लोगों का इलाज कर चुके हैं।

उन्होंने एक ऐसे मरीज की भी जान बचाई जिससे पूरे शरीर में 18 गोलियां लगी थीं। डॉक्टर कुमार के अनुसार उसकी एक किंडनी और लिवर भी क्षतिग्रस्त हो गया था। पूरे शरीर, हाथ-पैर सभी जगह उसे गोलियां लगी थीं। दरअसल, इस व्यक्ति को अपराधियों ने गोलियों से भून दिया था। डॉक्टर कुमार ने सारी गोलियां निकाल कर उसका ऑपरेशन किया और उसकी जान बचाई। एक गांव के मुखिया संजय कुमार को 4 गोलियां लगी थीं और उसे भी इन्होंने बचा लिया। उन्होंने इसके अलावा भी गंभीर रूप से घायल कई लोगों की जान बचाई। एक जनरल और लेप्रोस्कोपिक सर्जन होने के कारण डॉक्टर कुमार के पास सर्जरी के दूसरे मामले भी आते रहते हैं और उन्होंने अब तक अलग-अलग वजहों से जख्मी 235 से अधिक मरीजों का इलाज सफलतापूर्वक किया है। डॉक्टर कुमार को इस मिशन में अपनी पत्नी डॉक्टर श्वेता का पूरा सहयोग मिलता है। खुद एक प्रसृति, स्त्री एवं निःसंतानता रोग विशेषज्ञ डॉक्टर श्वेता नंदीपत अस्पताल का सारा प्रबंधन देखने के साथ-साथ डॉक्टर कुमार का घर भी कुशलता पूर्वक संभालती है।





विशाल आदित्य

## केमिस्ट्री ने दिलाई पहचान

बिहार के पश्चिम चम्पारण के बेतिया के पास रामपुरवा गाँव में जन्मे विशाल आदित्य का नाम आज बिहार में रसायन शास्त्र यानी केमिस्ट्री के प्रसिद्ध शिक्षकों में शुमार है! 1999 में महज़ पंद्रह सौ रुपए लेकर गाँव से पटना पहुंचे विशाल आदित्य ने सात सौ रुपए प्रतिमाह पर किराए का घर लिया और अपनी एम.एस.सी की पढ़ाई के साथ साथ कोटा से वापस लौट चुके छात्रों को घर घर जाकर पढ़ाना शुरू किया! खराब आर्थिक हालात के बीच विशाल ने शुप्र में बच्चों को पढ़ाने का फैसला लिया और बाज़ार से कुछ क्रज्ज़ लेकर 31 जुलाई 2009 को पटना के कंकड़बाग इलाके से सम्पूर्ण केमिस्ट्री नामक अपने निजी कोचिंग की शुरुआत की!



केवल 3 छात्रों के साथ शुरू हुई सम्पूर्ण कमेस्ट्री ने जल्द ही छात्रों का ध्यान अपनी ओर खींचा और कुछ ही बत्त बाद विशाल आदित्य का नाम छात्रों की जुबान पर था! शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान को ध्यान में रखकर गायत्री परिवार की तरफ से 2015 में विशाल आदित्य को सम्मानित किया गया। इसके अलावा साल 2016 में निर्धन छात्रों को शिक्षित करने एवं रसायन शास्त्र के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए भी इन्हे सम्मानित किया जा चुका है। परिवार के सदस्य बताते हैं कि साल 2016 को पटना में आयोजित एक कार्यक्रम में विहार विधान सभा के अध्यक्ष विजय चौधरी द्वारा कमेस्ट्री के क्षेत्र में विशेष योगदान लिए भी विशाल को सम्मानित किया जा चुका है।

शिक्षा जगत में आदित्य की लोकप्रियता को देखते हुए इंडिया टुडे के जनवरी 2018 के अंक में न केवल इनकी कहानी को प्रमुखता से प्रकाशित किया गया बल्कि इसी साल दैनिक भास्कर द्वारा पटना में आयोजित शिक्षा सम्मान समारोह में केंद्रीय मंत्री रामकृष्ण पाल यादव के हाथों भी विशाल आदित्य को गुरु शिक्षा सम्मान से नवाजा गया है।



बातचीत के क्रम में विशाल बताते हैं कि बचपन से ही मुझे फिल्में देखने के अलावा अभिनय का भी शौक रहा है और एक बार तो भोजपुरी सिनेमा के ऑफिशन में मेरा चयन भी हुआ था। गाँव और परिवार के लोग मेरे फिल्मों में काम करने के खिलाफ थे क्योंकि उस क्षेत्र में मेरा जाना किसी को पसंद न था। शिक्षक के रूप में छात्रों को पढ़ाते आज युरे एक दशक हो चुके हैं और इस लम्बी अवधि में मुझे सिनेमा देखने का भी वक्त ही नहीं मिला। छात्रों के सामने क्लास में बत्त पर उपस्थित रहना यह गुरु और शिष्य के बीच एक कमिटमेंट है, मुझे आज भी वो दिन याद है जब मेरी बेटी का अस्पताल में जन्म हुआ था, मैं पूरी रात सोया भी न था बाबूदू, इसके अगले दिन मैं बत्त पर अपने छात्रों के सामने था! मैं अपने छात्रों से हमेशा कहता हूँ सफलता का कोई शार्ट कट नहीं होता, इसके लिए ईमानदारों के साथ कठिन परिश्रम बेहद जरूरी है।

विशाल आदित्य के कई पूर्वी छात्र कहते हैं कि मेडिकल की परीक्षाओं की तैयारियों में विशाल सर की कोई जवाब नहीं! मेडिकल की परीक्षाओं में पूछे जाने वालों

45 सवालों में इनके पढ़ाए करीब 40 से 42 सवाल आ ही जाते हैं साथ ही मेन्स की परीक्षा में आए 30 सवालों में करीब 25 से 26 का अनुमान पूर्व में ही विशाल लगा लेते हैं लिहाजा इनके छात्रों के परिणाम भी काफी बेहतर होते हैं।

देश की शिक्षा जगत में ऐसी धारणा है एक ही शिक्षक कमेस्ट्री के सभी डिसिल्न यानी फिजिकल, ऑर्गेनिक और इनार्गेनिक को अच्छी तरह नहीं पढ़ा सकता जबकि फिजिक्स और गणित के सभी डिसिल्न सभी शिक्षक पढ़ा सकते हैं। वर्षों से चली आ रही इस धारणा को बदला है पटना के कंकड़बाग इलाके में सम्पूर्ण कमिस्ट्री के नाम से कमिस्ट्री की क्लास्सेस का संचालन करने वाले प्राख्यात शिक्षक विशाल आदित्य ने! वी आदित्य के नाम से प्रसिद्ध विहार के इस सपूत्र ने अपने गुरु बी.के.प्रियदर्शी के मार्गदर्शन में साल 2009 में महज सात सौ रुपए में किराए का एक घर लिया और केवल 3 बच्चों के साथ कमिस्ट्री क्लासेज की शुरुआत की और महज 9 सालों में ही विशाल आदित्य छात्र-छात्राओं के चहते बन गए।

साल 1981 में पश्चिम चम्पारण के बेतिया के निकट रामपुरा गाँव में जन्मे विशाल आदित्य का नाम आज विहार में रसायन शास्त्र यानी कमेस्ट्री के विद्यार्थियों में लिया जाता है! विशाल के पिता लाल बाबू प्रसाद सिंह का नाम पश्चिम चम्पारण के प्रसिद्ध शिक्षकों में सुमार था और लम्बी सरकारी सेवा देने के उपरान्त इनके पिता बतौर प्रधान्यापक रहते बेतिया के राजकीय मध्य विधालय, कोहड़ी से सेवानृत हो गए। शिक्षा इस परिवार की बुनियाद थी ऐसे में पिता लाल बाबू प्रसाद सिंह ने अपने दोनों पुत्रों विशाल और सत्यम आदित्य को उच्च शिक्षा देने की तारी और पुत्रों का नामांकन पश्चिम चम्पारण स्थित बुनियादी विधालय वृन्दावन में करवाया और इसी विधालय से विशाल ने छाती तक की शिक्षा हासिल की। आगे की पढ़ाई जारी रखते हुए विशाल ने राज इंटर कॉलेज से हाई स्कूल की पढ़ाई की और साल 1997 में प्रथम श्रेणी से मैट्रिक की परीक्षा पास की।

साल 1999 में विशाल आदित्य ने बेतिया के एम.जे. के कॉलेज यानी महारानी जानकी कुँवर महाविद्यालय से प्रथम श्रेणी में आई.एस.सी की परीक्षा पास की और फिर इसी कॉलेज से साल 2006 में विशाल ने कमेस्ट्री ऑफर्स के साथ बी.एस.सी की डिग्री भी हासिल की और फिर आगे की पढ़ाई के लिए पटना आ गए। इसी साल पटना में विशाल आदित्य एक सड़क हादसे में गंभीर रूप से जख्मी हुए और लम्बे बत्त तक पटना के एक निजी अस्पताल में इनका इलाज चलता रहा।

विशाल आदित्य की माँ हेमावती सिंह की इच्छा थी



की उनका पुत्र डॉक्टर बन मरीजों की सेवा करे ऐसे में आदित्य ने सौ.बी.एस.सी मेडिकल की तैयारी प्रारम्भ की और पी.टी. में पास भी हुए लेकिन मैन्स में संतोषजनक रैंक नहीं मिलने के कारण इन्होंने रास्ता बदला और रूचि के अनुरूप शिक्षक बनने का फैसला लिया।

अपने विषय कमेस्ट्री में अच्छी जानकारी और गहरी रूचि के बीच साल 2010 में विशाल आदित्य ने पटना के ए.एन.कॉलेज से प्रथम श्रेणी में एम.एस.सी की डिग्री हासिल की और इस पूरी अवधि में जीविकोपार्जन के लिए ये घर घर जाकर कोटा रिटर्न छात्रों को पढ़ाते रहे। आर्थिक तंगी से गुजर रहे विशाल को इस दौरान कुरुक्षेत्र स्थित विवेकानंद स्टडी सेंटर से छात्रों को मेडिकल एवं इंजिनीयरिंग पढ़ाने

का ऑफर आया जिसे विशाल ने स्वीकार कर लिया लेकिन कुछ ही महीने बाद परिवार के सदस्यों और मित्रों के अनुरोध पर विशाल आदित्य वापस पटना आ गए और साल 2009 में अपनी पढ़ाई को जारी रखते हुए सम्पूर्ण कमिस्ट्री के नाम से एक निजी कोचिंग की शुरुआत की और फिर आगे आने वाले चंद ही सालों में इनकी ख्याति तेज़ी से बढ़ने लगी। जानकार बताते हैं कि आज विशाल के पढ़ाये सैकड़ों छात्र-छात्राएं न केवल राज्य के प्रमुख मेडिकल कॉलेजों से एम.बी.बी.एस की पढ़ाई कर रहे हैं बल्कि इनके पढ़ाये कई इंजीनियर आज देश की कई प्रमुख कंपनियों में वरिष्ठ पदों पर कार्यरत भी हैं।

बीटेक करने के उपरान्त दिल्ली में रहकर सिविल

सर्विसेस की तैयारी कर रहे विशाल के छोटे भाई सत्यम आदित्य कहते हैं कि उनके भैया न केवल विलक्षण प्रतिभा के धनि हैं बल्कि आरम्भ से ही सामाजिक असमानता, बाल विवाह और दहेज प्रथा के कट्टर विरोधी भी रहे हैं। समाज में फैली इन बुराईयों के दुष्परिणामों से अपने छात्रों को न केवल ये रु-ब-रु करवाते हैं बल्कि खुद भी दहेज मुक्त विवाह कर समाज को एक अच्छा संदेश दिया है। कमिस्ट्री के जाने माने शिक्षक विशाल आदित्य की पल्ली मेधा सिंह कहती है कि राज्य और देश के विकास में शिक्षकों की अहम भूमिका है, मैं चाहती हूँ की हमारे इन सुझावों को हमारी सरकारें गंभीरता से ले ताकि योग्य और अनुभवी शिक्षकों को सम्मान मिले साथ ही गुरु शिष्य परम्परा की जड़े और गहरी हो।



श्रीमती श्यामली नारायण

## जिद और जुनून से मिली शोहरत

जिद, संघर्ष और जुनून का दुसरा नाम श्यामली नारायण है। रसोई की दुनिया में अपनी अलग पहचान रखने वाली इस महिला ने महज़ दो साल में ही अपने यू-ट्यूब चैनल के जरिए करोड़ों लोगों के दिलों पर राज़ किया और आज श्यामली किचन के नाम से संचालित उनके चैनल के न केवल 8 लाख से अधिक सब्सक्राइबर हैं बल्कि 11 करोड़ के आसपास व्यूज भी हैं।

उनके बेहतर काम और चैनल की तेज़ी से बढ़ती लोकप्रियता को देखकर यू-ट्यूब द्वारा अभी हाल ही में उन्हें सिल्वर प्ले बटन देकर सम्मानित भी किया गया। भारतीय जनता पार्टी से तीन बार लोकसभा के सांसद रहे श्यामली के पिता स्व. इश्वर चौधरी की 15 मई, 1991 को बिहार के गया में हत्या कर दी गई, उस वक्त श्यामली महज 9 साल की थीं। कमज़ोर आर्थिक हालत के बीच श्यामली की माँ नागेश्वरी देवी ने अपने सभी बच्चों को अच्छी तात्त्विक दिलाइ और बाद के सालों में श्यामली ने घर-घर जाकर ट्यूशन पढ़ना आरम्भ किया।

गया जिले के गवर्नर्मेंट प्राइमरी स्कूल में शिक्षिका रह चुकी श्यामली का विवाह 2009 में भारतीय स्टेट बैंक के अधिकारी श्रीनिवास नारायण के साथ संपन्न हुआ और सरकारी नौकरी का त्याग कर श्यामली पटना आ गयी। होम मेकर रहते हुए श्यामली में कुछ बड़ा करने की चाहत थी, ऐसे में बड़ी बहन सुशीला ने श्यामली को रास्ता दिखाया और उन्होंने मास्टरशेफ बनने का फैसला लिया। ए बी सी कुकिंग क्लास का सफलता पूर्वक संचालन कर चुकी श्यामली ने बिंग मैजिक चैनल द्वारा आयोजित कुकिंग शो रसोई की रानी में प्रतिभागी के तौर पर शिरकत की और विनर भी रही। उपरोक्त चैनल ने सभी विजेताओं को फाइनल रार्ड डे के लिए पुनः मूँबई आमंत्रित किया जहाँ प्रसिद्ध मास्टर शेफ ऐपु दमन हांडा, श्यामली द्वारा तैयार लज़ीज़ व्यंजनों के कायल हुए और श्यामली एक बार फिर इस शो की विनर बनी।

दिल्ली में जन्मी श्यामली की प्रारंभिक शिक्षा दिल्ली के गोल मार्केट स्थित केंद्रीय विद्यालय में हुई लेकिन मई 1991 में क्षेत्र भ्रमण के दौरान उनके पिता की हत्या के बाद पूरा परिवार वापस मानपुर लौट आया और इसके साथ ही शुरू हुआ संघर्ष और तकलीफों का रिलसिला। 1995 में गया के एक निजी विद्यालय से मैट्रिक की परीक्षा पास करने के उपरान्त श्यामली का दाखिला इसी शहर के प्रसिद्ध महिला कॉलेज में हुआ और इसी महाविद्यालय से आई एस सी करने के उपरान्त 2005 में श्यामली ने इतिहास में ऑनर्स किया।

परिवार की खराब माली हालत को देखते हुए श्यामली ने लम्बे वक्त तक निजी द्युशन का सहारा लिया और आखिरकार उन्हें गया के गवर्नर्मेंट प्राइमरी स्कूल में बतौर शिक्षिका पढ़ाने का अवसर मिला। साल 2009 में श्यामली का विवाह भारतीय स्टेट बैंक के वरिष्ठ अधिकारी श्रीनिवास नारायण के साथ संपन्न हुआ और श्यामली सरकारी नौकरी का त्याग कर पटना आ गयी। श्यामली के पति श्रीनिवास कहते हैं कि होममेकर के तौर पर श्यामली ने इस परिवार के लिए जो कुछ भी किया, उसे शब्दों में बयां नहीं किया



जा सकता। हमारे दो पुरों प्रभात रंजन और राहुल रंजन के अलावा हमारी लाड़ली मानशी प्रिया की हर छोटी से छोटी खुशियों का ख्याल किया है श्यामली ने।

सालों से हम सभी ये महसूस कर रहे थे कि श्यामली अपने अंदर की प्रतिभा को दुनिया के सामने लाने को बैचैन हैं ऐसे में हम सभी ने उसे सहयोग करने का फैसला लिया। श्रीनिवास आगे कहते हैं कि श्यामली ने कैमरे के सामने घंटों खड़े होकर कुकिंग से संबंधित कई एपिसोड तैयार किये। लखे समय तक उन्हें सफलता हाथ नहीं लगी लेकिन हमने कभी उन्हें निराश होते नहीं देखा। शायद उन्हें खुद पर पूरा एतबार था और यही वजह है कि उनकी जिद के आगे बढ़ते ने भी घुटने टेक दिए। मुझे अपनी पत्नी पर

नाज़ है और मैं गर्व से कहता हूँ कि मैं श्यामली का पति हूँ।

श्यामली किचन को लेकर दिए गए एक सवाल का जवाब देते हुए श्यामली कहती है कि मैं इसका सारा श्रेय अपनी बड़ी बहन सुशीला नारायण, अपने पति श्री निवास नारायण और अपने परिवार के सदस्यों को देना चाहूंगी जिनके मार्गदर्शन ने मुझे इस मुकाम तक पहुँचाया। श्यामली की बहन सुशीला नारायण जानती थी कि श्यामली की स्वादिष्ट व्यंजन तैयार करने में गहरी रुचि है ऐसे में सुशीला ने उनदिनों स्टार प्लस पर प्रसारित हो रहे धारावाहिक मास्टर शेफ की ओर श्यामली का ध्यान खींचा। वे चाहती थीं कि श्यामली टेलीविजन पर दिखे। ऐसे में श्यामली ने भी जागती थीं कि श्यामली टेलीविजन पर दिखे।

दोनों बहनों का यह सपना हकीकत में तबदील होने लगा।

सुशीला कहती हैं कि श्यामली के भीतर ज़िद और जु़ून तो हमने बचपन से ही देखा था लेकिन बदलते बदलते के साथ वो कही दब सा गया था जिससे बाहर निकलना शायद श्यामली के लिए भी आसान न था। शुरुआती दिनों में श्यामली तीन रेसिपी प्रतिदिन याद किया करती और उसे अलग तरीके से बनाने का प्रयास भी करती। कुछ ही समय बाद श्यामली ने ए बी सी कुकिंग क्लास के नाम से स्वयं का एक प्रशिक्षण संस्थान शुरू किया और इन सभी के पाठें श्यामली की एक ही तम्मना थी। स्टार प्लस पर प्रसारित हो रहे धारावाहिक मास्टर शेफ में शामिल होकर संजीव कपूर तक पहुँच बनाना और कुछ बेहतर और अलग करना।

2016 में बिंग मैजिक चैनल पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम रसोइ की रानी में जब श्यामली विनर बनी तब चैनल द्वारा उन्हें मुंबई आने का निमंत्रण मिला। मुंबई में चैनल द्वारा आयोजित भव्य शो में भारत के जाने-माने शेफ रियु दमन हांडा ने श्यामली के काम को सराहा और श्यामली इस शो में एक बार फिर फिर विनर रहीं। श्यामली कहती हैं कि इस शो में मिली सफलता के बाद मुझे कुकिंग शो से संबंधित काम के कई बड़े ऑफर मिले लेकिन परिवार को छोड़ मुंबई में काम करना मेरे लिए आसान न था, ऐसे में मुझे वापस पटना लौटना पड़ा।

जानकार बताते हैं कि बिहार जैसे राज्य में कुकिंग व्यवसाय को प्रोमोट करने के लिए न तो किसी प्रकार की सरकारी योजना है और न ही इसके प्रोमोशन से संबंधित इवेंट की व्यवस्था। ऐसे में यह व्यवसाय आज प्रदेश में हाशिए पर पड़ा है। बाहर के प्रदेशों में इस विषय की पढ़ाई और प्रशिक्षण की अच्छी व्यवस्था है और इसके दम पर लोग अच्छी नौकरी भी हासिल कर लेते हैं, लेकिन बिहार की इस बेटी ने आज जिस प्रकार कुकिंग क्लास और इससे संबंधित प्रशिक्षण लिए बगैर शेफ कोट और सेलिब्रिटी शेफ तक का जो सफर तय किया है वो कविले-तारीफ है।

श्यामली बताती हैं कि पति और बच्चों के अलावा मैं खुद की जिन्दगी भी जीना चाहती थी, ऐसे में बगैर डिग्री के शेफ बनना काफी मुश्किल था। अपनी छिपी पहचान को दुनिया के सामने लाने की मेरी ज़िद मुझपर इस कदर हावी रही कि सबकुछ कैसे बदलता चल गया यह पता ही नहीं चला! श्यामली कहती हैं कि अगस्त 2017 में जब मैंने श्यामली किचन के नाम से अपने यू-ट्यूब चैनल की शुरुआत की थी उस बवत 100 विडियो अपलोड किये जाने तक हमारा न तो कोई व्यू था और न ही सबस्क्राइबर। पड़ोसियों से मिलने वाले तानों के



तेजी से इजाफा हो रहा है।

बहरहाल, छोलनी और कड़ाई को अपना हथियार बना चुकी श्यामली नारायण कहती हैं कि महिलाओं के अंदर एक छिपी हुई शक्ति होती है और यदि कोई गुहणी कुछ करने की ठान ले तो कुछ भी नामुमकिन नहीं। मैं अपने

करोड़ों दर्शकों से यही कहना चाहूंगी कि जीत का असली मजा तब है जब लोग आपके हारने का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। जो इंसान लाचार होते हुवे भी मन से नहीं हारता, उसे दुनिया की कोई ताकत हरा नहीं सकती। मैं रहूँ या न रहूँ लेकिन अपने काम, अपनी शक्ति और आवाज के रूप में मैं सदैव अपने दर्शकों के सामने रहूँगी।





डॉ. श्रवण कुमार

## बिहार में 'नियोनेटाल केयर' के जनक'

डॉक्टर श्रवण को नवजात बच्चों से संबंधित समस्याओं में आधुनिक देखभाल प्रणाली (नियोनेटाल केयर) को बिहार में सबसे पहले लाने का श्रेय जाता है और इसलिए उन्हें राज्य में नियोनेटाल केयर का जनक माना जाता है। अपने संघर्ष भरे बचपन, पिता की बीमारी, खेती का भार आदि संभालते हुए उन्होंने डॉक्टरी की पढ़ाई पूरी की और आज उनका नाम बिहार के चिकित्सा जगत में आदर से लिया जाता है। उन्होंने पटना में एक इन्कव्यूबेटर की सहायता से राज्य के पहले नियोनेटाल आईसीयू 'न्यू बॉर्न केयर सेंटर' की स्थापना की थी और आज यह सेंटर अत्याधुनिक उपकरणों से लैस है जहां डॉक्टर श्रवण कुमार ने 800 ग्राम तक के बच्चे की जान बचाई है। नृत्य एवं नाटक के शौकीन डॉक्टर श्रवण अपनी पत्नी नीना मोटानी के साथ मिलकर रंगमंच पर अभिनय भी करते हैं और इसके जरिये लोगों में स्वास्थ्य जागरूकता फैलाने का काम करते हैं।

बिहार के पश्चिम चंपारण के बेतिया में एक किसान परिवार में 1954 की 7 जनवरी को जन्मे श्रवण कुमार आरंभ से ही मेधावी छात्र थे और उनका लक्ष्य भी स्पष्ट था। उन्हें डॉक्टर ही बनना था, हालांकि पढ़ाई के दौरान ही उनके किसान पिता को गंभीर हाट अटेक से जूझना पड़ा और इससे श्रवण कुमार की योजनाओं को तगड़ा झटका लगा। उन्हें पढ़ाई के साथ-साथ घर की जिम्मेदारियां भी उठानी पड़ीं। पिता की बीमारी के कारण उन्हें खेती संभालनी पड़ी। उनके खेत उनके घर से 10 किलोमीटर दूर थे। डॉक्टर बनना उनका सपना था मगर परिस्थितियों ने उन्हें ऐसा घेर रखा था कि वे अपनी पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे पा रहे थे। इसके बावजूद उन्होंने दिन-रात मेहनत की और अंततः उनका चयन एम्बीबीएस की पढ़ाई के लिए दरभंगा मेडिकल कॉलेज में हो गया। घर की स्थिति को देखते हुए उनके पिता शुरुआत में उन्हें डॉक्टरी की पढ़ाई करने देने के पक्ष में नहीं थे मगर

परिवार के दूसरे सदस्यों के समझाने पर वे मान गए और इस तरह श्रवण कुमार ने एम्बीबीएस की पढ़ाई पूरी की। इसके बाद उनका चयन कोलकाता के प्रसिद्ध रामकृष्ण सेवा प्रतिष्ठान में हो गया, उन्होंने वहां से सफलता पूर्वक डी.सी.एस. पूरा किया। वहां अपने प्रशिक्षण के दौरान वे ये देखकर आश्चर्यचकित रह गए कि नवजात बच्चों की देखभाल के लिए वहां कितना बेहतर प्रबंधन किया जाता है और समयावृद्धि ऐसा होने वाले कई बच्चों की जान वहां बहुत ही आसानी से बचा ली जाती है पर बिहार में ऐसी कोई सुविधा नहीं थी।

यह देखने के बाद उन्होंने नवजात बच्चों की देखभाल से संबंधित अपने शिक्षण-प्रशिक्षण को और भी गंभीरता से पूरा करना शुरू कर दिया, हालांकि कोलकाता से लौटने के बाद भी उन्हें पूरी संतुष्टि नहीं मिल पा रही थी। इसलिए उन्होंने पटना मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल से शिशु रोग में एम्डी की

पढ़ाई की मगर उन्हें यह देखकर निराश हुई कि पीएमसीएच में भी नवजात बच्चों की देखभाल की उचित स्वस्थ नहीं थी। ऐसे में डॉक्टर श्रवण दिल्ली के लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज पहुंचे और वहां उन्होंने नवजात बच्चों की देखभाल के अपने अनुभव को और भी समृद्ध किया। वहां उन्होंने नवजात बच्चों में पीलिया से संबंधित गंभीर स्थिति में ब्लड फ्रांसफ्यूजन के जरिये बच्चे की जान बचाने की तकनीक सीखी। बिहार में इस तकनीक का इस्तेमाल कर्डै नहीं करता था। उन्होंने सोच लिया कि वे पटना में बिहार का पहला नियोनेटाल आईसीयू स्थापित करेंगे।

घर लौटने के बाद डॉक्टर श्रवण ने अपने पिता को बताया कि वे पटना में नियोनेटालोंजी की शुरुआत करने जा रहे हैं तो उनके पिता ने पूछा कि आखिर ये होता क्या है। डॉक्टर श्रवण कुमार ने उन्हें बताया कि यह चिकित्सा शास्त्र की वह शाखा होती है जिसमें सिर्फ एक महीने से कम उम्र के बच्चों का इलाज किया जाता है। उनके पिता ने पूछा कि तुम शिशुरोग विशेषज्ञ हो जिसमें 12 वर्ष तक के बच्चों का इलाज किया जाता है। अब तुम कह रहे हो कि तुम सिर्फ एक महीने तक के बच्चों का इलाज करोगे, अगर तुम बाकी 11 साल 11 महीने के बच्चों को छोड़ दोगे तो ऐसे में तुम्हारा घर कैसे चलेगा? तब डॉक्टर श्रवण कुमार ने बताया कि बिहार में अभी तक गंभीर स्थिति वाले नवजात बच्चों की



122 | डॉ. श्रवण कुमार

जान बचाने के लिए नियोनेटाल आईसीयू नहीं है। ऐसे में यहां इस क्षेत्र में विकास करने के लिए बहुत अच्छा अवसर है। इसके बाद डॉक्टर श्रवण ने पटना में एक कमरा किराए पर लेकर और सिर्फ एक इन्वेंटर की सहायता से बिहार के पहले नियोनेटाल आईसीयू की स्थापना की जिसका नाम उन्होंने 'न्यू बॉर्न केयर सेंटर' रखा तब पटना के डॉक्टरों को उम्मीद नहीं थी कि इस सेंटर में नवजात बच्चों की जिंदगी बचाइ जा सकेगी मगर लगातार सफलताएं हासिल कर नियोनेटालोंजी के क्षेत्र में शिखर पर पहुंच गए। उनकी पत्नी नीना मोटानी ने हर कदम पर उनका साथ दिया।

वैसे आंध्र में डॉक्टर श्रवण को कई परेशानियों का सामना करना पड़ा, चूंकि यह पटना में अपनी तरह का पहला केंद्र था इसलिए इसके लिए जरूरी प्रशिक्षित स्टाफ वहां उपलब्ध नहीं था। डॉक्टर श्रवण को तब खुद बच्चों की साफ-सफाई, उनके मल-पूत्र आदि को साफ करना पड़ता था पर इसके साथ ही उन्होंने उपलब्ध मेडिकल स्टाफ को अपनी जरूरत के हिसाब से प्रशिक्षण देना जारी रखा। उनकी मेहनत रंग लाई और वे खुद भी तब आश्चर्यचकित रह गए जब उनके केंद्र पर समय पूर्व पैदा हुए 800 ग्राम वजन तक के बच्चों को बचाया गया। ऐसा ही एक बच्चा उनके सहयोगी डॉक्टर पीपी गुटा का बेटा भी था जिसकी जान तब इस केंद्र में बची थी। यह बच्चा आज पूरी तरह स्वस्थ जीवन

डॉक्टर श्रवण समाज सेवा में भी बहुत सक्रिय रहते हैं। नई पहल की खंडी के तहत वे अपने परिवार और मित्रों के साथ मिलकर गरीबों में कपड़े बांटते हैं, और रोटी तथा अन्य सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय योगदान देते हैं। रोटी में ऐसी ही एक परियोजना है गिफ्ट ऑफ लाइफ जिसके तहत हर साल ऐसे 100 बच्चों का निःशुल्क ऑपरेशन किया जाता है जिनके दिल में छेद होता है। इसके अलावा डॉक्टर श्रवण कुमार मां बैण्णों देवी सेवा समिति (एनजीओ) के साथ मिलकर 51 जरूरतमंद युगलों का विवाह भी करवाते हैं। डॉक्टर श्रवण नृत्य एवं नाटक में भी दक्ष हैं, अपनी पत्नी श्रीमती नीना मोटानी के साथ मिलकर वे पिछले कुछ वर्षों से बड़े रंगमंचों पर प्रस्तुतियां दे रहे हैं। यू-ट्यूब चैनल पर उनके हजारों प्रशंसक हैं, मंच पर उनकी प्रस्तुतियों में सिर्फ मनोरंजन के लिए नहीं बल्कि कैंसर और ऑटिज्म जैसे गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं पर जागरूकता फैलाने वाले कार्यक्रम भी होते हैं। डॉक्टर श्रवण हमेशा कहते हैं: तुम अपना काम बेहतरीन तरीके से करो और बाकी सबकुछ ईश्वर पर छोड़ दो।



डॉ. श्रवण कुमार | 123

संजय चौधरी

## पानी को बनाया मनोरंजन का हथियार

तक्षशिला सीज एंड रिसोर्ट प्राइवेट लिमिटेड के चेयरमैन और पटना के संपत्तचक स्थित फैटेसिया वाटर पार्क की शुरुआत करने वाले संजय चौधरी का पूरा जीवन संघर्षमय रहा है। बिहार में झुमरांव के निकट एकरासी गाँव के मूल निवासी संजय का जन्म उनकी ननिहाल समस्तीपुर में हुआ। संजय के पिता महेंद्र चौधरी पतरात् थर्मल प्लांट में फोरमैन के तौर पर कार्यरत रहे, ऐसे में उनकी प्रारंभिक शिक्षा समस्तीपुर स्थित केंद्रीय विद्यालय में हुई और उन्होंने यहाँ से मैट्रिक और फिर बारहवीं तक की पढ़ाई की। 90 के दशक में संजय चौधरी ने कलकत्ता स्थित डी एमईटी यानी डायरेक्टर ऑफ़ मेरीन इंजीनियरिंग में अपना नामांकन करवाया और 1995 में बी टेक की डिग्री हासिल कर मेरिन इंजीनियर बने। इसी साल इंलैंड के ग्लास्गो स्थित प्रसिद्ध शिपिंग कंपनी एककोमरिट से संजय को नौकरी का ऑफर मिला और वे 6 माह के कॉन्ट्रैक्ट के साथ इस कंपनी के मालवाहक जहाज एम वी पोनी पर सवार हो गए।

संजय कुमार चौधरी, बिहार के उभरते युवा व्यवसायी हैं। उन्होंने अपनी बी-टेक (मेरिन इंजीनियर) की डिग्री डी. मेट कोलकता से प्राप्त की। बिल्कुल साधारण परिवार से संबंध रखने वाले चौधरी, प्रारंभ से ही बहुमुखी प्रतिभा के धनी रहे हैं। इनकी माता रेखा देवी एक सामान्य गृहिणी हैं, जबकि पिता पतरात् थर्मल पावर स्टेन्स से रिटायर फोरमैन हैं। उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा अपने मामा श्री महेन्द्र चौधरी, जो समस्तीपुर रेलवे स्टेशन के एसएम थे वहाँ रह कर पुरी की।

स्वावलंबन इनके जीवन का मूल मंत्र रहा है। डीमेट में पढ़ाई करते हुए उन्होंने पढ़ाई का खर्च अपने उपार्जन से पूरा किया। बी टेक डिग्री प्राप्त करने के पश्चात वे अलग शिपिंग कंपनियों में उन्होंने अपनी सेवा दी और चीफ

इंजीनियर की उँचाई तक पहुँचे, पर नौकरी करना उन्हें पसंद नहीं था, वे दूसरों को नौकरी देना पसंद करते थे। मानसिक स्तर पर व्यवसाय को अपना लक्ष्य निर्धारित कर लिया। यहाँ से उनके संघर्ष की कहानी शुरू होती है। 2008 में प्रोफेशनल शिपिंग मैनेजमेंट के रूप में उन्होंने एक कंपनी की शुरूवात की। यह कंपनी सेवा-प्रदायी कंपनी थी। इस क्रम में इस कंपनी ने पॉवलट बोट की सेवा प्रदान करने हेतु स्वयं बोट निर्मित की। श्री चौधरी ने अपने इनोवेशन के द्वारा बोट निर्मान की लागत बहुत कम कर अपकी प्रतिभा का परिचय दिया। इस कंपनी के प्रारंभ करने से संचालित करने तक उन्हें आर्थिक संसाधनों की कमी से झुझना पड़ा, पर उन्होंने अपना संघर्ष जारी रखा। संघर्ष एक जीवन दृष्टि देती है, साथ ही मानवीय तथा सामाजिक मूल्यों को परखने





का एक अन्तर्राष्ट्रीय भी देती है। श्री चौधरी ने इस संघर्ष से जो जीवन दृक्षत होता है। व्यवसाय इनके लिए लाभ का फलस्फ़ा नहीं है बल्कि इनके लिए आर्थिक निर्धारण का साधन है। इसी का परिणाम है 'फंटेशिया वाटर पार्क' जो बिहार एवं झारखण्ड जैसे पिछडे है। फंटेशिया वाटर पार्क 'बिहार तथा समीपवर्ती राज्य के लोगों के लिये मनोरंजन का एक महत्वपूर्ण साधन तो है वी, साथ ही साथ यह कई महिलाओं तथा बालिकाओं को विशेष छूट इसके अन्य आयाम हैं। गोजार सृजन में इस पार्क के योगदान को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। चौधरी अपनी व्यावसायिक गतिविधि को झारखण्ड में भी जीवंत करने के लिए प्रयासरत है।

पटना के ललित नारायण मिथिला इंस्टीट्यूट से एमबीए और मानव संसाधन में पीएचडी कर चुकी संजय चौधरी की पत्नी नूतन कुमारी और उनकी दो बेटियाँ विंयंका एवं वाणी उनके इस संघर्ष में हमेशा साथ रही विशाल वाटर पार्क का प्रबंधन एवं सूरक्षा को देखकर इतना तो कहा ही जा सकता है कि वह सफल प्रबंधक तथा इस इलाके के लिए जिम्मेवार अभिभावक की भूमिका सशक्त रूप से निभा रहे हैं। निश्चय ही श्री चौधरी बिहार के मिट्टी के लाल हैं और बिहारी होने पर उन्हें गर्व है।





डॉ. सहजानंद प्रसाद सिंह

## गरीब मरीजों का मरीहा

बिहार के नालंदा में जन्मे और पले-बढ़े डॉक्टर सहजानंद प्रसाद सिंह ने नालंदा मेडिकल कॉलेज अस्पताल से एमबीबीएस और उत्तर प्रदेश के मेरठ स्थित लाला लाजपत राय मेडिकल कॉलेज से एमएस (जनरल सर्जरी) किया। साधारण किसान परिवार से आने वाले डॉ. सिंह अपने छात्र जीवन में साइकिल से स्कूल और कॉलेज आया जाया करते थे। कई साल तक पटना के फुलवारी शरीफ के ईएसआई अस्पताल में मेडिकल ऑफिसर और सुपरिटेंडेंट के रूप में उन्होंने गरीब और दिहाड़ी मजदूरों के लिए बहुत काम किया। बाद में बिहार लोक सेवा आयोग की अनुशंसा पर उन्हें पटना मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में लेक्चरर के रूप में नियुक्त किया गया जहां उन्होंने कई वर्ष तक अपनी सेवाएं दीं। हाल ही में डॉ. सिंह को चिकित्सा जगत के सर्वाधिक प्रतिष्ठित डॉ. बी.सी राय राष्ट्रीय अवार्ड से सम्मानित किया गया है।

वर्तमान में डॉक्टर सिंह नालंदा के पावापुरी स्थित वर्धमान इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस में जनरल सर्जरी विभाग के प्रमुख और एसोसिएट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं। यह अस्पताल मेडिकल शिक्षा का उत्कृष्ट केंद्र है और बिहार सरकार की ओर से भगवान महावीर, पावापुरी और नालंदा को समर्पित है। डॉक्टर सिंह बिहार के सबसे लोकप्रिय शिक्षक और काबिल सर्जन के रूप में जाने जाते हैं।

डॉक्टर सिंह को इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आईएमए), बिहार और नेशनल आईएमए में उनके कामों की वजह से एक अलग पहचान मिली जहां उन्हें डॉक्टर के

रूप में किसी और नहीं बल्कि दिवंगत डॉक्टर ए.के.एन. सिन्हा ने सभी चिकित्सकों से डॉ. सिंह का परिचय कराया था। डॉक्टर सिन्हा खुद मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया के अध्यक्ष और वर्ल्ड मेडिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष रहे थे। डॉक्टर सिंह को ऐसा ही स्नेह डॉक्टर एन. अपा राव और डॉक्टर केतन देसाई जैसे लीडर्स से भी हासिल हुआ।

आईएमए में डॉ. सिंह कई पदों पर रहे। अब वे आईएमए बिहार के पूर्व अध्यक्ष हैं, नेशनल आईएमए के मुख्य चुनाव आयुक्त, नेशनल आईएमए की सेंट्रल वर्किंग कमेटी और सेंट्रल काउंसिल के सदस्य हैं। डॉ. सिंह पटना में आयोजित



आईएमएकॉन-2006 के बेहद सफल आयोजन के ऑर्गनाइजिंग सेक्रेटरी थे। इसी प्रकार 1988 में आईएमए की गोल्डन जुबली कॉन्फ्रेंस में डॉ. सिंह ज्वाइंट ऑर्गनाइजिंग सेक्रेटरी थे। डॉक्टरों और मरीजों की आवाज डॉक्टर सहजानंद प्रसाद सिंह ने बिहार में आईएमए के सहयोग से भारत सरकार के 15 से अधिक राष्ट्रीय मेंगा स्वास्थ्य शिविर आयोजित किए हैं। डॉ. सिंह 'आओ गांव चलें', 'बेटी बचाओ', 'स्तनपान', 'एड्स / एचआईवी', 'तपेदिक' और 'कृष्ण रोग' नियंत्रण जैसे आइओए के सभी सामाजिक-

चिकित्सा कार्यक्रमों में आगे बढ़कर भागीदारी करते रहे हैं। उनके नेतृत्व में बिहार में कई बाढ़ राहत शिविर और नेत्र शिविर आयोजित किए गए। डॉ. सिंह स्वास्थ्य नीतियां बनाने और उन्हें क्रियान्वित करने में सरकार के साथ सहयोग करते हैं, लेकिन जब भी उन्हें लगता है कि ये नीतियां चिकित्सा पेशे और आम लोगों के पक्ष में नहीं हैं तो वह विरोध की आवाज उठाते हैं। डॉ. सहजानंद प्रसाद सिंह कई वर्षों से मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया के सदस्य हैं। वे बिहार काउंसिल ऑफ मेडिकल रजिस्ट्रेशन-

के सदस्य और रजिस्ट्रार हैं और उन्होंने चिकित्सा शिक्षा की गुणवत्ता, नीतिकान्त्र और व्यवहार को बनाए रखने के लिए कड़ी मेहनत की है। डॉ. सिंह तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर की सोनेट और बिहार रेड क्रॉस सोसाइटी के भी सदस्य हैं।

डॉ. सिंह लायंस क्लब के अध्यक्ष रह चुके हैं। इसके अलावा उन्हें सर्वश्रेष्ठ आईएमए सचिव पुरस्कार, राष्ट्रपति प्रशंसा पुरस्कार, चिकित्सा रत्न पुरस्कार (2006),



Dr. Jayashree Mehta  
M.S., F.I.C.S.  
President, Medical Council of India  
Sector-6, Pashan, Dehu Road,  
Dhaka, 110021, New Delhi  
Ph: +91-11-23671077  
Fax: +91-11-23671031  
E-mail: president@mcindia.org  
www.mcindia.org

D.O.No.MC-7(6)/2018-Med/117

Dear Dr. Salajitnand Prasad Singh  
I on behalf of the Management Committee of Dr. B. C. Roy National Award Fund Society and on my own behalf, am pleased to inform you that you have been selected for the prestigious Dr. B. C. Roy National Award for the year 2017 in the category of "To Recognize The Outstanding Services in Field of Sodo Medical Relief", which you rightly and richly deserve.

I extend my heartfelt congratulations and compliments to you for the same.

In this context, you are requested to submit your brief profile in letter form in hard as well as soft copy and also a passport size photograph to Dr. Reena Mehta, Member Secretary or Mr. Rajiv Kumar, Assistant Secretary, Medical Council of India, Dehu Road, New Delhi, as early as possible, for the purposes of Souvenir.

Yours sincerely

Dr. Salajitnand Prasad Singh  
Consultant General Surgeon,  
H.O.D & Associate Prof. of Surgery,  
Vardhman Institute of Medical Sciences,  
Pawapuri, Nalanda ( Bihar )  
Email: salajitnandprasad@gmail.com  
M: 093341136998

Residence : - AVASAR #404,2, Pratapgarh, Vadodara - 390002, Gujarat, INDIA  
Phone : +91-265-2793621

भारत ज्योति अवार्ड (2009) और आईएमए कॉलेज ऑफ जनरल प्रैक्टिशनर्स के सर्वश्रेष्ठ राज्य फैकल्टी से सम्मानित किया जा चुका है। उन्हें बिहार और देश की कई आईएमए शाखाओं द्वारा सम्मानित किया गया है। मंगलोर के मणिपाल विश्वविद्यालय ने भी उनका सम्मान किया है। डॉ. सिंह नालंदा मेडिकल कॉलेज छात्र संघ के सचिव और नालंदा मेडिकल कॉलेज एलुमनी एसोसिएशन के सचिव/संरक्षक रहे हैं। गरीबों के विकिसक डॉ. सहजानंद प्रसाद सिंह डॉक्टरी परामर्श और शल्य चिकित्सा प्रक्रियाओं के लिए बहुत ही कम फीस लेते हैं। उनके क्लिनिक पर हर दिन गरीब और ग्रामीण लोगों की भारी भीड़ देखी जा सकती है जो उनसे इलाज करवाकर उन्हें आशीर्वाद देती है। उनके बच्चे भी डॉक्टर हैं और उन्होंने उनमें उसी संस्कृति और दर्शन को विकसित किया है। उनका एक बेटा यूरोलाजिस्ट और जनरल लोगोंस्कोपिक सर्जन और दूसरा ऑर्थोपेडिक सर्जन है। उनकी बहुएं इन्होंनी और रेडियोलॉजी की विशेषज्ञ हैं। उनके बच्चे भी उसी तरह से गरीबों और जरूरतमंदों की सेवा करते हैं जैसे डॉ. सहजानंद प्रसाद सिंह करते हैं।

डॉ. बी.सी. रॉय अवार्ड फंड की प्रबंध समिति ने डॉ. सहजानंद प्रसाद सिंह की सेवाओं और उनके किए कार्य की समाजीका उपलब्धि की ओर उनकी सेवाओं को देखते हुए वर्ष 2017 के लिए 'समाजिक चिकित्सा राहत में उत्कृष्ट सेवा' श्रेणी के तहत उन्हें पुरस्कृत किया है। देश की प्रतिष्ठित पत्रिका आउटलुक ने उनकी उपलब्धियों को मान्यता देते हुए उन्हें वर्ष 2018 में 'आइकन्स ऑफ बिहार' अवार्ड प्रदान किया।

**Outlook**  
group